जनवरी ९५

तंत्र विशेषांक

मूल्य-१५/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

कात्यायनी कल्प

उर्वशी तंत्र

ज्वालामालिनी तंत्र

गुह्य काली साधना

कर्ण पिशाचिनी साधना

तांत्रोक्त हनुमत कल्प

होली पर १०८ तांत्रोक्त साधनाएं

होली पर आह्वान

ओ मेरे आत्मीय . . . मेरे मानस के राजहंसो. . .

! फिर एक बार तुम्हें आवाज दे रहा हूं, जीवन को मधुरता, प्रेम के पावन रंगों में रंगने के लिए . . . जिससे तुम्हारे जीवन के विषाद, दुख, दरिद्रता को होलिका की अग्नि में तिरोहित कर साधना के रंग में भिगोकर . . . तुम्हें उत्साह-उछाह, उमंग-मस्ती और जीवन का नया रूप देने के लिए . . . अपने ही घर में, अपने गुरु के घर में . . . जहां सम्पन्न होने जा रहा है पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में–

महातंत्र साधना शिविर

१५-१६ मार्च १९९५

: स्थान :

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०)

साथ ही . . .

गुप्त मनोवांछित शीघ्र कार्य सिद्धि साधना

(गुरु गोरखनाथ प्रणीत)

अद्‌भुत आश्चर्यजनक एवं आज के युग के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण साधना

(जो कि पूरे वर्ष में केवल एक बार होली के अवसर पर ही सिद्ध हो सकती है)

और फिर सम्पन्न होगा –

– प्रयोग –

- स्वर्ण - वर्षा प्रयोग
- पद्‌मिनी प्रत्यक्ष सिद्धि प्रयोग
- पूर्ण वशीकरण सम्मोहन प्रयोग

शिविर शुल्क मात्र ३३०/-

– दीक्षा –

- दिव्यदृष्टि प्राप्ति दीक्षा
- सम्पूर्ण सौन्दर्य दीक्षा
- कामदेव - रति दीक्षा
- पुत्र प्राप्ति दीक्षा
- कोई भी गुप्त दीक्षा जो गुरुदेव चाहें

जीवन का सौभाग्यदायक अवसर जब गुरुदेव आवाज दे रहे हैं, तो फिर आप सबको तो आना ही है।

विशेष सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : ०२९१-३२२०९

आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

प्रार्थना

ॐ भद्राः जीवनत्वं प्रदुर्वै
श्रेयत्वं श्रियं सदानः

हे प्रभु! हम जीवन में साधनाओं के माध्यम से सभी समस्याओं का
समाधान प्राप्त कर लें और जीवन को पूर्ण सुखी सफल एवं सम्पन्न बनाने में सफल हों।

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका में प्रकाशित लेखों से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी स्थान, नाम या घटना का किसी से कोई संबंध नहीं है। यदि कोई घटना नाम, या तथ्य मिल जाय, तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु- संत होते हैं, अतः उनके पते या उनके बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना संभव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या संपादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बारे में, असली या नकली के बारे में, अथवा प्रभाव या न प्रभाव होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें, सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद - विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ आदि की जिम्मेवारी साधक की स्वयं होगी तथा साधक कोई ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करे, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित एवं विज्ञापित आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग पाठक अपनी जिम्मेवारी पर ही करें। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी, सन्यासी या लेखकों के मात्र विचार होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री आप अपनी इच्छानुसार कहीं से भी मंगा सकते हैं। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया है जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस संबंध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस संबंध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है कि वह संबंधित लाभ तुरंत प्राप्त कर सके। यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस संबंध में किसी प्रकार की कोई आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस संबंध में किसी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

अनुक्रमणिका

साधना

स्तम्भ

विवेचनात्मक

१९९५

नूतन वर्ष समस्त शिष्यों साधकों और पाठकों को मेरा आशीर्वाद, कि आप इस वर्ष जीवन के सभी क्षेत्रों में पूर्ण सफलता, सम्मान, यश, प्रतिष्ठा एवं साधना-सिद्धि में पूर्णता सफलता प्राप्त करें।

शुभाशीर्वाद के साथ

[signature]

सम्पादकीय

नूतन वर्ष १९९५ में **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** पत्रिका का यह प्रथम अंक आपके हाथों में सौंपते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है। हर्ष हो रहा है इस बात से कि आप पत्रिका का स्वागत हमेशा अपने घर के आत्मीय सदस्य के रूप में करते हैं और जब भी कोई अड़चन या बाधा आप के जीवन में आती है, तो आप इस पत्रिका के माध्यम से उसका निदान भी कर लेते हैं। इस प्रकार यह पत्रिका तो आप की अपनी ही पत्रिका है, जैसा कि हर बार आप के पत्रों से हमें विदित होता है।

सुव्यवस्थित क्रम से किया गया कार्य सफल होता ही है, और क्रम बद्ध तरह से कार्य करने की पद्धति ही **''तंत्र''** है। यह तो आप जानते ही हैं कि **''तंत्र''** शब्द से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आप-अपने जीवन को सुचारू रूप से संचालित करते हुए विभिन्न तंत्रों का प्रयोग करते ही हैं।
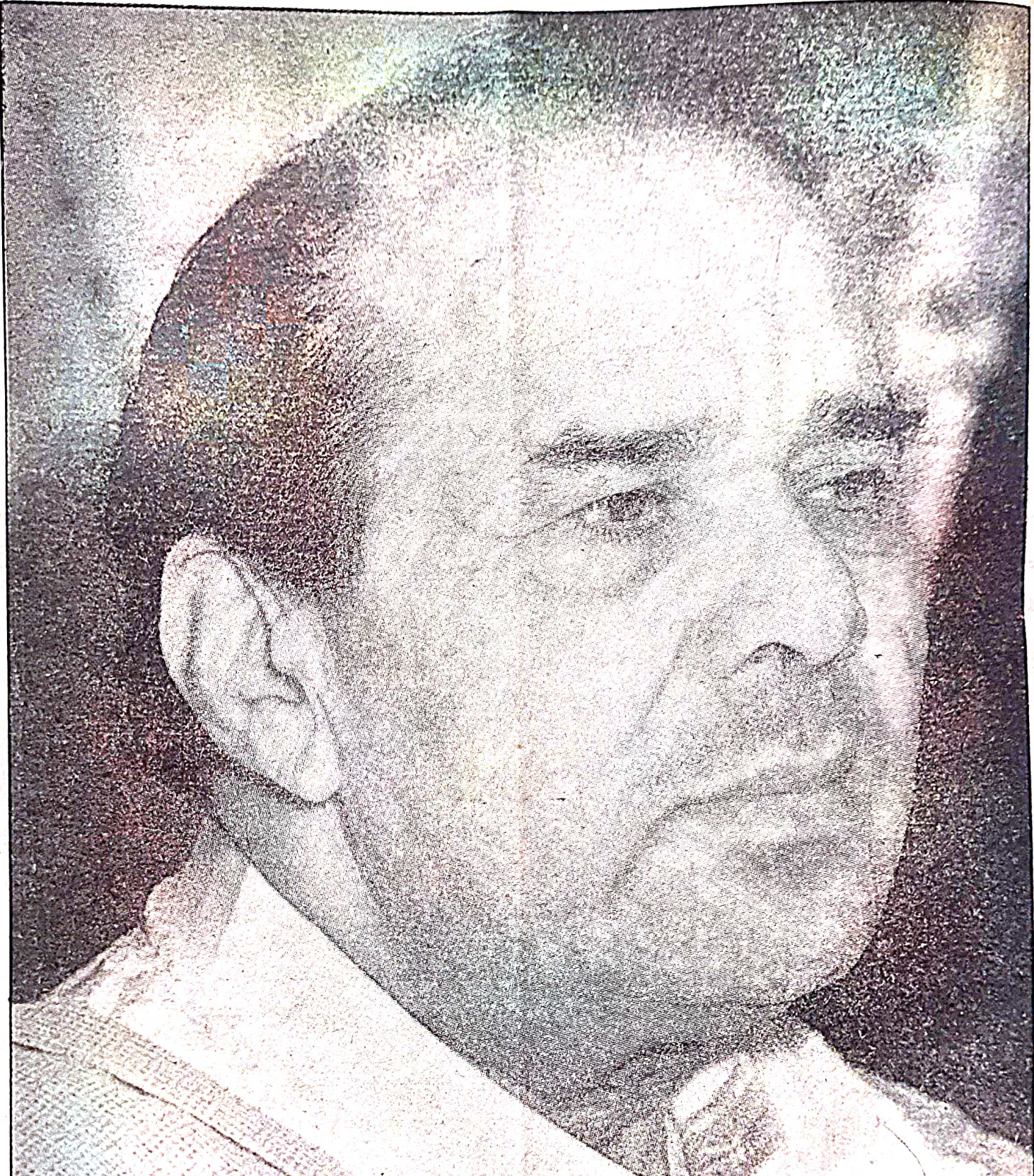
जनवरी ९५ का यह अंक **''तंत्र विशेषांक''** के रूप में प्रस्तुत है, आपकी आकांक्षाओं के अनुरूप।

इस अंक में **''हिडिम्बा तंत्र''** के माध्यम से आंखों की शक्ति बढ़ायी जा सकती है और अपने चेहरे पर ऐसा आकर्षण उत्पन्न कर सकते हैं जिससे प्रत्येक आप के प्रति अनुरक्ति अनुभव करे ही। इसके अलावा **''उर्वशी तंत्र'', ''नागिनी तंत्र''** तथा **होली पर्व पर सिद्ध किए जाने वाले अचूक १०८ प्रयोग** जिनके द्वारा बहुत से रुके कार्य सम्पन्न हो जायेंगे।

नव वर्ष के प्रारम्भ में आप यह शपथ लें कि पाश्चात्य अंधानुकरण के फैलते हुए अंधकार को दूर करने में हमारे सहयोगी बनेंगे और प्रत्येक घर में भारतीय संस्कृति का दीप प्रज्वलित कर पत्रिका के उद्देश्य को पूरा करेंगे। आप में से प्रत्येक व्यक्ति के प्रयास से ही हमारे बच्चे सुसंस्कृत व सभ्य बन सकेंगे।

आप को यह अंक कैसा लगा? यह पत्रिका कार्यालय को अवश्य लिख कर भेजें। नववर्ष की प्रथम मंगल बेला पर आप समस्त साधकों, पाठकों एवं शिष्यों को मेरा आशीर्वाद व शुभकामनाएं।

आपका
नंदकिशोर श्रीमाली

सद्गुरु सबद सहज विचार

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मिलितं येन तस्मै श्री गुरुवै नमः।।

जो अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करने वाले हैं, और जो ज्ञान-शलाका से, अपने दिव्य प्रकाश से शिष्य के हृदय में व्याप्त अन्धकार को दूर कर, ज्ञान-चक्षु जाग्रत करने वाले हैं, वही सही अर्थों में सद्गुरु हैं।

"गुरु तत्व" का अर्थ ज्ञान है, और **"ज्ञान"** ही गुरु है। आज के इस घोर कालिमा युक्त जीवन में गुरु तो हजारों-लाखों मिल सकते हैं, किन्तु वह गुरु सही अर्थों में गुरु हो, यह कोई जरूरी नहीं. . . और जो शिष्य का सही मार्ग प्रशस्त कर दे, उसे उसकी मंजिल तक पहुंचा दे, उसे ब्रह्म से साक्षात्कार करा दे, वही सही अर्थों में गुरु कहलाने योग्य होता है, फिर उसे **"गुरु"** नहीं **"सद्गुरु"** कहते हैं।

सद्गुरु, जो भक्त और भगवान के बीच की एक कड़ी है, जो भक्त को भगवान तक पहुंचने का सरल और सहज रास्ता बताता है, और उस रास्ते पर अग्रसर करते हुए, उसे उस परम पिता परमात्मा में लीन कर देता है. . . यही विशिष्ट कार्य होता है उसका, जिसके लिए वह इस धरा पर अवतरित होता है. . . और देता है इस अज्ञानी युग को अपने ज्ञान का वह संदेश, जिसे सुनकर प्रत्येक व्यक्ति सत्य का साक्षात्कार कर सके, जीवन के उस वास्तविक तथ्य को जान सके, जिससे वह अनभिज्ञ है।

. . .और वह इस कार्य के लिए क्षण-प्रतिक्षण, प्रयत्नशील रहता है, कि मैं जैसे भी सम्भव हो इन अज्ञानी मनुष्यों को उस झूठे माया जाल से निकाल सकूं, जिस माया जाल में फंस कर वह मनुष्य भ्रमित हो गया है, वह यह भूल गया है कि उसका ध्येय यह नहीं कुछ और है. . . और इस जाल से अगर कोई निकाल सकता है, तो वह केवल और केवल मात्र सद्गुरु ही निकाल सकता है, क्योंकि वह जानता है कि इस उलझन से, इस भंवर से कैसे बचकर निकला जा सकता है. . .और सद्गुरु का जन्म तो होता ही इसीलिए है।

प्रत्येक युग में एक ज्ञान की चेतना का पुञ्ज हमारी आंखों के सामने अवतरित होता है. . . और अपने ज्ञान, अपनी चेतना, अपने चिन्तन और धारणा को समाज के सामने प्रस्तुत कर वापिस लौट जाता है, लुप्त हो जाता है– कृष्ण, जिन्हें जगत गुरु कहा गया, वशिष्ठ, द्रोणाचार्य, बुद्ध, शंकराचार्य इत्यादि ऐसे अनेकों गुरुओं ने इस धरा पर जन्म लिया जिन्होंने अपने-अपने ढंग से इस धरा पर ज्ञान को फैलाकर मानव जाति को जाग्रत करने का अदम्य प्रयास किया. . .और इसी कार्य में प्रतिपल संलग्न हो अपने जीवन को भी मिटा दिया, क्योंकि उनका ध्येय केवल मात्र इतना ही था कि मानव वास्तविक ज्ञान से, वास्तविक सत्य से वंचित न रह जाए. . . यह बात और है कि हम समय रहते उन युग पुरुषों को पहिचान नहीं पाते, और उन स्वर्णिम क्षणों को गंवा बैठते हैं, जो क्षण हमें उनकी सामीप्यता प्राप्त कर, उनके साहचर्य में बिताने चाहिए।

और फिर उनके जाने के बाद उनकी याद में ऊंचे-ऊंचे मंदिरों की स्थापना कर उनकी आरती उतारते हैं, घंट-घड़ियाल बजाकर उन्हें प्रसन्न करने की कोशिश करते हैं, किन्तु

– क्या वह ज्ञान उनके मुखारविन्द से पुनः प्राप्त किया जा सकता है?
– क्या पुनः उनकी सामीप्यता प्राप्त की जा सकती है?
– क्या पुनः उनके उसी स्वरूप के दर्शन किये जा सकते हैं?
– क्या आने वाली पीढ़ियां उस आनन्द को ले सकती हैं, जो आपको जीवित-जाग्रत गुरु से प्राप्त हुआ हो?

इसका उत्तर है. . . नहीं! चाह कर भी हम ऐसा नहीं कर सकते, क्योंकि वह तो जीवित-जाग्रत देह की उपस्थिति से ही सम्भव है. . .और जो उनकी उपस्थिति को समझ लेते हैं, वही उस ज्ञान को, उस आनन्द को ले पाते हैं।

हर बार वह चीख कर, चिल्लाकर, अपने-आप को तिल-तिल जलाकर, समाज द्वारा दी गई प्रत्यंचनाओं को झेलते हुए, उनके द्वारा दिये गए कड़वे जहर को शिव की तरह अपने कंठ में समाहित कर, हर क्षण धधकते अंगारों के बीच जलते हुए भी मनुष्यों के कल्याण के लिए अपने रक्त की एक-एक बूंद को बहा देते हैं।

किन्तु इतना होने पर भी हम उनकी कितनी सुन पाते हैं?

यों तो हम कह सकते हैं कि उनकी अमृत वाणी सुनने के लिए हम भाग-भाग कर जाते हैं, अभी भी उसके लिए तैयार हैं, कैसेट पर भी उनकी आवाज सुनकर मन पुलकित हो उठता है, यह सब होते हुए भी यह सत्य है कि हम उनकी कही बातों को ठीक से सुन नहीं पाते, उसे आत्मसात नहीं कर पाते. . . और अगर ऐसा नहीं कर पाते तो न्यूनता हमारी ही है, उनकी नहीं।

नदी को बहने से कोई नहीं रोक सकता, किन्तु आप उस कलकल बहती नदी के संगीत का पास बैठकर भी आनन्द न ले सकें, तो यह न्यूनता आपकी है, उस नदी की नहीं, वह तो अपना कार्य कर रही है। फूलों को महकने से कौन रोक सकता है, किन्तु आप उसकी खुशबू से आप्लावित न हों, तो इसमें न्यूनता आपकी ही है, इसी प्रकार सद्गुरु तो अपने अमृत - वचनों से, अपने अमृत - संदेश से, अपने ज्ञान की अविरल धारा के माध्यम से आपको उसमें स्नान करने के लिए प्रेरित करता ही है, अब यह तो आप पर निर्भर करता है कि आप उस पवित्र और पावन गंगा में स्नान करें या न करें।

सद्गुरु कैसे होते हैं, उनकी महिमा कैसी होती है . . . यह तो वह ही बता सकता है, जिसने उनकी निकटता प्राप्त की हो। उसे देखकर ही यह जाना जा सकता है, कि ईश्वर क्या है, कैसा है, उसकी सर्वोच्चता क्या है? क्योंकि **सद्गुरु** को देखकर ही हम उस परम सत्ता परमात्मा को चीन्ह सकते हैं, उससे साक्षात्कार कर सकते हैं, उससे एकाकार हो सकते हैं. . . पर उस सर्वोच्च सत्ता में अंगीकार कराने का माध्यम तो वही एकमात्र **सद्गुरु** होता है, जो मनुष्यों के बीच उन जैसा बन कर ही, उन्हीं के मध्य साधारण रूप में रहकर जीवनयापन कर उनके भौतिक और आध्यात्मिक दोनों धरातलों के बीच संतुलन बनाये रखते हुए उन्हें पूर्णता तक पहुंचने का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस पृथ्वी पर जो कुछ भी छल, कपट, व्यभिचार एवं हिंसा व्याप्त होती है, धर्म का निरन्तर क्षय होकर धर्म के नाम पर असत् की सत्ता व्याप्त होती है, तो उसको नियंत्रित करने का कार्य यही ज्ञान करता है, जिसे **''सद्गुरु''** कहते हैं।

जो व्यक्ति समय रहते उन्हें पहिचान कर उनके चरण कस कर पकड़ लेता है, उनके द्वारा दिए ज्ञान को अपने में आत्मसात कर लेता है, वही सही अर्थों में धन्यभागी है, और जो उनके निकट रहकर भी उनकी महत्ता को समझ नहीं पाता, उनके द्वारा दिये ज्ञान को ग्रहण नहीं कर पाता, उनकी सुगन्ध से अपने-आप को आप्लावित नहीं कर पाता, उनके प्रेम में अपने-आप को सराबोर नहीं कर पाता, उससे दुर्भाग्यशाली व्यक्ति इस संसार में और कोई नहीं कहा जा सकता।

इस पृथ्वी तल पर प्रत्येक अवतरण एक निश्चित अंतराल पर ही होता है, और उनके जाने के बाद लोग उन्हें ईश्वर मानकर पूजते हैं, क्योंकि वे उनके चले जाने के बाद ही उनके महत्व को, उनकी महिमा को समझ पाते हैं, और तब तक बहुत देर हो हो चुकी होती है। इस युग में पुनः एक दिव्य आत्मा का अवतरण इस धरती पर हुआ है।

ज्ञान मूलं गुरुर्मूर्ति पूजा मूलं गुरु पदं।
मंत्र मूलं गुरुर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुरु कृपा।।

ज्ञान का ही मूर्तिमंत स्वरूप हैं पूज्य गुरुदेव, इनकी उपमा देने लायक तो कोई दृष्टांत ही नहीं है, क्योंकि उन्होंने जो कह दिया वह मंत्र हो गया, जो कर दिया,

वह तंत्र हो गया, और जिसको भी स्पर्श कर दिया वह यंत्र हो गया, ऐसी ही देवमूर्ति हैं वह, जिनकी कृपा-दृष्टि यदि हो जाए, तो मोक्ष प्राप्त हो जाता है।

वह अपने अलग-अलग स्वरूपों में ही शिष्यों का उद्धार करने वाले हैं, उनका एक स्वरूप "ब्रह्मा" है, तो दूसरा "विष्णु" है और तीसरा "शिव" भी है. . .और उनके विराट स्वरूप के दर्शन कर यह कहना कदापि गलत नहीं है।

परम पूजनीय गुरुदेव तो

यह बोध करा सकें, कि अभी तक वे जिसे जीवन समझ रहे थे, वह वास्तविक जीवन नहीं अपितु एक गहरी नींद थी, जिसमें आकण्ठ डूबे हुए हैं वे।

पर मानव अपनी तन्द्रा को सहेज कर रखे हुए है, जो प्रतिपल उसे मृत्यु की ओर अग्रसर कर रही है, और सद्गुरु ले चलते हैं उसे मुक्ति के पथ पर, अमृत की राह पर, क्योंकि जागते ही उसे ज्ञान हो जाता है उस अमृत कुण्ड का जो उसके भीतर ही प्रसुप्त है, जो मिट नहीं सकता, जो शाश्वत है।

नहीं तब तक वह देह-तत्व से उठकर प्राण-तत्व में नहीं जा सकता, और जब ऐसा हो जाता है तो उसके भीतर का परमात्मा दृष्टव्य हो जाता है . . .और फिर पूज्य गुरुदेव का तो एक-एक वाक्य उपनिषद् है, एक-एक शब्द वेद वाक्य है। अतः गुरु मुख से उच्चरित प्रत्येक शब्द को, प्रत्येक अक्षर को पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ समझ कर अपने जीवन में अक्षरशः उतारना ही चाहिए— **"सद्गुरु सबद सहज विचार"।**
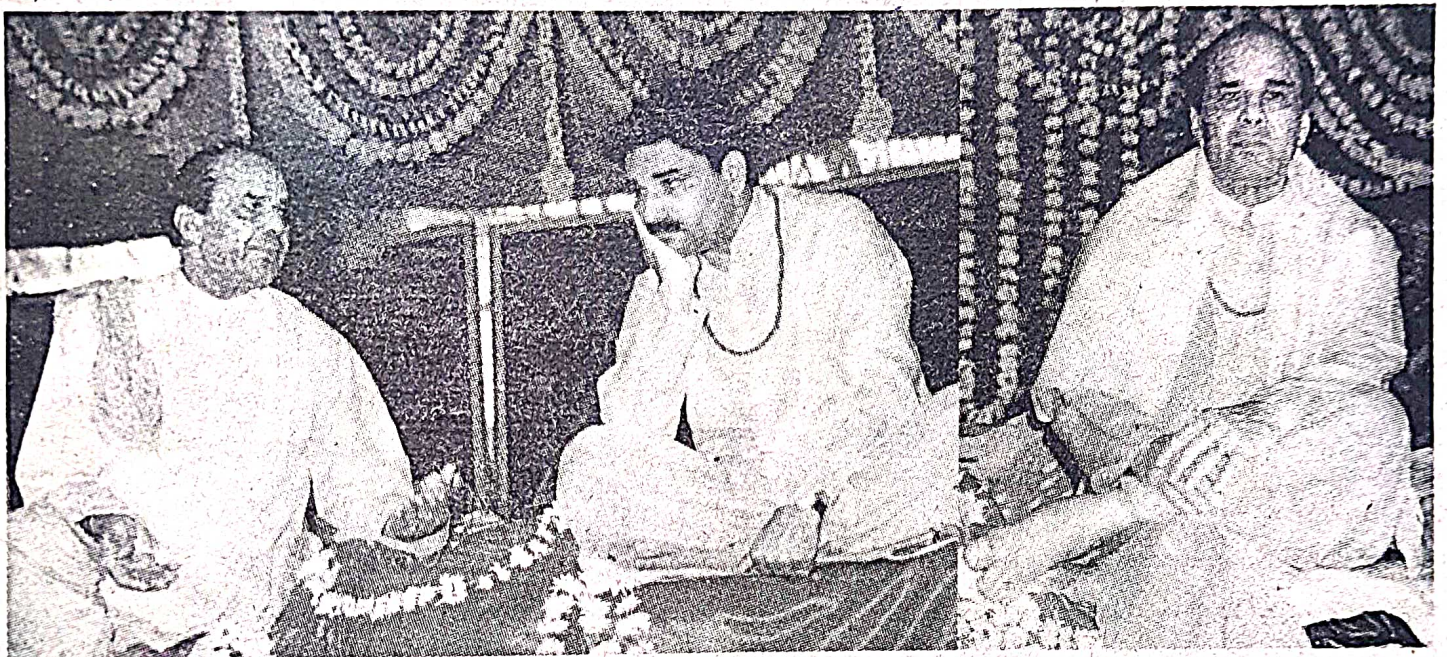
आये ही इसीलिए हैं कि अपनी ज्ञान-गंगा में प्रत्येक को नहला कर, उस आनन्द से सराबोर कर सकें, जो जीवन का सच्चा आनन्द है, उन्हें पूर्णता प्रदान कर सकें, उन्हें उस विराटता से साक्षात्कार करा सकें, उन्हें देवमय बना सकें, शिवमय बना सकें . . .यही तो एक सद्गुरु का ध्येय होता है, और इसी कार्य में संलग्न हैं पूज्यपाद गुरुदेव, अपनी विशिष्ट दीक्षाओं एवं शक्तिपात के माध्यम से।

उनके जीवन का तो लक्ष्य ही यह है, कि वे मनुष्य की तन्द्रावस्था को तोड़ सकें, उन्हें नींद से जगा सकें, और

पूज्य गुरुदेव भी ऐसा ही कर रहे हैं, वे शिष्य को त्वरित मृत्यु प्रदान कर रहे हैं, नष्ट कर रहे हैं उसके द्वारा संचित झूठी सम्पदा को, वे मृत्यु दे रहे हैं शिष्य की न्यूनता को, समापन कर रहे हैं उसके पाखण्ड का, उसकी निर्लज्जता का, ताकि जो कुछ भी व्यर्थ है वह समाप्त हो जाए और एक नये ढंग से उसका निर्माण कर उसे पूर्णता प्रदान कर सकें, और यही मृत्यु ही महाजीवन का प्रारम्भ होती है।

क्योंकि जब तक शिष्य अपने-आप को पूर्णरूप से समर्पित नहीं करेगा, अपने-आप को मिटायेगा

इसके लिए आवश्यकता है तो समय रहते उस व्यक्तित्व को पहिचान लेने की, आवश्यकता है पूर्णरूप से अपने-आप को उनके चरणों में समर्पित कर देने की, आवश्यकता है श्रद्धा और विश्वास की, क्योंकि तभी उस उच्चता तक पहुंचा जा सकता है, तभी उस परमात्मा से साक्षात्कार किया जा सकता है।

भौतिक और आध्यात्मिक संतुलन को बनाये रखते हुए, उस उच्चता तक पहुंचना, उस ब्रह्म से एकाकार होना ही तो श्रेष्ठ जीवन कहलाता है। ❏

तंत्र और शक्ति का सम्बन्ध

मान, सम्मान, ऐश्वर्य, कीर्ति प्राप्त करना ही जीवन की पूर्णता है, और इसको प्राप्त करने के लिए आवश्यकता होती है शक्ति की, शक्ति का तात्पर्य बलिष्ठ शरीर नहीं होता, जो वह चाहे करने में सक्षम हो, वह शक्तिवान होता है, और शक्ति तंत्र का पर्याय माना जाता है, बिना तंत्र के शक्ति प्राप्त की ही नहीं जा सकती क्योंकि शक्ति तंत्र के . . .

वेदों की रचना द्वापर, त्रेता और सतयुग से पहले ही की गई, और उसके बाद श्रुति एवं स्मृति की रचनाएं हुईं, तथा इन्हीं के अनुसार उपरोक्त तीनों युगों में पूजा इत्यादि सम्पन्न की जाती थी, और उस समय के युग के अनुसार वे फलदायी भी थीं, लेकिन कलियुग में ये क्रियाएं अपना प्रभाव नहीं दे पातीं।

इस युग में क्या आवश्यक है?

इस युग में तो आगम-मार्ग अर्थात् तांत्रोक्त पूजा, तांत्रोक्त ध्यान और आवश्यक मंत्र ही पूजा के लिए, साधना के लिए फलदायी हैं। आज वेद जनित रचनाओं से साधना अब युग धर्म के अनुकूल नहीं रह गई है, और साधना का तात्पर्य ही शक्ति प्राप्त करना है। कलियुग में तो तंत्र का मार्ग ही श्रेष्ठ बताया गया है, और यही मार्ग जीवन निर्माण, सफलता एवं आगे मोक्ष का मार्ग है, इसे छोड़कर किसी दूसरे मार्ग को अपनाने वाला, उसी मूर्ख के समान है, जो गंगा नदी के किनारे अपनी प्यास बुझाने के लिए कुंआ खोदता है।

तंत्र अर्थात् शक्ति की उत्पत्ति

शक्ति और तंत्र एक-दूसरे के पर्याय ही कहे जा सकते हैं, क्योंकि दोनों में पूर्ण सम्बन्ध है। तंत्र के बिना शक्ति प्राप्त नहीं की जा सकती, और शक्ति तंत्र के अधीन होती है। अतः जिसे अपने जीवन में किसी भी प्रकार की शक्ति से सम्पन्न होना हो, तो वह तंत्र और मंत्र का मार्ग अपनाए।

अब प्रश्न उठता है कि शक्ति की उत्पत्ति कहां से हुई और कैसे हुई तथा इसका स्वरूप क्या है?

सच्चिदानन्द स्वरूप परम पिता सकल परमात्मा से शक्ति उत्पन्न हुई, तथा शक्ति से नाद और नाद से बिन्दु की उत्पत्ति हुई। **परमात्मा सगुण एवं निर्गुण दोनों स्वरूपों में है, और उनके सगुण स्वरूप से ही शक्ति चैतन्य रूप में उत्पन्न हुई।**

जब वह शक्ति किसी कार्य विशेष के लिए अवतरित होती है तथा नित्य रहते हुए सर्वव्याप्त और विश्व की सृष्टि करती है, तब उसे संसार में उत्पन्न हुई कहा जाता है।

तीन बिन्दुओं से तीन शक्तियां जिन्हें ज्ञान, इच्छा और क्रिया कहा जाता है तथा अग्नि, चन्द्र और सूर्य उसके स्वरूप हैं, उत्पन्न हुईं। ये तीनों शक्तियां शिव की ज्ञान शक्ति, ब्रह्मा की इच्छा शक्ति तथा विष्णु की क्रिया शक्ति स्वरूप वाली हैं।

ये तीनों शक्तियां जहां स्थित हैं, वहीं बिन्दुओं से बना ज्योति स्वरूप प्रथम नाद "ॐ" है, और इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि महाकाली ने विष्णु को इच्छा शक्ति, ब्रह्मा को क्रिया शक्ति और शिव को ज्ञान शक्ति प्रदान की।

वास्तव में निराकार महाज्योति स्वरूपा जगत माता ने इस प्रकृति में सगुण स्वरूप दो रूप उत्पन्न किए। प्रथम स्वरूप शिव का था और दूसरा शक्ति का। इन दोनों के मिलन से ब्रह्मा नामक पुत्र की उत्पत्ति हुई, तब आदिशक्ति ने अपने शरीर से सावित्री महाविद्या क्रिया शक्ति को उत्पन्न कर उसे प्रदान किया, और कहा कि इसके साथ तुम वेद का विस्तार करो और सृष्टिकर्ता बनो।

दूसरे पुत्र विष्णु हुए, जिन्हें भगवती काली ने "श्री विद्या" प्रदान की जिसकी सहायता से वे सारे जगत का पालन करते हैं। तीसरे पुत्र महायोगी शिव हुए, जिन्हें महाकाली ने भुवन सुन्दरी गौरी प्रदान की।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि इन तीनों शक्तियों के जुड़ने से ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश शक्ति सम्पन्न हुए, और सृष्टि की रचना, रक्षा एवं संहार में सहायक बने। आदि शक्ति की कृपा से इन्हें जो तीन शक्तियां मिलीं, वे ही शक्तियां मूल रूप से क्रियाकारक हैं। इसलिए लिखा गया है कि शक्ति के बिना शिव भी शव के समान हैं।

कलियुग में तो केवल तंत्र का मार्ग ही श्रेयस्कर है, इसको छोड़ना तो, गंगा के किनारे कुंआ खोदने के समान व्यर्थ है. . .

तंत्र देने का कौन अधिकारी?

केवल गुरु ही तंत्र को बताने वाला और अपने शिष्य को प्रदान करने वाला ज्ञान दाता होता है। जो मंत्र का ज्ञाता है वही गुरु, जिसने परम गुरु और परमेष्ठी गुरु से तंत्र का ज्ञान प्राप्त किया हो, वही मंत्र तथा तंत्र को देने का अधिकारी होता है।

तांत्रोक्त ध्यान और मंत्र का उपयोग किस प्रकार से किया जाए, जिससे कि वे शिष्य विशेष के लिये भी उपयोगी हो सके, उसे शुद्ध मार्ग पर ले जा सके, यह ज्ञान केवल गुरु ही करा सकते हैं। प्रसिद्ध ग्रंथ "भाव चूड़ा मणि" में वर्णित है कि तंत्र का अधिकारी कौन हो सकता है—

तन्त्राणा मति गूढत्वात तद्भावोऽप्यतिगोपितः
ब्राह्मणो वेदशास्त्रार्थतत्वज्ञो बुद्धिमान वशी।
गूढ़तन्त्रार्थभावस्य निर्मथ्योद्धरणे क्षमः
वाममार्गेऽधिकारी स्यसादित्तरो दुःखभाग्भवेत्।

अर्थात् " तंत्रों के अत्यंत गूढ़ होने के कारण उसका भाव भी अत्यंत गुप्त है। इसलिए वेद शास्त्रों के अर्थ तत्वों को जानने वाला, जो बुद्धिमान और जितेन्द्रिय पुरुष गूढ़ तन्त्रार्थ के भाव का मंथन करके उद्धार करने में समर्थ हो, वही वाम मार्ग का अधिकारी हो सकता है।"

इस विवेचन से स्पष्ट है कि तंत्र अपने-आप में अत्यधिक गूढ़ विषय है, स्वाभाविक है कि इतने गूढ़ विषय का प्रतिपादन गुरु ही करा सकते हैं, और उनके ही तपस्यात्मक बल से साधक इस दुरूह मार्ग पर चलने की सामर्थ्य प्राप्त कर सकता है। **तंत्र-मार्ग पर चलना तो जीवित सिंह का आलिंगन करने एवं विषधर सर्प के मुख का चुम्बन लेने से भी अधिक दुष्कर घोषित किया गया है।**

तंत्र, भक्ति और मुक्ति प्रदाता, ज्ञानदायक तथा मोक्षप्रद है, और जिसने तंत्र को समझ लिया, अपने जीवन में उतार लिया, उसे अपने जीवन में ही पूर्ण ज्ञान हो जाता है, वह योगी बन जाता है।

जो तंत्र की निन्दा करता है, वह वास्तव में उस आदिशक्ति महाकाली की निन्दा कर रहा है, जिससे तीनों शक्तियां उत्पन्न हुईं, उसका नाश शक्ति हीनता की स्थिति में अवश्य ही होता है। ❑

यह साधना जहां देवताओं के लिए उचित मानी गई है, वहीं मनुष्यों के लिए भी अनुकूल कही गई है, क्योंकि अप्सराएं स्वयं भी मनुष्यों की ओर आकर्षित रहती हैं, आवश्यकता है तो केवल उन्हें साधना द्वारा प्राप्त करने की।

उत्तेजक देह का प्रस्तुतिकरण और अत्यधिक मादकता के भार से लदे यौवन का नाम ही **उर्वशी** है। यह तो सत्य है कि नारी के साहचर्य के बिना कोई भी कला अपूर्ण ही है, चाहे वह संगीत व नृत्यकला की बात हो या फिर मधुर वार्तालाप की।

अधिकतर साधकों का चिन्तन यही रहता है कि मैं अप्सरा साधना सम्पन्न करूं और साधना सम्पन्न होते ही, वह अप्सरा मुझे प्राप्त हो जाए, किन्तु इतनी शीघ्रता से तो कोई साधारण नारी भी प्राप्त नहीं होती। एक लड़की से विवाह करने के लिए भी उसको देखना, उसके मां-बाप से विवाह की बातचीत चलाना, विवाह की तिथि तय करना, अग्नि के चारों ओर फेरे खाना आदि साधनाएं सम्पन्न करनी पड़ती हैं तभी वह लड़की पत्नी के रूप में प्राप्त हो पाती है, फिर उर्वशी तो एक अप्सरा है, चिर यौवनमयी है।

अप्सरा साधना में असफलता का कारण यह होता है कि ऐसे व्यक्ति एक आध बार अधूरे मन से प्रयास करने के बाद ही उसे छोड़ देते हैं, यदि वे पूर्ण विश्वास के साथ मन लगाकर, एकाग्रता पूर्वक साधना को सम्पन्न करें तो साधना में सफलता मिलती ही है।

उर्वशी जो केवल इन्द्र के दरबार की अप्सराओं के मध्य ही नहीं, वरन् समस्त १०८ अप्सराओं के मध्य भी सर्वश्रेष्ठ अप्सरा है, वह न केवल अपने रूप, सौन्दर्य से वरन् अपने शरीर सौष्ठव, नृत्यशैली, हास्य-विनोद, कला, सुरुचि प्रियता, श्रृंगार-शैली सभी में नारी सौन्दर्य का पर्याय ही है।

एक स्त्री के द्वारा ही यह सम्भव है कि वह एक साथ पत्नी, प्रिया, बहू, मां, भाभी और ऐसे ही कई तानों-बानों में बुनी, सभी रूपों में एक साथ अपने स्नेह और प्रेम से सरस करती गति दे सकती है, इसी कारण यह

साधना पुरुषों की अपेक्षा किसी स्त्री के लिए अधिक उपयोगी होती है; क्योंकि सौन्दर्य का सब से मुखर स्वरूप केवल नारी, और नारी देह के माध्यम से ही अभिव्यक्त होता है।

गहरे, घने और काले लम्बे बाल, जिसकी कमनीय कोमल काया बेंत की तरह लचकदार है, जिसके अंग-अंग से यौवन की आभा फूट रही हो, जिसकी झील सी आंखों में गजब का आकर्षण एवं सम्मोहन हो, जो किसी के भी चित्त को बांध सकने में समर्थ हो, जिसमें रूप और सौन्दर्य का अद्भुत सामंजस्य हो, भरी-भरी सुतवा नाक, रसीले अधर, स्वस्थ कपोल और पुष्ट गर्दन, जिसमें पड़ा हो कोई पतला सा सूत्र, जो पता नहीं ग्रीवा के सौन्दर्य से झिलमिला रहा हो या ग्रीवा ही उसके सौन्दर्य से ऐसे बंध गई हो, कि फिर वह सौन्दर्य बेकाबू होकर कहीं छलक ही न उठे, कंधे ऐसे जिन पर पुरुष अपना सिर टिका देने के लिए आतुर हो उठें और उनसे जुड़ी दो नर्म बाहें, लगे कि उसकी कोमलता प्रेम की गरमाहट से पिघल कर बांहों में ढल गई हो, हृदय की मृदुता को व्यक्त सा करता सुगठित और कोमल वक्षस्थल जिसकी गठन और कसाव समेटे हो सौन्दर्य के दर्प को, सुडौल और चिकनी कमर जिसके आधार में उमड़ रहा हो विशाल नितम्ब प्रदेश। सारे वक्षस्थल का भराव, जो वहां न समा पाया हो, और नाभि के पतले से पात्र में उतर उफन-उफन कर नितम्ब की पृथुलता और फैलाव में ढल गया हो और फिर खुद ही शरमा कर जंघाओं की मांसलता में लजाता-शरमाता उसे भरती हुई सुडौल पिण्डलियां. . . ऐसी ही पैरों में पहिने घुंघरुओं की रुन-झुन से देवता, यक्ष, गन्धर्व, किन्नर और मनुष्यों के प्राण अटके रह जाते हैं, और जिसके शरीर से निरन्तर अद्वितीय एवं अपूर्व अष्टगंध प्रवहित होती रहती है, जिसकी सुगन्ध से प्रत्येक प्राणी मोहित होता हुआ, उसे पाने के लिए तड़प कर रह जाता है।

ऐसा अद्वितीय सौन्दर्य देखकर तो पुरुष वर्ग का सारा तनाव दूर हो जाता है ही। साधक अप्सरा के किसी भी रूप को अपने मानस में संजोये यदि साधना करता है, तो उसे उसी रूप में उसकी सामीप्यता प्राप्त होती है। यदि प्रेमिका रूप में यह साधना सम्पन्न की जाए, तो साधक को वह उसी रूप में प्राप्त होती है, अन्य सभी रूपों के अपेक्षा प्रेमिका रूप में साधना करने पर साधक को शीघ्र सफलता प्राप्त होती है।

क्योंकि प्रेमिका अपने प्रिय को अपना सर्वस्व अर्पित कर, उसे हर समय प्रत्येक प्रकार से प्रसन्न देखना चाहती है।

१. साधक के जीवन में यदि धन का अभाव होता है, तो उर्वशी उसे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष **कई रूपों में आर्थिक सहायता देती है।**

२. यदि साधक के जीवन में प्रेम का अभाव हो, तो वह प्रेम का साकार रूप बन, **उसके जीवन को प्रेम से आपूरित कर देती है।**

३. यदि साधक हीन भावना से ग्रसित होता है कि वह किसी सुन्दर स्त्री या लड़की का सामना नहीं कर सकता है, तो उसके, मन से इस हीन भावना को निकाल कर उसे **पूर्ण पौरुषता प्रदान करने में सहायक बनती है।**

४. यदि विवाहित पुरुष इस साधना को सम्पन्न करता है, तो भी उसके मन में किसी प्रकार का द्वंद या पति-पत्नी में मतभेद की स्थिति नहीं उत्पन्न होती है, क्योंकि उर्वशी एक ऐसी तेजस्वी शक्ति के रूप में, उसकी पत्नी के शरीर में ही समाहित हो जाती है, जिससे कि **उसकी पत्नी सभी दृष्टियों से पूर्ण नारीत्व को धारण कर अपने पति को सभी प्रकार से सुख प्रदान करने वाली बन जाती है।**

५. यदि इस साधना को कोई स्त्री या लड़की सम्पन्न करना चाहे, तो बेहिचक हो इस साधना को सम्पन्न कर सकती है; क्योंकि **उर्वशी उसकी सहेली तथा सहयोगिनी के रूप में उसकी प्रत्येक समस्याओं का समाधान करती है।**

६. उर्वशी साधना सम्पन्न साधिका यदि गायन, नृत्य, श्रृंगार आदि कलाओं में पारंगत होना चाहे, तो उर्वशी उसे इन कलाओं का भी ज्ञान प्रदान करती है, **इस प्रकार उर्वशी साधना स्त्री या पुरुष कोई भी कर सकता है।**

उर्वशी साधना करने से उपरोक्त लाभ तो साधक को प्राप्त होते ही हैं, साथ ही साथ साधक उर्वशी की तांत्रोक्त साधना को सम्पन्न कर, उसे अपने जीवन में सशरीर नृत्य करने के लिए भी विवश कर सकता है. . . और यह ऐसी ही अद्वितीय एवं श्रेष्ठ साधना है, जिसके माध्यम से ऐसा सम्भव हो सकता है, साधना सिद्धि प्राप्त कर वह उस सौन्दर्यशालिनी के नृत्य का अपूर्व आनन्द उठा सकता है, किन्तु आवश्यकता है, उस साधना को पूर्ण श्रद्धा एवं प्रसन्नचित्त होकर सम्पन्न करने की।

प्रयोग विधि

यह साधना अपने-आप में पूर्ण **''तांत्रोक्त साधना''** है, किन्तु इसकी विधि सामान्य ही है, और यह अपने-आप में अचूक एवं शीघ्र सफल होने वाली साधना है।

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व ही साधक निम्न सामग्री को पहले से ही प्राप्त कर लें, जिससे उसे साधना काल में किसी प्रकार की रूकावट अनुभव न हो।

इसमें हल्के लाल रंग के वस्त्र, हल्का लाल आसन, तथा पंचपात्र, धूप, दीप, कुंकुम, केसर, अक्षत, पुष्प, हिना अथवा खस का इत्र, गुलाब या गेंदे के पुष्पों से बनी माला, एक साबूत सुपारी, कलावा आदि की आवश्यकता पड़ती है।

इस साधना में जिस सामग्री का विशेष महत्व है, वह है-**''उर्वशी यंत्र''** और **''अप्सरा माला''** का।

साधक इस साधना को किसी भी शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को अथवा किसी भी शुक्रवार को सम्पन्न कर सकता है। यह रात्रि कालीन साधना है, अतः इसे रात्रि में ही प्रारम्भ करें। यह साधना एकान्त स्थल में, छत पर अथवा कमरे में की जा सकती है, ध्यान रहे साधना काल में परिवार का कोई भी सदस्य आपको बाधा न पहुंचाए।

साधना काल में साधक का मानस एक उत्साह तथा सौन्दर्यबोध से परिपूर्ण होना आवश्यक है, तथा जितना हो सके कम वार्तालाप करें।

साधक स्नान आदि से निवृत्त होकर, लकड़ी के एक बाजोट पर हल्के लाल रंग का आसन बिछाकर, किसी ताम्रपात्र अथवा स्टील की प्लेट में **''उर्वशी यंत्र''** स्थापित कर दें।

सर्वप्रथम साधक गणपति का स्मरण कर, सुपारी पर कलावा बांध कर, एक थाली में अथवा प्लेट में कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर, गणपति स्थापन करें, तथा साधक स्वयं का पवित्रीकरण **''दैनिक साधना विधि''** पुस्तक के अनुसार करते हुए भगवान गणपति को जल से तथा दुग्ध से स्नान करायें, तथा धूप, दीप, नैवेद्य, जो कि दूध का बना हो, से पूजन करें।

उर्वशी साधना को सम्पन्न करने से पूर्व साधक उर्वशी यंत्र का पूजन धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प, अक्षत आदि से सम्पन्न करें, तथा हिना अथवा खस के इत्र की कुछ बूंदे उर्वशी यंत्र पर तथा कुछ बूंदें स्वयं के वस्त्रों पर डाल लें। यह साधना साधक को पूर्वाभिमुख होकर सम्पन्न करनी है।

उपरोक्त सभी क्रिया करने के बाद साधक हाथ में जल लेकर जिस उद्देश्य से साधना की जा रही है, बोलकर साधना में सफलता प्राप्ति का संकल्प लें, तथा **''अप्सरा माला''** से निम्न मंत्र का निश्छल भाव से ११ माला मंत्र-जप सम्पन्न करें—

मंत्र

ॐ इलिं उर्वश्यै सिद्धिं भव ॐ

मंत्र-जप के दौरान साधक को यदि किसी भी प्रकार का अनुभव हो, जैसे अचानक तीव्र सुगन्ध का झोंका आना, किसी के पीछे खड़े होने का आभास होना, या पायल की आवाज का सुनाई देना, ऐसा कुछ हो तो साधक विचलित न हो और मंत्र-जप न छोड़े तथा साधना के पश्चात् साधक पत्र द्वारा पूज्य गुरुदेव को अपने अनुभव की सूचना दें, और उनसे आशीर्वाद प्राप्त करें।

मंत्र-जप समाप्ति के पश्चात, पहले से लाकर रखी माला में से एक माला तो उर्वशी यंत्र को पहिना दें, तथा दूसरी माला स्वयं पहिन लें। इसके पश्चात् साधक ''अप्सरा माला'' को भी पहिन लें तथा रात्रि में आसन के पास ही भूमि पर ही शयन करें।

साधना सम्पन्न करने के पश्चात दूसरे दिन साधक इस यंत्र तथा अन्य सभी साधना सामग्री को, किसी नदी अथवा तालाब में विसर्जित कर दें, तथा अप्सरा माला को २१ दिन तक धारण करे। जब भी साधक को रात्रि में समय मिले, तो एकान्त स्थल में जाकर उपरोक्त अप्सरा मंत्र का दो माला नित्य २१ दिन तक जप करें, तथा २१ दिन बाद इस माला को भी किसी नदी, तालाब या कुएं में विसर्जित कर दें। ❑

उसकी आंखों के तेज से इस्पात पिघल जाता था
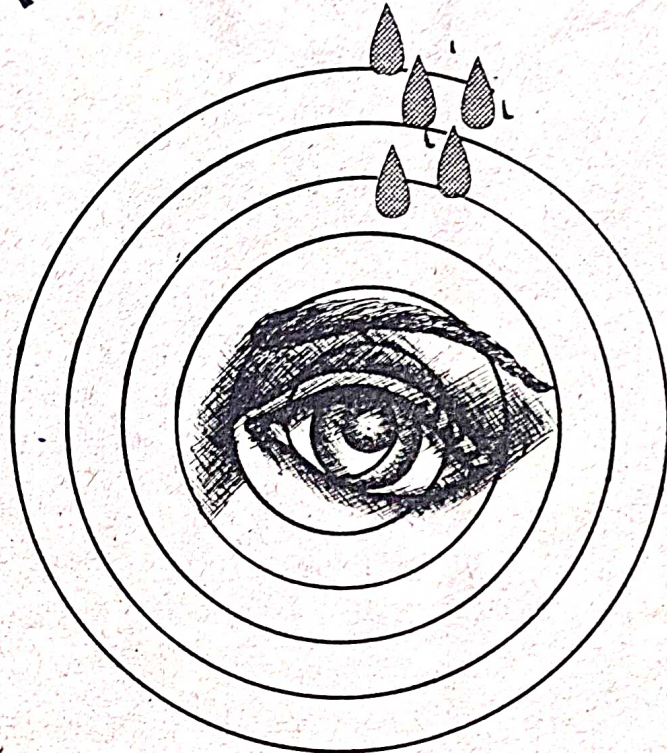
आज विज्ञान के द्वारा सभी कुछ सम्भव है, पर विज्ञान की भी एक सीमा है, और कुछ तथ्य ऐसे प्रामाणिक रूप से सामने आते हैं जहां विज्ञान को स्वीकार करना पड़ता है कि ऐसी कोई शक्ति है जो विज्ञान से भी कई गुना आगे है . . . .

विज्ञान से भी परे प्रकृति के कुछ ऐसे रहस्य हैं, जहां तक मानव पहुंचने में अक्षम रहा है। क्या ऐसा हो सकता है कि क्षण भर के दृष्टिपात से कुछ ऐसा घटित हो जाए, जो अपने-आप में ही आश्चर्यजनक एवं अद्भुत हो, जिसे देखकर आंखें खुली की खुली रह जायें. . .और मैं कहता हूं कि हां! ऐसा सम्भव है, यह एक सच्चाई है, जिसे मैंने स्वयं अपनी आंखों से देखा है, अनुभव किया है।

एक ऐसी घटना, एक ऐसा अद्भुत दृश्य, जिसे देखकर मैं भौचक्का सा रह गया और जो हाथ की सफाई या कोई जादू नहीं था, अपितु वैज्ञानिकों के मुंह पर एक करारा तमाचा था. . . **उन्होंने अपने नेत्रों की ज्योतिदाह को इतना अधिक उग्र किया, कि सामने रखा इस्पात भी पिघल कर द्रव हो गया।**

यह घटना कोई चमत्कार नहीं है, क्योंकि चमत्कार तो

वह होता है, जो आंखों को भ्रमित करता हो, परन्तु यह तो बिलकुल सत्य है, और अपनी आंखों से देखी हुई घटना है।

चूंकि मैं शुरू से ही अध्यात्म प्रेमी रहा हूं, इसीलिए मेरा रूझान उन गोपनीय तथ्यों, उन महत्वपूर्ण रहस्यों को उजागर करने में रहा, जो आज समाज से अनभिज्ञ हैं या जो ज्ञान प्रायः लुप्त सा हो गया है। मेरा सदैव ही ऐसा चिन्तन रहा है कि मैं समाज में उस आध्यात्मिक चेतना का विस्तार करने में सक्षम हो सकूं, जिस आध्यात्मिक शक्ति के आगे आज विज्ञान भी नतमस्तक हो गया है, और इसी चिन्तन, इसी विचार को अपने मानस में संजोये मैं जगह-जगह की यात्राएं करता रहा।

इसी यात्रा के दौरान मैंने एक सिद्ध योगी की चर्चा सुनी, जो कि एक उच्चकोटि के योगी थे, और जिन्होंने आंखों के माध यम से इस्पात को भी पिघला कर रख दिया था, और जिसे देखने दूर-दूर से लोगों की भीड़ आया करती थी। उस योगी को देखने की इच्छा मेरे मन में भी बलवती हो उठी, और इसी जिज्ञासा को मन में लिए, कि क्या ऐसा भी हो सकता है. . . मैं नैनीताल पहुंचा, जहां एक रास्ता रानी खेत की तरफ जाता है, और यहीं वह योगी हर समय एक छोटी सी पहाड़ी के अन्दर धूनी जमाये रहता था।

रानी खेत प्राकृतिक दृष्टि से अत्यन्त ही रमणीय स्थल है, जहां का प्राकृतिक सौन्दर्य देखते ही बनता था, जहां लोग दूर-दूर से गर्मियों की छुट्टियां बिताने जाया करते हैं। मैं वहां कुछ दिन रहा, क्योंकि मैं उस गोपनीय एवं दुर्लभ विद्या को प्राप्त कर लेना चाहता था, जिसकी चर्चा मैंने यात्रा के दौरान किसी व्यक्ति के मुंह से सुनी थी, और जिस विद्या के बल पर वह योगी नित्य नये चमत्कार दिखाया करता था।

कई लोगों ने बताया, कि वास्तव में ही वे उड़ते हवाई जहाज को रोक देते हैं। कुछ ने बताया, कि वे उड़ते पक्षियों को जबरदस्ती उतार कर अपने पास बिठा लेते हैं, और जब चाहें उन्हें उड़ा देते हैं। कुछ ने कहा, कि वे जिसे भी अपनी उग्र दृष्टि से देख लेते हैं, वह उसी क्षण भस्म हो जाता है। मैं यह सब बातें सुनकर बड़ा ही आश्चर्यचकित था, और सोचने लगा, कि क्या आंखों में इतनी क्षमता आ सकती है? किन्तु यह सत्य ही था, जो मेरे सामने भी कई बार घटित हुआ।

देखने में तो वह योगी कोई ज्यादा बलशाली दिखाई नहीं देता था, और मुझे तो वह एक सामान्य सा मानव ही प्रतीत हो रहा था, दुबली-पतली काया, सांवला रंग, लम्बी दाढ़ी, नग्न शरीर पर केवल मात्र एक मृगचर्म लपेटे हुए तथा कुछ मालाएं अपने कंठ में हर क्षण धारण किये हुए रहता था, किन्तु उसकी आंखों से हर क्षण एक विशेष प्रकार का तेज दिखाई देता रहता था, जो किसी को भी अपनी ओर आकर्षित होने के लिए बाध्य कर देता था।

मैं उस विद्या को सीखने के लिए कई दिनों तक उनकी सेवा में लगा रहा और अपने दिन-रात सेवा में एक कर दिये, एक बार भी चैन की सांस नहीं ली, मेरी सेवा से प्रसन्न हो उन्होंने एक दिन स्वयं ही उस गूढ़ विद्या का रहस्य मेरे सामने उजागर करते हुए कहा, कि इस साधना को किसी और को मत देना, क्योंकि यह एक दुर्लभ एवं गोपनीय साधना है, जिसे अपने किसी विश्वासपात्र को ही दिया जाना चाहिए।

और तब उन्होंने मुझे उस "हिडिम्बा साधना" का ज्ञान दिया, जिसके माध्यम से इस्पात को भी पिघलाया जा सकता है, और जो एक प्रकार की तांत्रोक्त साधना है, जिसका प्रभाव अचूक एवं तुरंत फलप्रद है।

उन्होंने बताया, कि मानव इस साधना को सम्पन्न कर अपने शत्रुओं पर आसानी से विजय प्राप्त कर सकता है, उन्हें अपने अनुकूल बना सकता है, और किसी को भी अपने वश में कर सकता है।

उन्होंने कहा — **इस "हिडिम्बा साधना" द्वारा आंखों में एक विशेष प्रकार की तीव्रता और अग्नि प्राप्त की जा सकती है, जिसके माध्यम से इस्पात तो क्या इस पृथ्वीतल की उच्चकोटि की धातु को भी पिघलाया जा सकता है, और जब नेत्रों में अग्नि स्फुलिंग आ जाता है, तो आकर्षण भी स्वतः बन जाता है, क्योंकि अग्नि किसी भी पदार्थ या प्रकृति के किसी भी तत्व को अपनी ओर खींचती है।**

यह साधना अपने-आप में ही एक महत्वपूर्ण साधना है, जिसे सिद्ध कर साधारण मानव अपनी सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक सभी प्रकार की परेशानियों एवं उलझनों से आसानी से छुटकारा पा सकता है, और यही नहीं अपितु इसके माध्यम से वह ब्रह्माण्ड में घटित घटनाओं में भी हस्तक्षेप करने में सक्षम हो सकता है।

इस साधना के द्वारा साधक को अपने जीवन में आने वाली विपत्तियों और दुर्घटनाओं का पहले से ही आभास होने लग जाता है, और वह शीघ्र ही उन पर विजय प्राप्त कर लेता है, जिससे कि उसका आगामी जीवन सुखी व समृद्ध बन जाता है, और सूर्य का पूर्ण स्वरूप उसकी आंखों में साकार हो उठता है।

इन सब बातों को सुनकर मैंने उस साधु के बताये अनुसार इस दिव्य साधना को सम्पन्न किया, और तब मुझे ज्ञात हुआ कि यह कितनी अद्भुत एवं आश्चर्यजनक साधना है।

यह पूर्णतः प्रामाणिक साधना है, जो स्वयं मेरी अनुभव की हुई है, और जिसके आश्चर्यजनक एवं चमत्कारिक परिणाम भी मुझे प्राप्त हुए, जिसके आधार पर मैं यह कह सकता हूं कि वास्तव में ही यह एक श्रेष्ठ एवं अद्वितीय साधना है, जिसे सम्पन्न कर व्यक्ति क्षण भर के दृष्टिपात से ही अपने शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम हो सकता है. . . और मैंने ऐसा किया भी।

मैं उस योगी को हृदय से नमन करता हूं, जिसने मुझे ऐसी गोपनीय साधना के बारे में विशेष जानकारी प्रदान की, और

जिसके माध्यम से मैं उस दिव्य एवं अद्भुत साधना को सिद्ध कर अपने जीवन में विजयी हो सका।

वास्तव में हिडिम्बा साधना अपने-आप में एक उच्चकोटि की साधना है, जिसके माध्यम से शत्रुओं पर विजय प्राप्त ही नहीं कर सकते, वरन् किसी को भी अपनी ओर आकर्षित कर, उसे जब तक चाहें अपने वश में कर मनचाहा कार्य सम्पन्न करवा सकते हैं।

यह तंत्र की एक बेजोड़ साधना है, जिसे तिब्बती लामा **''बोंग चू''** ने भी सम्पन्न किया, और इसे सम्पन्न कर उन्होंने लोहे को पिघला कर द्रव कर दिया था। आज भी रानी खेत में २४ किलोमीटर दूर उसी पहाड़ी के नीचे वे योगी विराजमान हैं, जिनसे मुझे यह अद्वितीय साधना प्राप्त हुई, और आज भी लोग उनके दर्शनों के लिए वहां जाते हैं, तथा उनके दर्शन कर अपने-आप को धन्य समझते हैं।

साधना विधि

६ मार्च फाल्गुन शुक्ल पक्ष अष्टमी, गुरुवार की रात्रि को ६ बजे के बाद इस साधना का विशेष मुहूर्त है। प्रत्येक साधक को चाहिए कि वह इस शुभ मुहूर्त पर ही इस साधना को सम्पन्न करे, और यदि किसी कारणवश वह इस दिन इस साधना को सम्पन्न नहीं कर सके तो किसी भी **शुक्रवार की रात्रि** को इस साधना को सम्पन्न किया जा सकता है।

सर्वप्रथम साधकों को चाहिए, कि वे स्नान आदि कर पीली या सफेद किसी भी रंग की धोती धारण कर लें, उसके अतिरिक्त किसी और वस्त्र को धारण करने की आवश्यकता नहीं है।

इसके पश्चात् अपने सामने एक बाजोट रखें और उस पर सफेद रंग का एक नया वस्त्र बिछा दें, फिर **''हिडिम्बा यंत्र''** और **''गुरु यंत्र''** को उस बाजोट पर बिछे सफेद वस्त्र पर स्थापित कर दें, तथा उस यंत्र पर मौली बांध कर पांच कुंकुम की बिन्दियां लगा दें, इसके बाद पांच तेल के दीपक उस यंत्र और चित्र के आगे प्रज्वलित करें। दीपक का मुंह साधक की ओर होना चाहिए, फिर कुंकुम, अक्षत से यंत्र व चित्र का पूजन प्रारम्भ करें, साथ ही एक पुष्पमाला गुरु चित्र पर चढ़ा दें, और इसके पश्चात् उन पांचों दीपों का कुंकुम, अक्षत आदि से मंत्र उच्चारण कर पूजन सम्पन्न करें।

साधक को चाहिए कि वह उन पांचों दीपकों का पूजन इस प्रकार से सम्पन्न करे — पहले दीपक का पूजन करते हुए **''ॐ सूर्याय नमः''** बोलकर कुंकुम व अक्षत उस दीपक पर चढ़ायें, दूसरे दीपक का पूजन करते हुए **'' ॐ तेजस नमः''** बोलें, तीसरे में **''ॐ अग्नि नमः''** बोलें, चौथे में **''ॐ मरुद्गण नमः''** और पांचवें में**''ॐ क्षं नमः''** बोलें, इस प्रकार इस पूजन को सम्पन्न करने के पीछे तात्पर्य यह है, कि वे पांचों देवता उस साधक के शरीर में समाहित हो सकें, और ये दीपक इन्हीं पांचों देवताओं के प्रतीक रूप हैं।

इस पूजन के पश्चात् साधकों को चाहिए कि वह **हिडिम्बा यंत्र** पर त्राटक करते हुए **''हिडिम्बा माला''** से निम्न मंत्र की ५ माला मंत्र जप करें —

मंत्र

ॐ हूं हिडिम्बायै फट्

मंत्र-जप सम्पन्न करने के पश्चात् गुरु आरती करें और प्रसाद परिवार के सभी सदस्यों में वितरित कर माला और यंत्र को किसी नदी या कुंए में विसर्जित कर दें, ध्यान रहे यह माला एवं यंत्र पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं मंत्र-सिद्ध होना आवश्यक है, तभी साधक को इस साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त हो सकती है, अन्यथा नहीं। ❑

भैरवी चक्र

रात काफी गुजर चुकी थी। उस अनजानी जगह में मुझे नींद नहीं आ रही थी। कक्ष में अंधकार था और ऐसा लगने लगा था, जैसे वहां का समूचा अंधकार मेरे हृदय में भी प्रविष्ट हो चुका है। अचानक कंठ सूखने लगा। प्यास ने जब व्याकुल कर दिया, तो मैं उठा। अंधेरे में टटोल कर दीप प्रज्वलित किया। एक कोने में मटका रखा था। मैं धीरे से उठा और मटके से जल निकाल कर पीने लगा, तभी **"छम-छम"** की आवाज ने मुझे चौंका दिया। ऐसा लगा, जैसे कमरे के बाहर कोई स्त्री चल रही है और उसकें नूपुरों की आवाज गूंज रही है। मैं सतर्क होकर दरवाजे की ओर बढ़ा, कपाट खोलकर बाहर झांका, लेकिन बाहर कोई नहीं था, शायद मेरा भ्रम था। मैं लौटा, और जलते हुए दीप के सामने आसन लगाकर बैठ गया मन ही मन भगवान "आशुतोष" को स्मरण करने लगा। आंखें बंद थीं। मेरी चेतना किसी चंचल खग की तरह उड़ने लगी, किसी घोंसले की तलाश में . . .

"छम-छम"! फिर वही नुपूरों की आवाज़! अब यह आवाज कक्ष के भीतर आई थी। मैंने आंखें खोली— देखा, कमरे में कोई नहीं था, तो फिर कैसा था वह विभ्रम। नहीं, विभ्रम नहीं! मैं सचेत था। एक क्षण दीपक की लौ पर दृष्टि पड़ी, फिर मैंने पलकें बन्द कर लीं, किन्तु कुछ पलों के बाद फिर वही नूपुरों की आवाज गूंजी। अब तो एकदम ही आश्चर्यचकित होकर मैंने आंखें खोलीं। दीपक की लौ पर ही मेरी दृष्टि थी। हां, उस लौ में एक परिवर्तन आ गया था। पहले उसका रंग पीला था और अब उसमें कुछ नीलापन आ गया था।

मैं देखता रहा, बिलकुल स्थिर दृष्टि से! दीपक की लौ का नीलापन प्रगाढ़ होता जा रहा था, फिर दूसरे ही क्षण उस **"लौ"** में एक नारी की आकृति उभरने लगी। पहले धुंधली, फिर वह आकृति स्पष्टतर होती गई। मेरे देखते ही देखते वह आकृति दीपक की लौ से पृथक हो गई। अब उस आकृति का विस्तार होने लगा। कुछ ही पलों में उस आकृति ने सम्पूर्ण नारी का रूप धारण कर लिया।

नारी का ऐसा पार्थिव सौन्दर्य मैंने कहीं नहीं देखा था। वह किसी दिव्य लोक से अवतरित प्रतीत हो रही थी। उन्नत ललाट, जिस पर सिन्दूरी टीका— नवल क्षितिज पर जैसे सूर्य-विंब हो। आंखों में सम्मोहन और अधरों पर वह मुस्कान . . . कोमल किसलय पर थिरकती रक्तिम किरण की तरह। उसके गोरे शरीर पर परिधान के नाम पर सिर्फ चीते की खाल थी। गले में छोटे-छोटे शंखों की माला . . . और नितम्बों तक झूलती वेणी थी, जो श्वेत फूलों से सज्जित थी।

". . . लो, तांत्रिक, देख लो मुझे!. . . मैं हूं तुम्हारी भैरवी! तुम मुझे ही खोजने आए हो और मैं तुम्हें शताब्दियों से खोज रही हूं।" उस नारी ने कहा और अपनी भुजाएं पसार दीं। मैं जैसे किसी चुम्बकीय शक्ति से खिंचा- सा उन कोमल भुजाओं के बीच समा गया।

चेतना के विविध आयाम होते हैं। केवल प्राणी जगत में ही चेतना नहीं होती, वनस्पति जगत और जड़ जगत में भी चेतना की परिव्याप्ति होती है। सम्पूर्ण सृष्टि ही चेतना का इतिहास है, चेतना को धारण करने वाली आत्मा है और आत्माओं को धारण करने वाली परमात्मा-सत्ता है। शरीर के रूप में आत्माएं जन्म लेती हैं और कर्म विपाक के अनुसार अपनी जीवन-यात्राएं तय करती हैं। आत्मा की सम्पूर्ण जीवन यात्रा में चेतना के विविध आयाम प्रकट होते हैं।

उपनिषदों में जीव की चार अवस्थाओं का उल्लेख किया गया है— जाग्रत अवस्था, स्वप्नावस्था, सुसुप्तावस्था और तुरीयावस्था। यदि हम गंभीरता से विश्लेषण करें, तो इन चारों अवस्थाओं के और भी अनेक रूप हो सकते हैं। जाग्रत अवस्था के अन्तर्गत जीवन के अंतर्परिवेशों में जब सतोगुण का आवेश होता है, तब प्राणी में क्षमा, दया, करुणा जैसे उदात्त भावों का

उन्मेष होता है। जब तमोगुण का उन्मेष होता है, तब हिंसा, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकारों से चेतना विकृत हो जाती है। रजोगुण के प्रभाव से जीवन में कर्म और भोग की प्रवृत्तियां उत्पन्न होती हैं।

भारतीय दर्शन में आत्मा को पंचकोशों में आवेष्ठित भी बताया गया है। पंचकोश हैं– अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश और आनन्दमय कोश। एक-एक कोश सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होता चला गया है। अन्नमय कोश पार्थिव शरीर का पर्याय है। शरीर से अधिक सूक्ष्म प्राण, प्राण से अधिक सूक्ष्म मन, मन से अधिक सूक्ष्म ज्ञान और ज्ञान से भी अधिक सूक्ष्म आत्मा होती है। **''आनन्द''** आत्मा का प्रधान गुण है। योग की साधना करने वाले अपनी साधना के उत्तरोत्तर विकास के साथ ही, अपनी चेतना को उक्त पंचकोशों में संचरित होते हुए अनुभव कर सकते हैं। समाधि में क्या होता है? योगी की चेतना ''अन्न'' (स्थूल) को छोड़कर ''प्राण'' (वायु) में चली जाती है। एक प्रकार से यह अमरता की स्थिति होती है। ''प्राण'' के स्तर पर रहने वाले योगी का शरीर नष्ट भी हो जाए, तो भी वह संकल्प मात्र से पुनः अन्नमय कोश में अवतरित हो सकता है।

प्रस्तुत सत्य-कथा के आरम्भ में जिस घटना का वर्णन किया गया है– वह वास्तव में भैरवी का प्राणमय कोश से अन्नमय कोश में पुनः प्राकट्य था। मैं उन दिनों **''श्री शैलम्''** की यात्रा पर था। ''श्री शैलम्'' को ''मल्लिकार्जुन'' के नाम से भी जाना जाता है। यह द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है। मध्य प्रदेश की पश्चिमी सीमा जहां आंध्र प्रदेश से लगती है, ''श्री शैलम् तीर्थ'' वहीं स्थित है। यहां से दस किलोमीटर दूर ''पाताल-गंगा'' एवम् ''भद्राचलम् तीर्थ'' हैं।

चारों ओर ऊंचे-ऊंचे पर्वत और इनके बीच लहराती हुई ''पाताल-गंगा''। हरिद्वार में भागीरथ-गंगा का जो वेग है, उससे भी कहीं अधिक तीव्र प्रवाह यहां पाताल-गंगा में है। जंगली लता-गुल्मों और बिल्व के सहस्रों वृक्षों से यह वनांचल आच्छादित है। यत्र-तत्र झरनों के कल-कल नाद और विभिन्न पक्षियों की चहचहाहट से यहां का मनोरम वातावरण गूंजता रहता है।

मैंने ''द्वादश ज्योतिर्लिंगों'' और ''इक्यावन शक्तिपीठों'' की यात्रा का संकल्प लिया था। मैं जब ''मल्किार्जुन'' पहुंचा तो रात हो चुकी थी। मेरा पहला काम था भगवान आशुतोष के दरबार में अपनी हाजिरी देना। ''मल्लिकार्जुन'' का शिवलिंग बड़ा ही भव्य और मन को मोहने वाला है। पूजनोपरांत मंदिर से बाहर निकला तो भूख सताने लगी, किन्तु भोजन की व्यवस्था नहीं हो सकी। थका-हारा मंदिर के पास ही स्थित एक जीर्ण-शीर्ण धर्मशाला के कक्ष में विश्राम करने लगा, वह भैरवी तभी मेरे सामने प्रकट हुई थी।

दूसरे दिन प्रातःकाल स्नान के बाद जब मैं मंदिर पहुंचा, तो नदी की प्रतिमा के पास एक आठ-दस साल की बालिका अकेली बैठी मिली। पूजा के बाद जब मैं बाहर आ रहा था, तो उस बालिका ने मुझे पुकारा– ''ऐ! इधर आओ।''

मैं उसके पास पहुंचा तो देखा, वह एक रेशमी पोटली खोल रही थी। बोली– ''तुम भूखे हो ना? लो, खाओ!'' ''पोटली में कुछ फल और मिठाइयां थी।

मैं आश्चर्यचकित था कि इस वीरान जंगल में यह कौन बालिका है, जो मेरे अंतर्मन की बात समझकर मुझे खाद्य पदार्थ दे रही है। मैं फल और मिठाई उसके हाथ से लेकर खाने लगा। नदी के सामने स्थित कुंड से जल पी रहा था, कि उसने पूछा– ''क्यों, बहुत भूख लगी थी?''

हां! मैंने धीरे से कहा– ''तुम कौन हो?'

उसकी आंखों में एक अजीब सी चपलता उभरी– ''क्यों? मुझे पहचाना नहीं? मैं, तो हूं वही . . . भूल गए रात की बात!!''

मैं जैसे आसमान से गिरा! वह मुस्कराई और नदी की प्रतिमा के पीछे जाकर मेरे देखते ही देखते अदृश्य हो गई।

''श्री शैलम्'' के मंदिर के आस-पास के जंगलों में भ्रमण करते हुए मैं संयोग वश उस स्थान पर जा पहुंचा था, जहां विशाल चट्टानों के बीच एक छोटा-सा पोखर बन गया था। पोखर के तट पर ही किसी की समाधि बनी थी, समाधि के पास ही लताओं से आच्छादित एक शिलाचित्र देखने को मिल गया। **चट्टान पर रक्तिम वर्ण से किसी नारी की आकृति उत्कीर्ण की गई थी। आस-पास के गांव वाले शायद उस शिलाचित्र की पूजा करते थे, तभी तो शिलाचित्र पर सिंदूर, गुलाल आदि की छाप थी, बुझे हुए दीप और सूखे फूलों की पंखुड़ियां पड़ी थीं।**

मैंने शिलाचित्र को ध्यान से देखा, तो चौंक पड़ा. . .

– ''अरे, यह तो उसी का चित्र है।''

मैंने चारों ओर दृष्टि फैलायी, दूर पगडंडियों से एक बूढ़ा जाता हुआ दिखाई पड़ा। मैंने आवाज दी, तो वह मुड़कर मेरे नजदीक आया। मैं उस समाधि और शिलाचित्र के बारे में कुछ जान लेना चाहता था, किन्तु उसकी भाषा (ग्रामीण तेलगु) को समझ पाना मुश्किल था। संकेतों से बात करने की, चेष्टा की और जो आशय निकला, वह यह था– **कि समाधि ''श्री शैलम् तंत्रपीठ'' की किसी पुजारिन की थी।** उसने वहीं पोखर में जीवित जल-समाधि ले ली थी, वह बड़ी जादूगरनी थी, हवा में उड़ती थी और अंतर्ध्यान हो जाती थी।

चेतना के अनेक सोपानों में सुसुप्तावस्था का बड़ा महत्व होता है। जागरण और प्रसुप्ति के बीच एक स्थिति आती है– जिसे ''स्वप्नावस्था'' कहते हैं। स्वप्नों को देखने के बाद ही शायद

आदि-मानव ने यह कल्पना की होगी, कि जब हम गहरी नींद में होते हैं, तब आत्मा शरीर छोड़कर बाहर निकल जाती है और लोक-लोकान्तरों का भ्रमण करती है। आदि मानव की इस अवधारणा की पुष्टि अनेक परा-मनोविद् भी करते हैं। मेरी अपनी धारण है कि **सुसुप्तावस्था में जब आत्मा की आभ्यांतरिक चेतना स्फुटित होती है, तब स्वप्नलोक का निर्माण होता है, तब आत्मा की सम्पूर्ण सृजन-क्षमता प्रकट होती है।** वहां कोई वर्जना नहीं, कोई निषेध नहीं, भावना मात्र से ही आत्मा की सृष्टि हो जाती है। ठीक उसी तरह, जैसा कि पुराण कथाओं में कहा जाता है— भगवान विष्णु तो सतत् निद्रा में लीन रहते हैं, किन्तु सृजन और विनाश के कार्य चलते रहते हैं। यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड भगवान विष्णु के स्वप्नों का अंतरजाल है। शंकराचार्य का अद्वैत दर्शन जिसे ''माया-तत्व'' की संज्ञा देते हैं, वह यही तो है।

मैं शंकराचार्य के ''माया-तत्व'' पर सोच रहा था। हां, माया असत्य तो है, परन्तु संवेदनाओं की कहानी भी तो झूठी नहीं हो सकती। काया को अनुभव करने वाली संवेदनाएं उसे भी सत्य मानती हैं सांख्य-मत से, तब तो दोनों ही सत्य हैं— प्रकृति भी और पुरुष भी।

यही सब सोचते हुए मैं न जाने कब सो गया। मैं शायद गहरी नींद में था या स्वप्न देख रहा था। मुझे लगा कि कोई दरवाजे को खटखटा रहा है। मैं उठा, उठकर दरवाजा खोला— वहां कोई नहीं था, बस गहरा अंधकार था, फिर हवा में एक ओर से तैरती हुई भीनी गंध आई। मैं पीछे मुड़कर दरवाजा बंद करने की इच्छा करने लगा, किन्तु ''छम्म'' से वह सुंदरी वहां प्रकट हुई और कक्ष में प्रविष्ट हो गई, उसने मुझे एक ओर हटाते हुए स्वयं ही दरवाजा बंद कर दिया।

''बालमुकुन्द! तुम यहां क्यों आये? बस, अब तुम यहां से चले जाओ।'' —उसने कहा। मैं फर्श पर बैठ गया था।

''. . . तुम मुझे पुंश्चली समझते होंगे, लेकिन सावधान, मैं सिद्ध भैरवी हूं। मैं यहां तांत्रिकों को दर्शन देती हूं, सिर्फ इसलिए कि कोई मुझे ''भैरवी-चक्र'' का रहस्य समझा दे।''

''तुम नहीं जानतीं।''

''नहीं!'' मैं तो एक असहाय सी नारी थी, यहां पास ही के एक गांव में रहती थी। बाल्यावस्था में ही मुझे देवदासी बना दिया गया था। मैं युवा हुई तो भोग-विलास की वस्तु बना दी गई। देवता को समर्पित मेरी देह, उसके सभी पुजारियों को प्रसाद की तरह वितरित होती थी। तुम कल्पना कर सकते हो, मैं कितने संत्रास में थी, फिर वर्षों बाद मुझे एक तांत्रिक ने कुछ साधनाएं सिखलाईं और समाधि की दीक्षा दी।''

''तुम मुझसे क्या चाहती हो देवी?'' मैंने पूछा था।

''रहस्य का ज्ञान दीजिए गुरुदेव।''. . . वह एकदम ही विनम्र हो गई।''

''वह भी तो अंततः मोक्ष का ही एक विधान है देवी। ''भैरवी-चक्र'' में साधक और साधिका को सतत् ही यह ध्यान रखना चाहिए, कि शरीर और आत्मा के बीच संवेदना का जो सेतु है, वह कभी दूषित नहीं होना चाहिए, जिस अवस्था में हम परम शांत और निर्मल ब्रह्म की चेतना का अनुभव करते हैं, वह वास्तव में सृष्टि का मूल है।''

मैं उस समय एकदम गंभीर था। उसकी छितराई अलकों में गूंथे फूलों की गंध मुझे अशांत सी करती थी, किन्तु उस समय मर्यादा का आंचल मुझसे नहीं छूटा था, वह लुढ़क कर मेरी गोद में आ गिरी। एक ऐसा सम्मोहन, जिसे निवृत्त करना असम्भव हो!

''भैरवी-चक्र से मोहन-वशीकरण भी सिद्ध होते हैं?'' —उसने पूछा था।

''क्यों नहीं?. . . अवश्य! . . . सर्वार्थ सिद्ध हो सकते हैं. . . यहां तक कि मारण भी।'' मैं न जाने किस प्रवाह में कह गया। मेरा सिर उसकी ओर झुकने लगा। मेरी आंखों में, हृदय में एक प्यास थी।''

चेतना की चरम अवस्था समाधि है, सृष्टि की परम सत्ता इसमें बिलकुल हमारे सामने होती है। आनन्द का ऐसा स्रोत सा प्रस्रवित होता है, कि इस अवस्था से चेतना प्रत्यावर्तित नहीं होना चाहती, किन्तु सिद्ध पुरुषों को भी कर्म-विपाक के कारण माया के साम्राज्य में फिर-फिर कर लौटना पड़ता है। मैं उस दिन जब भगवान आशुतोष के सामने उपस्थित हुआ, तो क्षमा के लिए मेरा सिर झुक गया था। भैरवी ने मेरी वर्षों की तपस्या का हरण कर लिया था। मेरा पूरा अस्तित्व उस रात्रि जब कक्ष में उसके अस्तित्व में डूबा जा रहा था, आत्मलीन की उस समाधि अवस्था में वह मुझे अपने आवेश में खींचकर उस पोखर तक ले गई। **मैं उसके साथ पोखर में जल-समाधि में था। यह तो भगवान आशुतोष की कृपा थी कि मंदिर से एक पुजारी ने प्रातःकाल ही मुझे पोखर में देख लिया और मुझे वहां से निकाल कर मंदिर में ले आए थे। मैं सम्भवतः मृत समझ लिया गया था,** किन्तु जब मेरी चेतना शरीर में लौटी, तो उस समय मंदिर में पूजा समाप्त हो चुकी थी, और सभी मुझे आश्चर्य से देख रहे थे। प्रकृतिस्थ होने में तीन घण्टे से भी अधिक समय लगा। जल-समाधि का अभ्यास नहीं होने के कारण मेरे मस्तिष्क में सुन्नता थी और हृदय की धड़कनें एकदम शांत। किसी पंडित के ''आदित्य हृदयम्!'' पाठ से ही मेरे शरीर का जीवन अपनी भूमि में लौट सका था।

प्रस्तुति : श्री विजय कुमार शर्मा

कौस्तुभ जयन्ती

कस्तूरी की तरह महक एवं पुलक से भरा महोत्सव

21 अप्रैल 1995

इलाहाबाद

पूज्य गुरुदेव का षष्ठी पूर्ति महोत्सव

: ध्यान रखें :

कुछ अवांछनीय तत्व **२१ अप्रैल शिविर का आयोजन अपने क्षेत्र में हो रहा है** कह कर शिविर के नाम पर लोगों से धन एकत्र कर रहे हैं। जबकि २१ अप्रैल के शिविर का आयोजन इलाहाबाद में करने की अनुमति पूज्य गुरुदेव ने पानीपत शिविर में दी थी। अतः समस्त पाठकों, साधकों एवं शिष्यों का यह कर्त्तव्य बनता है कि इस प्रकार के व्यक्तियों की बातों में न आयें और न ही उन्हें किसी भी प्रकार का आर्थिक सहयोग प्रदान करें, यदि कुछ लोगों ने ऐसे तत्वों को धन - राशि दे दी हो तो उन्हें पूर्ण अधिकार है कि वे अपना सहयोग वापिस ले लें, क्योंकि इस प्रकार से एकत्र की गयी धन राशि का उपयोग वे अपने व्यक्तिगत कार्य के लिए करते हैं, इससे संस्था का किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है।

– व्यवस्थापक

इस जयन्ती पर सम्पन्न कराये जायेंगे, जीवन को समृद्ध बनाने के लिए प्रयोग

- **आकाश गामी प्रयोग**
- **छठी इन्द्रीय जागरण प्रयोग**
- **तृतीय नेत्र उत्थापन प्रयोग**
- **प्रत्यक्ष सिद्धाश्रम प्रवेश प्रयोग**
- **गुरु संग गमन सिद्धाश्रम**
- **पूर्ण मदः प्रयोग**

इन प्रयोगों के द्वारा आप अपने जीवन के समस्त बाधाओं को समाप्त कर ऐसी अद्वितीय शक्ति के स्वामी बन सकते हैं, जिसके द्वारा असम्भव भी सम्भव बनाया जा सकता है। छठी इन्द्रिय जागरण एक ऐसा ही दुर्लभ प्रयोग है, जिसके द्वारा विश्व के किसी भी कोने में घट रही घटना का अहसास हो जाता है। इसके साथ ही तृतीय नेत्र उत्थापन प्रयोग सम्पन्न कर लिया जाए तो साधक द्वारा भूत, भविष्य या वर्तमान किसी भी काल की घटना को देखने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है।

और फिर प्रदान की जायेगी – ''ऊर्ध्वपात दीक्षा''

ऐसी दीक्षा, जो वर्षों की कठोर साधना के बाद प्राप्त होती थी संन्यासियों को, जब गुरु प्रसन्न होते थे, उन्हीं दीक्षाओं को पूर्ण तेजस्विता से पूज्य गुरुदेव अब गृहस्थ शिष्यों को प्रदान करने जा रहे हैं। **बहुत ही सीमित संख्या में यह दीक्षा दी जायेगी।** अनेक दुर्लभ अवसरों को प्रदान करती यह जयन्ती आपके जीवन का महोभाव . . . अहोभाव . . . दिव्यभाव . . . है।

शिविर शुल्क - ६६०/-

: सम्पर्क :

श्री एस. के. बनर्जी, आनन्द होम्यो हॉल, रिकॉब गंज, फैजाबाद, उ. प्र., फोन : (0527) 812595, 814052

श्री एस. के. मिश्रा, 317, मधवापुर, इलाहाबाद, उ. प्र.

श्री सी. डी. शर्मा, B-395, इन्द्रा नगर, लखनऊ (उ. प्र.), फोन : 0522-383900

श्री एस. सी. कालरा, फोन : 0536-7216,7237

जब चारों ओर ओस की बूंदे पत्तों पर मोती की तरह दिखाई दे रही थीं, जब चारों ओर धुंध छाई हुई थी और ठंडी शीतल पवन मन को आह्लादित कर रही थी, तभी उस सुनहरे वातावरण के बीच एक प्रकाश सा चमकता हुआ दिखाई पड़ा, पास आने पर अनुभव हुआ, कि यह तो एक शिला पर कोई साधु अपनी साधना में लीन कुछ मंत्र अपने होठों से बुदबुदा रहा है, और एक प्रकार की विचित्र आभा सी उसके चारों ओर बिखरी हुई है, दिखने में वह बड़ा तेजस्वी एवं पराक्रमी दिखाई दे रहा था, **उन्हें देखकर तो कोई भी अपनी सुध-बुध खो बैठे, एक अद्भुत सौन्दर्य जो आंखों को मोहित कर रहा था, वे थे एक उच्चकोटि के योगी "स्वामी श्रेयानन्द जी"**, जिन्होंने अपने जीवन काल में अनेक दुर्लभ तांत्रिक साधनाएं सिद्ध कर रखी थीं और उन्हीं साधनाओं के बल पर ही उनका सौन्दर्य इतना अद्भुत और अद्वितीय बन सका।

उन्हीं से प्राप्त उस दिव्य साधना को यहां विवेचित किया जा रहा है, जो कि अपने-आप में श्रेष्ठ एवं अद्वितीय साधना है, और ज़िसे सिद्ध कर साधक एक प्रकार के आकर्षण को अपने पूरे शरीर में समाहित कर लेता है।

उन्होंने बताया कि – **त्रिलोचना एक ऐसी देवी है, जिसकी देहकान्ति बाल सूर्य के समान है, और देह का वर्ण सिन्दूर के समान अरुण है, सौन्दर्य का साकार पुञ्ज है वह। इस देवी की यदि कृपा-दृष्टि किसी साधक पर हो जाती है, तो वह उसे सम्पूर्ण सौन्दर्यशाली बना देती है,** जिसे देखकर कोई भी स्तम्भित खड़ा रह जाए, फिर कौन नहीं चाहेगा ऐसी श्रेष्ठ साधना को सिद्ध करना, कौन नहीं चाहेगा कि उसके चेहरे पर ओज न हो, तेज न हो. . . कुछ ऐसा हो जिसे देखकर कोई भी अपनी सुध-बुध खो बैठे, और बाध्य हो जाए टकटकी लगाकर देख लेने को, उसे छू लेने को, उसे पा लेने को, उसमें समाहित हो जाने को. . . ऐसे सौन्दर्य को, ऐसे प्रभावयुक्त व्यक्तित्व को, ऐसे आकर्षण को प्राप्त करने के लिए तो सभी उत्सुक रहते हैं, और साधारण मानव ही नहीं अपितु अप्सराएं एवं गन्धर्व भी ऐसी आकर्षण युक्त देह की प्राप्ति के लिए सर्वथा लालायित रहती हैं।

. . . और त्रिलोचना ऐसी ही देवी हैं, जो अपने भक्त एवं साधक पर प्रसन्न हो उसे ऐसी देह, ऐसा व्यक्तित्व प्रदान कर देती हैं, जो दूसरों को बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

त्रिलोचना आकर्षण एक तांत्रोक्त प्रयोग है, जो प्रथम बार इस पत्रिका में पाठकों एवं साधकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है, और जिसकी "त्रिपुरा तंत्र" तथा "भूत डामर" में विस्तृत रूप से विवेचना की गई है, जो कि अत्यन्त ही महत्वपूर्ण एवं दुर्लभ प्रयोग है, और जिसको सम्पन्न करने से व्यक्ति का कायाकल्प तक हो जाता है।

इस श्रेष्ठ प्रयोग को सम्पन्न करने पर निम्न लाभ साधक को प्राप्त होते ही हैं-

१. यदि किसी स्त्री का पति दूसरी स्त्री के चक्कर में हो, तो इसे सम्पन्न कर उसे अपनी ओर आकर्षित किया जा सकता है।

२. कैसा भी रूग्ण शरीर हो, उसे पूर्ण रूप से स्वस्थ

किया जा सकता है।

३. कमजोर व वृद्ध व्यक्ति भी इसे सम्पन्न कर पुनः यौवनवान बन सकता है।
४. इस प्रयोग को सम्पन्न कर किसी को भी अपने वश में किया जा सकता है।
५. इस प्रयोग द्वारा साधक सुन्दर, बलशाली, पराक्रमी, और तेजस्वी व्यक्तित्व प्राप्त कर लेता है।
६. इस प्रयोग को करने से उसके मन में किसी भी प्रकार की कोई हीन भावना नहीं रह जाती है।
७. यह आत्म विश्वास को बढ़ावा देने वाला महत्वपूर्ण प्रयोग है।
८. जिस स्त्री को प्राप्त करने की चाह साधक के मन में हो, यह प्रयोग सम्पन्न कर लेने पर वह स्वतः ही आकर्षित होकर उसके समक्ष उपस्थित हो जाती है।
९. इसे सम्पन्न करने पर वह जिस किसी भी व्यक्ति से चाहे अपनी बात आसानी से मनवा सकता है, और वह जो भी कहता है लोग उसी को सही मान बैठते हैं।
१०. इसे सम्पन्न कर मन चाहा कार्य सिद्ध किया जा सकता है।
११. साधक जब इस प्रयोग को सिद्ध कर लेता है, तो उसके शरीर के चारों ओर एक प्रकार की आभा सी दिखाई देने लगती है।
१२. यह एक अद्भुत एवं गोपनीय प्रयोग है, जिसे सम्पन्न करने पर इसके परिणाम स्वतः ही साधक को अनुभव होने लगते हैं, किसी को भी वश में करने का अचूक प्रयोग है यह।

इस दिव्य साधना के प्रभाव से जब रम्भा, और उर्वशी को भी आकृष्ट किया जा सकता है तो फिर मनुष्य के आकर्षण में क्या आश्चर्य !

यह ऐसा ही श्रेष्ठ एवं आश्चर्य- चकित कर देने वाला प्रयोग है, जिसे प्रत्येक साधक को सम्पन्न करना ही चाहिए, और पुरुषों की अपेक्षा यदि स्त्री इस प्रयोग को सम्पन्न कर ले तो वह पूर्ण यौवनवान, आकर्षित एवं सम्मोहित कर देने वाला सौन्दर्य प्राप्त कर लेती है, फिर उसके सारे शरीर में यौवन का ऐसा सागर लहराने लगता है कि उसे देखकर कोई भी पुरुष अपने-आपे में नहीं रह पाता, फिर वह एक बार भी यदि किसी को पलक उठा कर देख ले तो वह उससे प्रभावित व आकर्षित हुए बगैर नहीं रह पाता।

इस प्रकार इस दुर्लभ साधना को कोई भी स्त्री या पुरुष सम्पन्न कर सकता है। यह अपने- आप में ही एक अद्वितीय एवं श्रेष्ठ साधना है। यह अपने-आप में एक चमत्कारिक प्रयोग है, जिसे साधक को फाल्गुन शुक्ल पक्ष पंचमी, **दिनांक ६ मार्च ९५** को सम्पन्न करना चाहिए, यदि

? क्या आप में आत्म विश्वास की कमी है
? क्या आपका इच्छित कार्य पूरा नहीं होता है
? क्या आपका पति किसी और के प्रति अनुरक्त है
? क्या आपके व्यक्तित्व से सामने वाला प्रभावित नहीं हो पाता
इन्हीं प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत है . . .

किसी कारणवश वह इस दिन यह प्रयोग सम्पन्न न कर सके, तो किसी भी शुक्रवार के दिन इस प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है।

साधना विधि

साधक को चाहिए कि वह ब्रह्म मुहूर्त में उठकर या फिर मध्य रात्रि को इस साधना को सम्पन्न करे। वह स्नान आदि से निवृत्त होकर सफेद रंग की धोती पहिन कर, तथा सूती अथवा ऊनी सफेद आसन पर उत्तराभिमुख होकर सुखासन में बैठ जाए। फिर अपने सामने पूजा गृह में **''त्रिलोचना आकर्षण यंत्र''** और **''सम्मोहन गुटिका''** को एक लकड़ी के बाजोट पर स्थापित कर दें। इसके पश्चात साधक गुरु पूजन, यंत्र पूजन तथा सम्मोहन गुटिका का पूजन धूप, दीप, कुंकुम आदि से करें, तथा पुष्प चढ़ाकर नैवेद्य आदि का भोग लगायें।

इसके पश्चात साधक तीन बार ''ॐ'' का उच्चारण कर गुरु ध्यान सम्पन्न करें तथा अपनी इच्छानुसार गुरु मंत्र जप सम्पन्न करें। इसके बाद गुरुदेव से मन ही मन साधना में पूर्णता प्राप्त करने के लिए प्रार्थना कर उनका आशीर्वाद ग्रहण करें, और तब **''त्रिलोचना माला''** से ११ माला निम्न मंत्र का जप सम्पन्न करें—

मंत्र

ॐ हूं आकर्षण वशीकरणाय फट्

मंत्र-जप सम्पन्न करने के पश्चात् गुरु आरती सम्पन्न कर पूरे परिवार में भोग वितरित करें, और साधना काल में भूमि शयन करें तथा कम से कम बात करें।

इस साधना को सम्पन्न करने के पश्चात उस यंत्र, गुटिका तथा माला को नदी अथवा तालाब में विसर्जित कर दें। यह विसर्जित करने की क्रिया साधना सम्पन्न करने के दूसरे दिन करें। ❑

अष्ट नागिनी तंत्र

"

भौतिक व रासायनिक क्षेत्रों में उन्नति की चरम सीमा पर पहुंचने के बाद भी आधुनिक विज्ञान अध्यात्म के परिपेक्ष्य में अभी पंगु ही रहा है। रहस्यवाद के क्षेत्र में तो उसे अभी प्रवेश द्वार ही नहीं मिला है। सूक्ष्म जगत के अनोखे संसार में जो व्यक्तित्व सम्पूर्ण जीवन ही खपा देते हैं, वे भी सृष्टि के अनन्त रहस्यों को उजागर करने में सफल नहीं हो पाते।

सृष्टि के गर्भ में समाया हुआ ऐसा ही एक रहस्य है विलक्षण इच्छाधारी नागों का, जिनकी परम गोपनीय साधना का अत्यंत रोचक विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं स्वामी अमृतानंद. . .
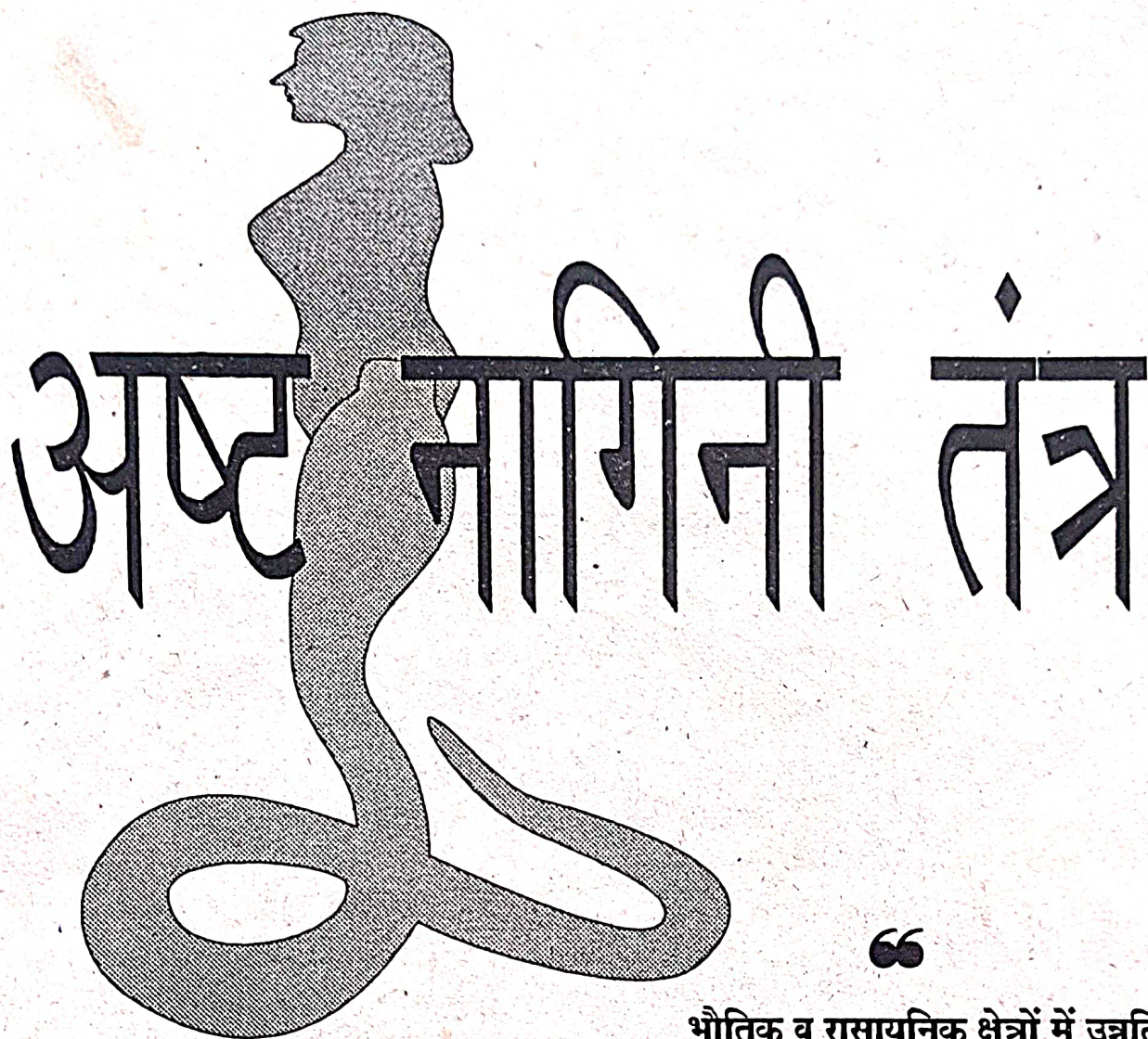
यायावर जीवन का यही लाभ है। सुअवसर प्राप्त होते ही परमपूज्य गुरुदेव की अनुमति कर भ्रमण पर निकल पड़ता और इसी क्रम में उन महान सिद्धों और योगियों के साहचर्य का सौभाग्य भी मुझे मिल जाता, जो भारत-भूमि को अपने तपः पुञ्ज और ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करते हुए स्वयं को एकान्त में छुपाए साधनारत हैं।

घटना मेरे काशी प्रवास की है। विगत तीन माह से काशी के गोपनीय सिद्ध स्थलों पर निवास कर, मैं कुछ उच्चकोटि की साधनाओं में निष्णात होने के लिए कृतसंकल्प था। यह गुरुदेव जी की कृपा-वृष्टि ही थी, जो इस अपरिचित क्षेत्र में साधनारत

होते हुए मुझे अभी तक किसी व्याघात का सामना नहीं करना पड़ा था। नित्यप्रति प्रातः बेला में गंगा स्नान कर बाबा विश्वनाथ का दर्शन करना और पंचगंगा घाट स्थित अपने निवास पर लौटकर कुछ समय ध्यानावस्थित रहना, मेरी दिनचर्या का अभिन्न अंग बन चुका था।

सर्पों से घिरा वह भीमकाय अघोरी

ग्रीष्म ऋतु का सूर्य अपनी पूर्ण प्रखरता लिए हुए आकाश में चमक रहा था। ब्रह्म घाट के निकट तप्त रेत अग्नि कणों के समान जल रही थी, दूर-दूर तक किसी परिन्दे का भी नामोनिशान नहीं था। दहकते पाषाण खंडों पर सावधानी से पांव रखता हुआ मैं गंतव्य घाट की ओर गतिशील हुआ ही था, कि एक विचित्र सा दृश्य सामने आ पड़ा। उसी अंगारवत रेत की शैया पर एक भीषण अघोर काया सुखनिन्द्रा में तल्लीन थी। वैसे तो इसके पूर्व भी मैं काशी में अनेक हठयोगियों की विचित्र क्रियाओं का साक्षीभूत रह चुका था, पर यह अघोरी कुछ अनोखा ही प्रतीत हुआ। इसलिए कि वह अकेला नहीं था, बल्कि उसके चतुर्दिक कुछ विषैले नाग बिखरे हुए थे, जो अपने फन उठाकर कदाचित सूर्य की प्रचण्ड किरणों को अवरुद्ध कर रहे थे।

"यह रूपवती नाग कन्या मेरी आज्ञाकारिणी सेविका है। साधना से मैंने उसे वशीभूत कर रखा है, उस लोक के अन्य सर्प भी मेरे अनुचर ही हैं"- अघोरी अत्यंत निश्चिंतता से अपने सुख-ऐश्वर्य का बखान कर रहा था।

क्षण भर को एक सिहरन मेरे शरीर में व्याप्त हुई, पर शीघ्र ही स्वंय को संयमित कर मैं पंचगंगा घाट की ओर बढ़ चला। तैलंग स्वामी के मठ में पहुंचने के बाद भी वह दृश्य बारम्बार मेरे मानस को उद्वेलित करता ही रहा, और अन्ततः गहन निशा में पुनः उसी स्थान पर जाने को मेरा मन मचल उठा। जैसे कोई अदृश्य शक्ति बराबर मुझे खींच रही हो, और दबे पांव आश्रम से बाहर निकलकर मैं त्वरित गति से गंगा की ओर बढ़ चला।

काशी के प्रसिद्ध श्मशान मणिकर्णिका घाट से गुजरते हुए कई अघोरियों से सामना हुआ, जगह-जगह चिताएं जल रही थीं, चड़ड़-चड़ड़ की आवाज के साथ मृत मानव देह के अवयव अग्नि में तिरोहित होकर वातावरण को अजीब गंध से भर रहे थे। क्षुद्र मानव देह की निस्सारता का बोध कराते हुए कई अघोरी वामाचार साधना में लीन थे, तो कुछ श्मशान जागरण प्रयोग सम्पन्न कर रहे थे, पर इन सबसे बेखबर मैं ब्रह्मघाट पर उसी अघोरी की झलक देखने को व्याकुल हो रहा था।

अपने अनुमानित स्थल पर उस भीमकाय अघोरी को ज्यों का त्यों पड़ा देखकर मेरी आंखें प्रसन्नता से चमक उठीं। उसकी अलमस्त मुद्रा उसकी सम्पूर्ण स्पृह अवस्था का सूचक लग रही थी, पर इसके पूर्व कि मैं उसके सन्निकट पहुंचूं, एक विशालकाय नागराज ने मेरा मार्ग अवरुद्ध कर दिया, उसकी भयावह फुंफकार से चौंककर ज्योंही मैंने सिर उठाया, कि उसके मस्तक पर सुशोभित दिव्य मणि पर मेरी दृष्टि स्थिर हो गई। जीवन में पहली बार किसी मणिधारी सर्प के दर्शन मुझे हुए थे, और मैं मन ही मन गुरु मंत्र स्मरण करता हुआ, उस यमदूत के समक्ष अविचलित भाव से खड़ा था।

निरूपाय और पराजित सा वह नागराज पीछे की ओर लौट पड़ा, और इसके साथ ही अघोरी की स्नेहसिक्त वाणी मेरे कानों में ध्वनित हुई--" **आखिर तुम आ ही गए। तुम्हारी प्रतीक्षा में ही मैं यहां लेटा था।** " कुछ अचम्भित सा होकर मैं पास पहुंचा और गुरुदेव के संन्यासी शिष्य के रूप में उसे अपना परिचय दिया ही था, कि प्रसन्नता के अतिरेक में वह अघोरी उठकर बैठ गया और मुझे अपने अंक में भींच लिया। करुणापूरित हस्त मेरे सिर पर फेरता हुआ वह मेरे भाग्य की सराहना करता रहा, और मेरे काशी निवास का प्रयोजन पूछा।

मणियों के प्रकाश से झिलमिलाती उस रेत पर हमने सम्पूर्ण रात्रि व्यतीत कर दी। शिशुओं सी किलकारी भरते हुए वह अघोरी अपने वाममार्गी पंथ की अनेक रोचक घटनाएं मुझे सुनाता जा रहा था, बिना इस ओर ध्यान दिये कि मैं उसके संस्मरण की अपेक्षा उन विचित्र मणिधारी सर्पों की क्रीड़ाएं देखने में तन्मय था। इतना तो मेरे मानस में स्पष्ट था, कि वे साधारण सर्प नहीं थे वरन् अलौकिक जगत से सम्बन्धित प्राणी विशेष थे, जिन्हें वह अघोरी अपनी साधना के बल पर वशीभूत किए हुए था।

अरुणोदय की प्रथम किरण धरती पर अवतरित होते ही सभी नाग सहसा अदृश्य हो गये, तभी वह अघोरी उठ खड़ा हुआ और विनम्र स्वर में निवेदन करते हुए कहा —" निश्चय ही मैं पुण्यात्मा हूं, जो आप का दर्शन पा सका। **मेरे जीवन की तो सबसे बड़ी आकांक्षा ही यही है, कि मात्र एक पल के लिए ही सही परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी के चरणों में बैठ सकूं।** मेरी इच्छा तो न जाने किस जन्म में पूर्ण होगी पर यह मेरा परम सौभाग्य होगा, यदि आप कुछ समय के लिए मेरा आतिथ्य स्वीकार करें। मेरी कुटिया गंगा के दूसरे तट पर ही है। आशा है आप मेरा आग्रह अस्वीकार न करेंगे।"

गंगा पार करने के लिए नौका की आवश्यकता थी।

अघोरी ने किसी मांझी की तलाश में नजरें दौड़ाईं पर किसी को दृष्टिगोचर न होते देख वह निराश सा हो गया। उसकी परेशानी देखकर मेरे होठों पर हल्की मुस्कराहट दौड़ गई और मैंने उसका हाथ अपने हाथों में लेकर आश्वस्त करते हुए कहा— **नौका की आवश्यकता नही, और इतनी सुवह किसी मल्लाह का इस निर्जन तट पर मिलना भी सम्भव नहीं। गुरुदेव की असीम कृपा से मैंने ''जल गमन प्रक्रिया'' सिद्ध कर रखी है, तुम मात्र मेरा हाथ पकड़े रहना।**

गंगा पार एक सुरम्य स्थान पर अघोरी की कुटिया थी, जिसमें एक आसन व कुछ तान्त्रोक्त वस्तुओं के अतिरिक्त कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। प्रेम पूर्वक मुझे आसन पर बिठाकर, उसने मुझसे कुछ खाने का आग्रह किया। उस निर्जन स्थान पर कुछ खाद्य सामग्री उपलब्ध होने की आशा करना ही व्यर्थ था, अतः मैंने हंसकर टालना चाहा, पर जब उसका आग्रह बढ़ता ही गया, तो मजाक करते हुए मैंने कहा — '' यदि तुम मेरा स्वागत करना ही चाहते हो, तो मुझे छप्पन भोग मंगाकर खिलाओ।'' मेरी फरमाइश सुनकर वह अघोरी अत्यंत प्रसन्न हुआ और नेत्र बंद कर कुछ अस्फुट मंत्रोच्चारण करने लगा।

रूपसी नागकन्या से साक्षात्कार

दूसरे ही क्षण एक अप्रतिम षोडशी चांदी का थाल लिए मेरे समक्ष उपस्थित हो गई, उसके कंचनवत् शरीर से अपूर्व सुगन्ध प्रवाहित हो रही थी। मैं स्वयं को संयमित रखने का प्रयत्न कर ही रहा था, कि **वह रूपसी थाल मेरे सामने रखकर अदृश्य हो गई। नजर उठाकर देखा तो वास्तव में ही छप्पन प्रकार के व्यञ्जन मेरे लिए मंगाए गये थे।** वह अलौकिक भोज अत्यंत स्वादिष्ट व तृप्तिदायक था, पर उस पूरे समयान्तराल में मेरा ध्यान उस सौन्दर्य की प्रतिमा पर ही लगा रहा। रह-रहकर उस कन्या का सौन्दर्य मेरी आंखों के सामने जादू सा झलक उठता था। भोजनोपरान्त मैंने अघोरी से उस कन्या का परिचय जानना चाहा, तो वह शांत स्वर में बोला—''वह नागकन्या थी। ''

— नाग कन्या! सुनते ही मैं उछल पड़ा।

— हां! पर वह मेरी आज्ञाकारिणी सेविका है। साधना से मैंने उसे वशीभूत कर रखा है, उस लोक के अन्य सर्प भी मेरे अनुचर ही हैं''।

अघोरी अत्यंत निश्चिंतता से अपने सुख, ऐश्वर्य का बखान कर रहा था।

— पर मैं तो इन्हें अभी तक कपोलकल्पित ही मानता था। क्या अभी भी नाग जाति का अस्तित्व पृथ्वी पर विद्यमान है? मैं अपनी जिज्ञासा रोकने में असमर्थ था।

अघोरी ने रहस्योद्घाटन करते हुए, बताया— हमारे पुराणों में कई स्थानों पर नागों का वर्णन आया है। महाभारत काल में तो श्रेष्ठ पांडु पुत्र अर्जुन ने नाग कन्या उलूपी से विवाह भी किया था। स्वयं भगवान श्रीकृष्ण की रानियों में कई नाग कन्याएं भी शामिल थीं, परन्तु भारतीय पुराणों की विचित्रताओं को देखकर लोग इन्हें कपोलकल्पित मान लेते हैं अथवा उन्हें प्रतीक रूप में ही वर्णित किया हुआ समझ लेते हैं, जबकि ये सभी कथाएं शत-प्रतिशत प्रामाणिक और विश्वसनीय हैं। इन सभी में नागों को भी मनुष्य की भांति ही निरूपित किया गया है, परंतु नाग जाति मानवों से अधिक विलक्षण व शक्ति सम्पन्न होती है, तथा अपनी इच्छानुसार शरीर धारण कर लेने की सामर्थ्य भी इनमें होती है, अतः साधना के बल पर इन्हें वशीभूत कर मनोवांछित कार्य सम्पन्न कराया जा सकता है।

सृष्टि का एक नवीन रहस्य मेरे समक्ष अनावृत हो रहा था। अत्यंत विनम्र निवेदन करते हुए मैंने जब अघोरी से नागों को वशीभूत करने की साधना का रहस्य जानना चाहा, तो उसने कहा— अष्ट नागिनी तंत्र के माध्यम से नागिनियों को अपने अनुकूल बनाया जा सकता है। ये आठ विलक्षण शक्ति सम्पन्न नागिनियां हैं— अनन्तमुखी , शंखिनी, वासुकीमुखी, तक्षकमुखी, कर्मोटमुखी, कुलीरमुखी, पद्मिनीमुखी, महापद्ममुखी।

नागिनियों की साधना मां, बहिन अथवा पत्नी रूप में की जा सकती है। साधक जिस रूप में नागिनियों का चिंतन करता है, वे उसी रूपमें साधक के साथ रहकर उसकी मनोकामना पूर्ति करती रहती हैं।

इस साधना को सम्पन्न करने के लिए साधक सर्वप्रथम पूज्य गुरुदेव से अनुमति प्राप्त करें और तत्पश्चात् रविवार को **अष्ट नागिनी मुद्रिका** स्थापित करे और **''नागेश माला''** से निम्नलिखित नागिनी मंत्र का नित्य एक माला जाप करें-

मंत्र

''ॐ हुं हुं शंखिनी वायुमुखी हुं हुं।। ''

तीन दिवस के पश्चात् यन्त्र तथा माला को नदी या कुएं में विसर्जित कर दें। साधना की समाप्ति पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से नाग कन्या सहायता करती है।

अब मुझे समझ आया, कि उस निर्जन वन में वह अघोरी किस प्रकार एक राजा की भांति निर्भय होकर समस्त ऐश्वर्यों का भोग करता था। इतनी दुर्लभ व गोपनीय साधना का ज्ञान पाकर मैंने मन ही मन पूज्य गुरुदेव के प्रति नमन किया और अघोरी से विदा लेकर पुनः अपने गंतव्य की ओर बढ़ गया। ❑

पाठकों के पत्र

● पूज्य गुरुदेव, मुझे **"कुण्डलिनी जागरण दीक्षा"** के बारे में बतायें, क्या कुण्डलिनी जागरण दीक्षा में सातों चरणों का समावेश होता है अथवा प्रथम चरण का? क्या सम्पूर्ण कुण्डलिनी जागरण के लिए एक बार में ही दीक्षा प्राप्त की जा सकती है?आप मुझे कुण्डलिनी जागरण दीक्षा के बारे में पूर्ण जानकारी देने की कृपा करें।

पवनसिंह
बाघी, सहारनपुर उ०प्र०

—कुण्डलिनी जागरण दीक्षा के अन्तर्गत प्रथम चरण की ही दीक्षा दी जाती है, परन्तु यदि साधक चाहे, तो सातों चरणों की दीक्षा भी एक बार में ही प्राप्त कर सकता है।

— उपसम्पादक

● महोदय, पत्रिका में यह बात सबसे ज्यादा खलती है, कि किसी भी यंत्र को स्थापित कराने के बाद यह नहीं बताया जाता कि यंत्र को कितने समय तक के लिए स्थापित करना है, पूजन करना है, या यंत्र को एक साल के बाद विसर्जित कर पुनः दूसरा यंत्र स्थापित करना है, या वही यंत्र हमेशा स्थापित रहने देना है। क्या समस्त यंत्र एक वर्ष की अवधि तक के लिए ही बनाये जाते हैं? कृपया यंत्रों की समयावधि के बारे में जरूर बतायें।

अरविन्द भारद्वाज "दीपम"
बरेली उ.प्र.

— यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि आप पत्रिका का इतनी गहराई से अध्ययन करते हैं। यदि यंत्रों को स्थापित करने के बाद उन्हें विसर्जित करने के लिए नहीं लिखा होता है, तो उन यंत्रों को आप स्थापित ही रहने दें तथा नित्य धूप-दीप से उनका पूजन करते रहें। पत्रिका में समय-समय पर पूर्व स्थापित यंत्रों के विसर्जित करने के बारे में विधि प्रकाशित किया जाता है।

— उपसम्पादक

● पूज्य गुरुदेव, कुछ शंका का निराकरण करना चाहता हूं, पवित्रीकरण के बाद **"आचमन क्रिया'** में किस हाथ से आचमनी पकड़ कर जल लें तथा किस हाथ में लेकर, मंत्र पढ़कर जल पीयें या फिर भूमि पर डालें? कृपा करके अवश्य बतायें।

राजेन्द्र कुमार शर्मा,
कानपुर, देहात

— आप बायें हाथ से आचमनी पकड़ कर, दाहिने हाथ में जल लेकर मंत्र पढ़ें तथा जल को पी लें।

— उपसम्पादक

● पूज्य गुरुदेव, जैसा कि पत्रिका के सितम्बर अंक में लिखा है, वह हमने किया। हमें पूर्व में भेजा गया यंत्र **मनोकामना पूर्ण चैतन्य यंत्र, भुवनेश्वरी यंत्र, कालीफल, एकमुखी रुद्राक्ष** तथा **मां पंचांगुली देवी** का एक चित्र प्राप्त हुआ। जिसका हमने विधिवत पूजन किया, हमें **विजया दशमी** के बाद से आर्थिक परिवर्तन प्राप्त हुआ। हम खुश हैं, यह आपका ही आशीर्वाद है।

डॉ० बी.एन. भगत
बारह पत्थर, समस्तीपुर

● पूज्य गुरुदेव जी, आपका शिष्य **अमरनाथ शर्मा** तथा घर के सभी सदस्य आपकी पत्रिका को प्रेम पूर्वक पढ़ते हैं, और मुझे तो सदस्य बने अभी एक साल भी पूरा नहीं हुआ, लेकिन पत्रिका से जो ज्ञान हमें प्राप्त हुआ है, उसका वर्णन मैं नहीं कर सकता। जब से पत्रिका में से गुरुदेव जी की तस्वीर को पूजना शुरू किया है, तब से हमारे घर में हमें सुख-शांति मिली है।

अमरनाथ शर्मा
जम्मू

● पूज्यपाद गुरुदेव जी, मैं आपके चरण कमलों का दर्शन कर गुरुदीक्षा प्राप्त करना चाहता हूं। आप पूरे विश्व का कल्याण कर रहे हैं, स्वामी जी! मुझ गरीब पर भी कृपा कीजिए। मैं **नेत्र रोग** से काफी परेशान हूं, इसका कोई उचित उपाय बताइये, इस दास का कल्याण कीजिए, आपकी अति कृपा होगी।

गणेश प्रसाद शुक्ल
छाता, मथुरा

पत्रिका प्राप्ति के विषय में

हमारे अनेक पाठकों की शिकायत रहती है, कि उन्हें पत्रिका समय पर नहीं मिल पाती अथवा नहीं मिल पायी है। हमारी जानकारी में ऐसी कई घटनाएं सामने आयी हैं, कि कुछ अवांछनीय तत्व पत्रिका को पाठक तक पहुंचने में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं। इसके लिए पत्रिका कार्यालय का समस्त पाठकों से अनुरोध है, कि वे *अपने- अपने नगर की पत्रिकाएं एकत्रित रूप से मंगाएं।* इस प्रकार जहां आपको पत्रिका सुरक्षित रूप से मिल सकेगी, वहीं यह गुरु सेवा भी होगी। फिर भी यदि पाठक व्यक्तिगत रूप से पत्रिका सुरक्षित मंगाना चाहते हैं, तो वे *रजिस्टर्ड बुक पोस्ट* के माध्यम से मंगवा सकते हैं। जिसमें उन्हें प्रतिवर्ष ८५/- का अतिरिक्त डाक व्यय देय होगा।

वर्ष १५ **अंक १** **जनवरी ९५**

प्रधान संपादक - **नन्दकिशोर श्रीमाली**

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान , डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - ३४२००१ (राज.) ,फोन : ०२९१ - ३२२०९

सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली - ११००३४, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८६७००

अमृत महोत्सव

भोपाल साधना शिविर

यह तो उन लोगों के जीवन का परम सौभाग्य है, जो परम पूज्य गुरुदेव की उपस्थिति में इस **''अमृत महोत्सव''** का आनन्द ले सके, जो कि एक नृत्य ही नहीं महानृत्य था, जो कि एक उत्सव ही नहीं महोत्सव था, जो कि एक रास ही नहीं महारास था. . . मध्य प्रदेश के साधकों द्वारा लगे भोपाल के इस शिविर में ऐसा ही कुछ घटित हुआ, जिसे शब्दों में नहीं बांधा जा सकता, और न ही व्यक्त किया जा सकता है।

पिछले पचास वर्षों में पहली बार इस **''सिद्धाश्रम सिद्धि दिवस''** को भोपाल में मनाया गया, जो कि अपने-आप में अद्वितीय, श्रेष्ठ और अनुपम रहा, और ऐसा लग रहा था कि जैसे सिद्धाश्रम ही इस धरती पर उतर आया हो, एक ओर बालिकाओं, साधक, साधिकाओं को नृत्यमग्न देख ऐसा लग रहा था, जैसे देवलोक कि अप्सराएं और देवगण ही पृथ्वी तल पर नृत्य करने के लिए उतर आये हों। एक तरफ पूज्य गुरुदेव की ज्ञान-गंगा प्रवहित होती ऐसी प्रतीत हो रही थी जैसे सिद्धयोगा झील में वे उपस्थित साधक-साधिकाएं स्नान कर रहे हों, और दूसरी तरफ साधकों को साधनारत देख और चारों ओर प्रेममय वातावरण को देख कर ऐसा ही लग रहा था जैसे पृथ्वी पर साक्षात् सिद्धाश्रम ही उपस्थित हो गया हो। वास्तव में ही ऐसे अद्भुत दृश्य को न तो होठों से ही व्यक्त किया जा सकता है और न ही लेखनी के माध्यम से।
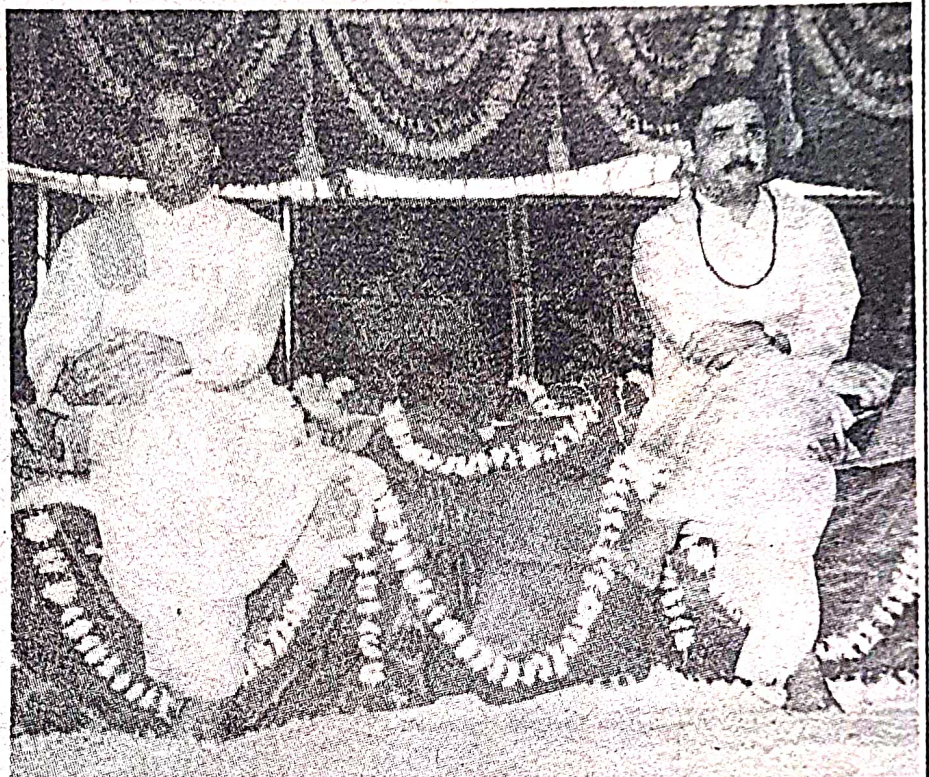
प्रथम दिन **पूज्य गुरुदेव** और **नन्द किशोर श्रीमाली जी** का स्वागत शोभा यात्रा के रूप में बैंड-बाजे, ढोल द्वारा बड़ी धूम-धाम से नाचते-गाते हुए तथा कुछ बालिकाओं द्वारा सजी आरती की थाली व पुष्पों से शिविर स्थल तक किया गया, दूर से देखने पर तो यह दृश्य बड़ा ही सुन्दर एवं मनोहर लग रहा था।

इस शिविर के मुख्य आयोजक **डॉ० साधना** और उनके पति **अरविन्द जी** ने, उसी दिन गुरुदेव के एक बड़े चित्र के आगे एक दीपक प्रज्वलित किया, जो कि चार दिन तक अखण्ड प्रज्वलित रहा, और इस प्रकार चार दिवसीय शिविर का शुभारम्भ ही गुरुदेव की जय-जयकार, गायन, नृत्य आदि से झूमते हुए बड़े उमंग और जोश के साथ किया गया।

भारतवर्ष के अलग-अलग स्थानों से आये साधकों और शिष्यों ने भाग लेकर इस शिविर की शोभा को बढ़ाया, क्योंकि पहली बार ऐसा कुछ घटित होने जा रहा था, जो अघटित था, और जो शंकराचार्य के बाद पहली बार ही **डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी** द्वारा इस धरा पर अनायास ही घटित हो रहा था।

इस शिविर में पूज्य गुरुदेव ने सिद्धाश्रम के संन्यासी शिष्यों

भोपाल शिविर में निखिल वाणी टीम द्वारा सद्गुरुदेव रचित साहित्य एवं दुर्लभ चित्र, प्रवचन अंश और दुर्लभ जड़ी-बूटियों का सफल प्रदर्शन

का भी आह्वान किया, क्योंकि वे चाहते थे कि गृहस्थ शिष्य भी इन संन्यासी शिष्यों के समकक्ष बन सकें, और पृथ्वी तल से ऊपर उठकर सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सकें। इसके लिए उन्होंने विभिन्न प्रकार के प्रयोग भी सम्पन्न कराये, जो कि अपने-आप में अत्यन्त ही महत्वपूर्ण थे, और जिन्हें सम्पन्न कर गृहस्थ व्यक्ति उस उच्चता को प्राप्त कर सकता है, उस पूर्णता को प्राप्त कर सकता है, जिसे **''सिद्धाश्रम''** कहते हैं।

और यह चार दिवसीय शिविर, यह संन्यास दिवस, यह अमृत महोत्सव **''सिद्धाश्रम प्राप्ति''** की ही क्रिया थी, जिसे पूज्य गुरुदेव ने अपने ज्ञान द्वारा, अपनी चेतना द्वारा और विशिष्ट साधनाओं द्वारा स्पष्ट किया, जिससे कि साधारण गृहस्थ साधक या शिष्य अपने समस्त पाप, ताप और संताप को दूर करे तथा जीवन में पूर्ण सफलता, सिद्धि, ऐश्वर्य और पूर्णता प्राप्त कर सके।

गुरुदेव का कहना था कि इतने वर्षों बाद पहली बार ही ऐसा श्रेष्ठ मुहूर्त पड़ा है, **जब वृश्चिक राशि पर सूर्य है,** और इन विशेष क्षणों का यदि उचित उपयोग किया जाए या इस विशेष मुहूर्त पर विशिष्ट साधनाओं को सम्पन्न किया जाए, तो उनमें शीघ्र सफलता मिलती ही है।

जीवन में पहली बार ही गुरुदेव ने गृहस्थ साधकों एवं शिष्यों को तांत्रोक्त पद्धति से प्रयोग सम्पन्न करवाये थे, जिसमें प्रथम दिन **''संन्यस्त प्रयोग''** का प्रारम्भिक विन्दु सम्पन्न कराया तथा किसी भी प्रकार की कोई हीन भावना व्यक्ति के जीवन में न रह जाये, इसको दूर करने के लिए **''कायाकल्प प्रयोग''** को सम्पन्न कराया, जिसे सम्पन्न कर गृहस्थ साधक की कोई भी इच्छा जीवन में शेष न रह जाए, न भौतिक और न ही आध्यात्मिक। और साथ ही **''तांत्रोक्त गुरु हृदय स्थापन''** प्रयोग भी सम्पन्न करवाया, जिससे कि गुरु साक्षात् उस शिष्य के मलीन हृदय में स्थापित हो सकें, और उसे काम, क्रोध, मोह, लोभ इन चारों व्यभिचारों से मुक्ति दिला सकें, जिससे कि उनका हृदय स्वच्छ, निर्मल व कोमल बन सके, और उनमें इतनी पात्रता आ सके, कि वे उस दिव्य स्थली में प्रवेश पाने के योग्य बन सकें।

जीवन के सभी भौतिक और आध्यात्मिक आयामों को पूर्णता देते हुए उन्होंने गृहस्थ साधकों को विशेष **''तांत्रोक्त संन्यस्त प्रयोग''** और साथ ही **''सिद्धाश्रम निश्चित प्राप्ति प्रयोग''** सम्पन्न करवाया, जो कि अपने-आप में अद्वितीय प्रयोग माने जाते हैं, और सिद्धाश्रम प्राप्ति के लिए उन्होंने **''निश्चित''** शब्द जोड़ कर तो उन गृहस्थ साधकों व शिष्यों को यह विश्वास दिला दिया, कि वहां उपस्थित प्रत्येक साधक उस पावन भूमि का दर्शन कर सकने में सक्षम हो सकेगा, यह उनका वचन है, और इसके साथ ही साथ **''संस्कार विधि प्रयोग''** को भी विभिन्न चरणों में इस चार दिवसीय शिविर में सम्पन्न करवाया।

जीवन के इस आपाधापी से भरे युग में मानव को विभिन्न प्रकार के तनावों तथा कदम-कदम पर आड़े आने वाली समस्याओं के बीच से गुजरना पड़ता है. . . और यदि इन तनावों और समस्याओं के मध्य कुछ क्षण उल्लास, उमंग और नृत्य के मिल जायें, तो वे सुखदायक क्षण **''आनन्द महोत्सव''** के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं।

ऐसा ही था वह भोपाल का **''अमृत महोत्सव''** जहां का एक-एक दिन ही नहीं, एक-एक क्षण आनन्द में डूबा हुआ था, प्रेम से ओत-प्रोत था, जहां उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति आनन्दमग्न होकर नाच-गा रहा था, जहां शिष्यों को दिन-रात का भान ही नहीं था, क्योंकि पूज्य गुरुदेव द्वारा पूरे-पूरे दिन और पूरी-पूरी रात्रि उन विशेष प्रयोगों को सम्पन्न करवाया गया था, जो सिद्धाश्रम प्राप्ति के चरम बिन्दु थे।

एक तरफ गुरुदेव के मुखारविन्द से उच्चरित अमृत वचन, अमृत सन्देश, अमृत ज्ञान की गंगा प्रवहित हो रही थी, तो दूसरी ओर **बहिन अंजलि** और **भाई जय प्रकाश** का गायन उन शिष्यों को आनन्दमग्न और नृत्यमय होने के लिए प्रेरित कर रहा था. . . और फिर यदि पूज्य गुरुदेव सामने अपनी मनमोहक मुस्कराहट और आशीर्वाद के साथ उपस्थित हों, तो कौन ऐसा होगा, जो होश में रह सकेगा। वहां का प्रत्येक

व्यक्ति अपनी ही मस्ती में चूर हो जीवन का आनन्द ले रहा था, क्योंकि पूज्य गुरुदेव ने उन्हें वह मस्ती, वह प्रेम, वह आनन्द प्रदान किया, जिसकी वजह से वह नृत्यमय होकर अपनी पीड़ाओं को, अपने दुःखों को भुला कर उस अमृत को पी सके, जो वहां पूज्य गुरुदेव के नेत्रों से, उनके होठों से बरस रहा था, जो उनके द्वारा किये गये प्रत्येक क्रियाकलाप से झलक रहा था. . . और शिष्यगण उसे पीने के लिए, उसमें डूब जाने के लिए आतुर खड़े थे।

पूज्य गुरुदेव ने उन शिष्यों व साधकों को मस्ती में झूमते देख अपना विशेष आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि– **"कि इस छोटी सी अवधि में ही पूर्णता प्राप्त हो, वे सिद्धियां, वे साधनाएं प्राप्त हों, जो महत्वपूर्ण हैं, और आप "पूर्णमदः पूर्णमिदं" बन सकें, आपके अन्दर वह विराटता आ सके, जिससे कि आप देवमय बन सकें, शिवमय बन सकें, तथा सिद्धाश्रम में प्रवेश पाकर ब्रह्माण्ड में विचरण कर सकें"।** . . . इस आशीर्वाद को प्राप्त कर पूरा शिविर एक बार फिर पूरे उल्लास और वेग के साथ नाच उठा, झूम उठा . . .और एक ऐसे वातावरण का निर्माण हो सका, जो अपने-आप में अद्वितीय कहा जा सकता है।

आखिरी दिन पूर्णा हुति के साथ-साथ तथा गुरुदेव के चरण स्पर्श कर इस भव्य शिविर का समापन समारोह सम्पन्न हुआ, और पूज्य गुरुदेव से अलग होते हुए प्रत्येक शिष्य की आंख में अश्रुकण झलक रहे थे, किन्तु वे आंसू प्रसन्नता के भी थे, क्योंकि इस बार पूज्य गुरुदेव उन्हें ऐसा खड्ग अस्त्र देकर भेज रहे थे, जिससे वे अपने जीवन में कभी भी पराजित नहीं हो सकते।

इस भव्य शिविर को सफल बनाने में हाथ था मध्य प्रदेश के समस्त शिष्यों का, जो इस कार्य में कई महीनों पहले से ही कार्यरत थे, और जिन्होंने पूरे भारतवर्ष से आने वाले साधकों और शिष्यों के लिए खाने-पीने और रहने की अपनी तरफ से अच्छी से अच्छी व्यवस्था कर रखी थी। **कैलाश सोनी** ने दस महाविद्याओं के चित्र लगाकर, **आनन्द जेटली** ने आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों को एकत्र कर और **"निखिल वाणी टीम"** के बाला सुब्रह्मण्यम, आई. एस. पदम्, वी. डी. पत्रे, राजू, एन. शंकर, श्री खातलकर, सुनील तिवारी और विशेषकर **अमित सक्सेना** ने दिन-रात एक करके इन दुर्लभ सामग्रियों का संग्रह कर एक लघु प्रदर्शनी का आयोजन किया। **श्री चौहान** एवं उनकी **धर्म पत्नी** ने भी इस शिविर को सफल बनाने का अथक प्रयास किया, और साथ ही इसमें **पवन खेतान** का भी नाम उल्लेखनीय है।

इनके अतिरिक्त दिल्ली से आये **जीत सिंह शर्मा** और बम्बई से आये **गणेश वटाणी जी** ने भी शिविर में अपना योगदान दिया तथा श्रीवास्तव जी ने इस शिविर की मंच व्यवस्था को संभालने के साथ- साथ दूर- दूर से आये शिष्य गण व साधकों के हितों को ध्यान में रखते हुए शिविर को सफल बनाने का प्रयास किया। **विभा और भुवनेश्वर भारतीय** विभिन्न अंचलों से साधकों को लाने व जन-सम्पर्क कार्यों में सराहनीय योगदान दिया।

इन सबके सहयोग से ही यह शिविर **"अमृत महोत्सव"** कहला सका. . .और पूज्य गुरुदेव ने उन्हें इस सहयोग के लिए प्रसन्न हो विशेष आशीर्वाद भी प्रदान किया, जिससे कि वे इसी प्रकार कार्यरत रहकर पूज्य गुरुदेव का भार हल्का कर सकें, और उनकी सेवा करते हुए अपने जीवन को पूर्णता प्रदान कर सकें, अपने जीवन को धन्य कर सकें। ❑

राजनीतिक भविष्य एवं शेयर मार्केट

अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से यह माह ऊहापोह एवं तनावों से भरा रहेगा। विश्वव्यापी रंगभेदी नीति में उलझने बढ़ेंगी। पश्चिमी बंगाल एवं उत्तर-प्रदेश में विशेष रूप से प्रदर्शनों व राजनीतिक दलों में टकराव एवं बिखराव का वातावरण बनेगा। भारतीय जनता पार्टी अपनी साख एवं वर्चस्व के प्रति चिन्तित रहेगी तथा पार्टी का जनाधार मजबूत बनाने के पक्ष में प्रयत्नशील रहेगी। केन्द्र के स्तर पर स्थिति में खींचातानी एवं अस्पष्टता की स्थिति रहेगी।

कश्मीर की स्थिति में सुधार के मामलों को लेकर केन्द्र में विशेष हलचल रहेगी एवं नये कदम उठाए जायेंगे। विश्व स्तर पर भारत की प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए शीर्षस्थ पदाधिकारियों में विशेष उत्साह बनेगा, एवं विश्वस्तर पर नई घोषणाएं की जा सकती हैं। साम्प्रदायिक तनावों से समस्त भारत पीड़ित ही रहेगा। दिल्ली एवं आसापास के शहरों में उग्रवादी अपनी घिनौनी क्रियाओं से अफवाहें फैलाकर अशांति का वातावरण उत्पन्न करने का प्रयास करेंगे। उत्तर-प्रदेश में जातीय संघर्ष को लेकर शिथिलता आयेगी। पंजाब में कुछ वरिष्ठ अधिकारियों व कैबिनेट स्तर के व्यक्तियों की साख में गिरावट आयेगी। उनके प्रति जन-आन्दोलन तेजी का रूप धारण करेगा। उड़ीसा में राजनीतिक परिवर्तन के साथ भी स्थिति सामान्य ही रहेगी।

राजनीतिक स्तर पर दबे मामले पुनः उभर कर सामने आयेंगे तथा नये विवाद की स्थिति निर्मित करेंगे। भारत व श्रीलंका के सम्बन्धों को लेकर विशेष चर्चाएं होंगी। भारत की गिरती आर्थिक साख को लेकर नये संशोधन पास किये जाएंगे, तथा भारत को आत्म निर्भर बनाने की दिशा में ठोस कदम उठाए जायेंगे। भारत की मजबूती देखकर पाकिस्तान की गतिविधियों में विशेष शिथिलता दिखाई देगी। पाकिस्तान की आन्तरिक गतिविधियों को लेकर ही पाक सरकार का जनाधार कमजोर पड़ता दिखाई देगा।

मार्क्सवादी सरकार अपने जनाधार को बनाने के लिए विशेष रूप से प्रयत्नशील नजर आयेगी। राजस्थान अपनी शांति बनाने के लिए विशेष प्रयास करेगा। हरियाणा की नवीन आर्थिक नीतियों में फेर बदल की सम्भावनाएं बलवती होंगी। भारत तथा जापान सम्बन्धों में मधुरता उत्पन्न होगी।

शेयर मार्केट

नवीन उद्योग ऊहापोह की स्थिति में रहेंगे, अपनी साख को बनाने में बहुत अधिक मात्रा में संघर्ष करना पड़ेगा। कुछ उद्योगों के समक्ष साख का प्रश्न भी आ खड़ा होगा। औद्योगिक क्षेत्रों में चलती विषमता की स्थितियों से शेयर होल्डरों की मानसिकता में अत्यधिक परिवर्तन आयेगा।

तेजड़ियों का बोलबाला इस माह सामान्य ही रहेगा, तथा व्यापार में जोखिम की स्थिति अत्यधिक रूप से रहेगी। स्पेसिफाइड शेयर अपनी समान स्थिति में रहेंगे जबकि प्राचीन उद्योगों की स्थिति, विकास की ओर अग्रसर रहेगी। यद्यपि यह स्थिति स्थाई नहीं रहेगी। शेयर होल्डर स्पेसिफाइड शेयर्स की ओर से चिन्तित रहेंगे। साथ ही शेयर मार्केट में रुचि लेने वालों में शिथिलता आयेगी एवं नया वर्ग ऊहापोह की स्थिति में रहेगा। स्पेसिफाइड शेयर्स में बजाज आटो, एस्कोर्टस, हिन्द लीवर्स, कोलगेट अपनी प्रगति की स्थिति में दिखाई देंगे तथा ए.सी.सी., टिस्को, हिन्द मोटर्स एवं ग्लैक्सो अपनी सामान्य अवस्था में रहेंगे।

द्वितीय स्तर पर एस.के.एफ. फाइवर, मोदी रबर एवं नैस्ले अच्छा व्यापार देंगे। अल्कलीज, हिन्डाल्को, आई.टी.सी., जे.पी. इन्डस्ट्रीज एवं रिलायंस की स्थिति सामान्य ही रहेगी। इसके अलावा अपोलो टायर, बॉम्बे डाइंग, एस्सार शिप, हिन्द मोटर्स इन सभी शेयरों की स्थिति अधिक अनुकूल नहीं कही जा सकती, परन्तु सामान्य से अच्छी रहेगी।

नान स्पेसिफाइड शेयरर्स में अल्फा लेवल, एशियन होटल, एटलस साईकिल, बेस्ट क्रोम, केबल कोर, केमलिन, सिप्ला, हिन्द डोर, गारवेल, इलेक्ट्रो इण्डिया, लखानपाल, मोदीजिराक्स, नाहर स्पिनिंग एवं नाहर शुगर का नाम लिया जा सकता है। इसके अलावा बूट्स तथा टाटा प्रेस की स्थिति अच्छी रहेगी।

एस.के. लीवर, एशियन पेन्ट्स, ब्रिटानिया, बुक ब्रांड, सीएट टायर, सिरेमिक्स, नागार्जुन फर्टीलाइजर एवं मेंगलोर रिफायनरी की स्थिति इस माह उल्लेखनीय रहेगी। ❑

तंत्र क्या है?

वर्तमान युग में **"तंत्र"** शब्द धिनौनेपन और आतंक का पर्यायवाची हो गया है। "तांत्रिक" नाम सुनते ही एक ऐसे व्यक्ति की छवि का अंकन हमारे मानस पटल पर चित्रित होना शुरू हो जाता है, जो श्मशान वासी, सुलफे या शराब के कारण मोटी-मोटी लाल, भयावह आंखें, बड़ी-बड़ी अस्त-व्यस्त जटायें लिये, ऊल-जलूल से वस्त्र धारण किया हुआ व्यक्ति, गन्दी-गन्दी गालियां अजस्र बकता हुआ, लोगों को अपनी बेतुकी हरकतों से डराता हुआ व्यक्तित्व है। जन साधारण उससे इसलिये भयभीत है कि कहीं क्रोध में उस के द्वारा हमारा किसी प्रकार से कोई अहित ना हो जाए।

उपरोक्त वर्णित व्यक्तित्व का प्रचार-प्रसार रेडियो, टेलीविजन, फिल्मों, अखबारों, पत्रिकाओं आदि द्वारा अत्यन्त गलत ढंग से हुआ और हो रहा है, और इसके फलस्वरूप, तंत्र का अस्वस्थ, रुग्ण, एवं भ्रामक चिंतन ही जन-मानस तक प्रस्तुत हो पाया जिसके कारण से सारा

"तंत्र और शक्ति का सम्बन्ध पुरातन काल से ही चला आ रहा है। पूर्वकाल में तंत्र का प्रयोग प्रत्येक मनुष्य अपनी दैनिक चर्या के अन्तर्गत करता था। जो जितना अधिक तंत्र का ज्ञाता होता था, वह उतना अधिक ही शक्ति युक्त भी माना जाता था।

किन्तु वर्तमान समाज में कुछ तंत्र की भ्रामक स्थितियां ही सामने आयी है . . . जबकि –

समाज **तंत्र** के नाम से हाय-तौबा करने लगा, इसी कारण सारे जन-साधारण की विचारधारा इस बहुमूल्य विषय पर बीमार हो गयी।

वर्तमान युग में तंत्र के प्रति इस अस्वस्थ चिंतन का निराकरण तथा इसके सही समाधान की नितान्त आवश्यकता है।

तंत्र का अर्थ है– तन के अन्दर झांकने की प्रक्रिया, जिससे मानव जीवन ऊर्ध्वगामी हो सकने की क्षमता प्राप्त कर सके।

तंत्र का अभिप्राय है—एक विस्फोटात्मक ऊर्जा का प्रादुर्भाव, जिससे सूक्ष्म शरीर में स्थित **सुप्त प्राण-शक्ति** का ऊर्ध्वगामी विकास तेजी से हो सके, ताकि उदात्त प्रवृत्तियों का जागरण हो सके।

मंत्र प्रार्थना है, तंत्र प्रार्थना नहीं है—तंत्र तो एक धमाका है, जिसके माध्यम से प्राणों में छाई जड़ता को द्रुत गति से समाप्त किया जा सकता है। तंत्र तो एक महाविज्ञान है, जिसमें तंत्र का उपासक अपने भीतर की शक्ति को जाग्रत कर, स्वयं को चुम्बक की तरह प्रभावशाली और तीव्र बनाता है। तंत्र इस बात का ज्ञान करवाता है, कि मानव अपने भीतर की परतंत्रता को छोड़कर "अतन" होता हुआ स्वतंत्र बन सकता है। अपनी शक्ति का असीम विस्तार कर सकता है। शरीर में रहते हुए भी इस शरीर से मुक्त होकर स्वयं को विस्तारित कर सकता है।

लेखक : डॉ० सुरेन्द्र निखिल

तंत्र के दो मार्ग हैं—**दक्षिण मार्ग** द्वारा मानव स्वयं की शक्ति का असीम विकास कर तीव्रता से ईश्वरीय सत्ता में मिल जाता है, जबकि **वाममार्ग** द्वारा सांसारिक विषय-विकारों का हर्ष-पूर्ण उपयोग करता है, और शक्ति का जागरण गलत ढंग से कर के जनसाधारण को कष्ट पहुंचाता है। इसीलिए जनमानस में तंत्र के प्रति भय व्याप्त हुआ। यही कारण है कि प्राचीन समय में श्रेष्ठ गुरु अपने योग्य शिष्य को ही **तंत्र दीक्षा** देते थे, ताकि इसका दुरुपयोग ना हो पाए, सारे साधना रहस्यों का आदान-प्रदान मौखिक ही होता था और गुरु सब कुछ गोपनीय रखते थे।

मुगलों और अंग्रेजों ने भारतीय संस्कृति का आधारभूत तत्व – पूजा, मंत्र-तंत्रादि अत्यधिक विकसित प्रणाली पर सबसे अधिक प्रहार किया, और जन साधारण में इन विषयों पर भांति-भांति की भ्रान्तियां फैलायी। भारतीय संस्कृति व सभ्यता जो कभी ज्ञान व विज्ञान की पराकाष्ठा पर थी, को उन क्रूर शासकों की शारीरिक व मानसिक गुलामी का शिकार
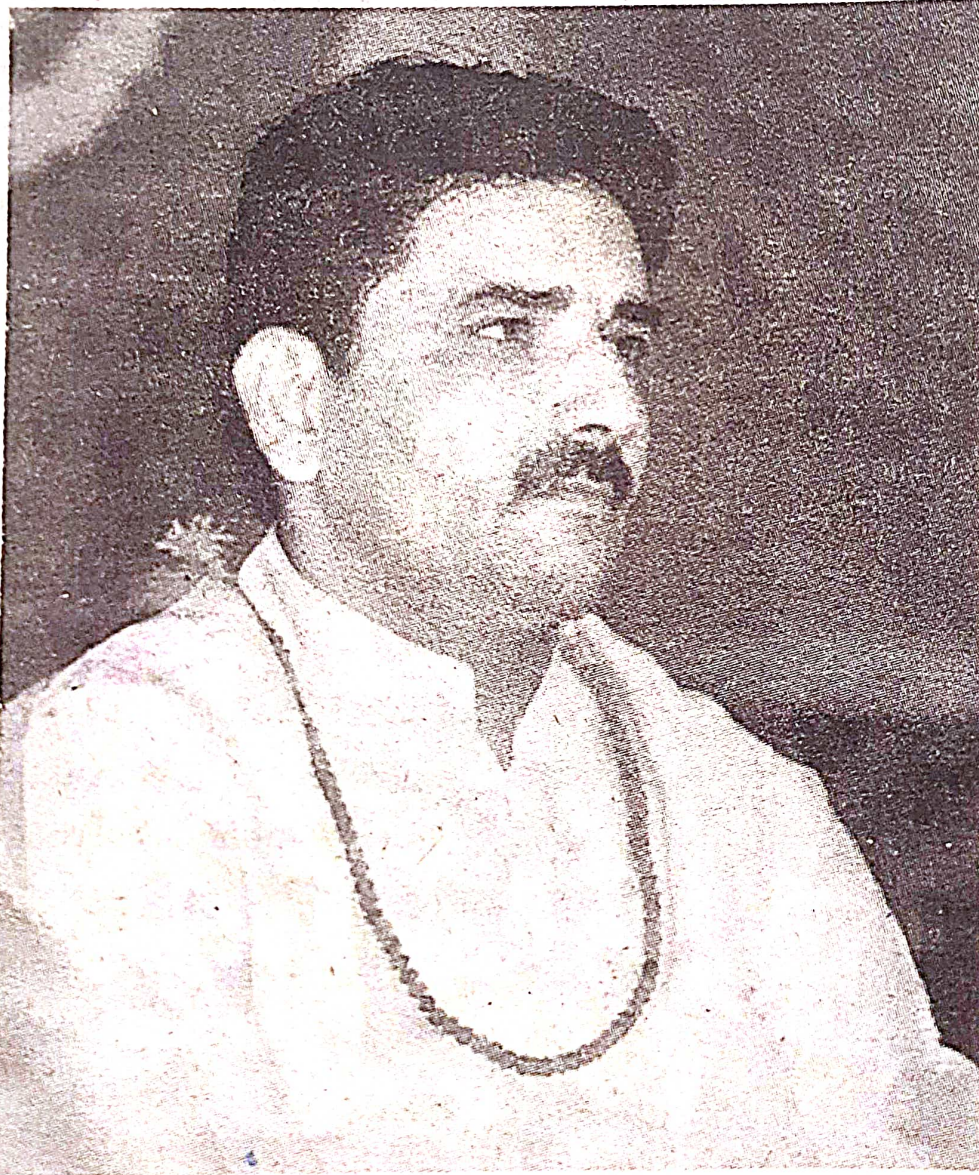
होना पड़ा और पतनशील होना पड़ा।

अतः आधुनिक समय की यह पुरजोर मांग है,कि हम आर्यों को अपने "ऋषिकालीन गोत्र" व "शक्ति की श्रृंखला" को पुनः जोड़ना है। इस वर्तमान निराश व असहाय मानवता के लिये तंत्र-विधा का उपयोग करना परमावश्यक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य है, क्योंकि इसी विधा द्वारा हम लोग अपने जीवन को ऋषि तुल्य सशक्त श्रेष्ठता व दिव्यता प्रदान कर सकते है। तंत्र के माध्यम से ही हम हिन्दू अपने देश भारत वर्ष की भौतिक समस्याओं का तीव्रता से निराकरण कर सकते हैं और आध्यात्मिक शिखर पर तेजी से जा सकते हैं।

तंत्र-शक्ति तो विस्फोटात्मक है, विखण्डात्मक है, जिससे हमारे देश व जाति की चहुं ओर की प्रगति अत्यन्त सुगमता से सम्भव है। यह विद्या तो हमारी रक्त-शिराओं में हमारे दिव्य ऋषि-मुनियों द्वारा स्वतः ही प्रवाहित है, लेकिन सुप्तावस्था में है। अतः इसका जागरण अति शीघ्र ही आवश्यक है, तभी मानवता का वृक्ष सम्पूर्ण विश्व में ठोस जड़ें पकड़ सकेगा, तभी हम मनुष्य होने का गौरव प्राप्त कर सकेंगे, तभी हमारे इस जीवन की सार्थकता सम्भव है। जीवन की परमोच्च अवस्था पूज्य गुरुदेव "परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी" के श्री चरणों में समर्पित होने पर ही प्राप्त हो सकेगी।

शक्ति और भक्ति

भारतवर्ष प्राचीन काल से ही ऋषि-मुनियों, देवी-देवताओं एवं सिद्धों की जन्म तथा तपस्या स्थली रहा है और इन्हीं दिव्यात्माओं ने इस ब्रह्माण्ड में अपने तेजस पुञ्ज से आर्य सभ्यता में नये प्राण संचार किये हैं, फलस्वरूप हिन्दुत्व को सर्वव्यापी व सर्व श्रेष्ठ बनाने का अनथक प्रयत्न किया और आदिकाल से ही इतिहास इन घटनाओं का साक्षी है।

इस देव दुर्लभ हिमालय उत्तराखण्ड में स्थापित सिद्धाश्रम में विद्यमान साधनाओं व तपस्याओं के द्वारा अर्जित शक्ति सम्पन्न ऋषि-मुनि, देवी-देवता हमारे मां-बाप के समान हैं। ऐसे ही दिव्य ऋषि-मुनियों के हम वंशज तथा गोत्रज्ञ हैं। हम ही लोग वशिष्ठ, विश्वामित्र, अत्रि, कणाद, गौतम, पुलस्त्य, गर्ग, भारद्वाज, कश्यप आदि गोत्र से जुड़े हैं। उन्हीं का तेजस्वी रक्त हमारी शिराओं में प्रवाहित है। मगर जैसे-जैसे कालखण्ड बीतता चला गया, वैसे-वैसे हमारे हिन्दुत्व का रुधिर विषाक्त होता चला गया। हम हिन्दु-शक्ति के साधक नहीं रहे। साधनात्मक प्रणाली जो हमें अपने पूर्वजों से सहज परम्परागत—वंशावली से प्राप्त

किसी भी किस्म का नया या पुराना "दांवपेंच", "क्रिया", "क्रियाशैली" आदि स्वयं ही सीखने का प्रयत्न करें। बेशक वह रसोई घर से लेकर आर्थिक क्षेत्र का हो या सामाजिक क्षेत्र का हो। दूसरों पर निर्भर मत बनिये।

हुई है, हमारी उनमें आस्था व विश्वास में न्यूनता आती चली गई, परिणाम स्वरूप हम दीन-हीन याचक प्रवृत्ति में अग्रसर होने लगे। भक्ति का भाव हमारे मन में पनपने लगा, और हम लोग "शक्ति" का ह्रास द्रुत गति से कर गए।

शक्ति साधना मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान द्वारा, साधनाओं द्वारा प्राप्त होती है। हम हिन्दुओं में शक्ति-साधना का अभाव होने पर दीन-हीन, याचक ,पंगु प्रणाली—भक्ति द्वारा आगे बढ़ना चाहा और कुल मिलाकर निष्कर्ष यह रहा कि शताब्दियों तक हम मुसलमानों और अंग्रेजों के दास रहे और भक्ति मार्ग से प्रभावित हो हाथ पैर जोड़ने लग गये, और भक्तों की लम्बी श्रेणी इस धरा पर उत्पन्न हो गयी।

भक्ति करना कोई बुरी बात नहीं, मगर भक्ति अपने आप में लुंज-पुंज बनकर याचना व प्रार्थना के भाव से युक्त है। मगर शक्ति तो मात्र साधनाओं द्वारा ही अर्जित होती है, जैसे कि हमारे पूर्वज आर्यों, ऋषियों-मुनियों को प्राप्त थी। उन साधनाओं द्वारा प्राप्त शक्ति के बल पर उन आर्यों ने, भारत के लोगों में अदम्य साहस कूट-कूट कर भर दिया, जो कि कालान्तर तक हर दिशा में शक्ति, श्री तथा सम्पन्नता से परिपूर्ण था।

मगर आज की वर्तमान परिस्थितियों को सामने रखते हुए निरीक्षण करें, तो हम हिन्दुओं को अपने ही देश में, अपने अस्तित्व व वर्चस्व को बनाये रखने के लिये संघर्ष पथ पर गतिशील होना पड़ रहा है।

अतःएव अगर हमें अपनी ऋषियों की धरोहर श्रेष्ठतम आर्य-प्रणाली को इस पुनीत भूमण्डल पर पुनर्जीवित करना है, अगर हमें साधनात्मक शक्ति सम्पन्न होना है, तो हमें दीन-हीन, याचक-भिक्षुक पद्धति का परित्याग करना ही होगा। शक्ति की उपासना करनी होगी, जिससे तीव्रता से पतनशील सनातन धर्म को उठाकर भौतिक व आध्यात्मिक उत्थान की ओर ले जाया जा सके। तभी हमारे व्यक्तित्व का निर्माण हो सकेगा, तभी हमारे हिन्दू समाज की मांस-पेशियां सशक्त व सबल हो सकेंगी। यही इस काल की चीखती ध्वनि है। ❑

आप का स्वास्थ्य

''समदोषः समग्निश्च समधातुमलक्रियः
प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थ इत्यभिधीयते''

जिस मनुष्य के शरीर में वात, पित्त, कफ, जठराग्नि तथा रक्त, मांस-मज्जा, शुक्र-भेद अनुपातिक रूप से समान हों एवं मल-मूत्र, शरीर से पसीना निष्कासित होने की क्रिया नियमित हो, उस की आत्मा और उसका मन प्रसन्न हो, तो ऐसा व्यक्ति समपूर्ण दृष्टि से स्वस्थ कहलाता है।

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क रहता है, इसका सीधा सा अर्थ है कि मनुष्य की सब प्रकार की उन्नतियों का मूल आधार उसका स्वास्थ्य है। यदि मनुष्य पूर्ण रूप से स्वस्थ है तो वह स्वयं ही सौन्दर्य युक्त बना रहता है, फिर उसे किसी प्रकार के बनाव-श्रृंगार की आवश्यकता नहीं रहती। स्वस्थ व्यक्ति का मन सदैव उत्फुल्ल व तरंगित बना रहता है, और वह किसी भी कार्य को पूर्ण प्रसन्नता व आत्म-विश्वास के साथ सम्पादित कर सकता है।

यदि कोई व्यक्ति, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष अपने स्वास्थ्य की तरफ ध्यान न दे तो धीरे-धीरे उसका शरीर रूग्ण होने लगता है। असमय ही सिर के बाल सफेद होने लगते हैं, चेहरे पर कील-मुंहासे निकलने लगते हैं, शरीर बेडौल और थुलथुला हो जाता है, उस पर आक्रमण होने लगता है विभिन्न प्रकार के राजरोगों का, जैसे – हाई ब्लड प्रेशर, डॉयविटीज, अल्सर इत्यादि। एक अस्वस्थ व्यक्ति को यदि फूलों की शैया पर भी सुला दिया जाए, तो उसे वह कांटों का बिस्तर ही लगता है। धीरे-धीरे वह अपने-आप को परिवार के ऊपर वोझ समझने लगता है, और शरीर व मन दोनों से ही बिखरता हुआ वह मौत की जंजीर में जकड़ने लग जाता है।

पुरातन काल से ही यह परम्परा चली आ रही है कि सूर्योदय से पूर्व ही उठकर दैनिक कार्यों से निवृत्त हो लेना चाहिए। जिससे पूरे दिन शरीर में ताजगी बनी रहती है, किन्तु आजकल तो सौ व्यक्तियों में से शायद ही पांच-दस व्यक्ति को ही पता होगा कि सूर्योदय कब होता है। अनियमित जीवन-चर्या आज के पुरुष व स्त्रियों के दैनिक जीवन का अंग बन गयी है, और इस अनियमितता का पहला शिकार होता है, ''मनुष्य का पेट'' कब्ज की शिकायत होना, दस्त लगना, आंव पड़ना, गैस की परेशानी और अचानक ही पेट में दर्द उठना इत्यादि। इस प्रकार की पेट से सम्बन्धित परेशानियां तो एक आम समस्या बन गयी हैं।

साधारणतः प्रत्येक व्यक्ति को यह पता है, कि अधिकांश बीमारियों से छुटकारा तो पेट की तरफ ध्यान देकर ही पाया जा सकता है। वैद्य, डॉक्टर, तथा प्राकृतिक चिकित्सकों के अनुसार यदि मनुष्य के पेट में किसी प्रकार की खराबी नहीं है, समय पर शौच आता है, और पाचन क्रिया ठीक है तो व्यक्ति का शरीर ७५ प्रतिशत निरोगी एवं स्वस्थ रहता है। भारत के अस्पतालों में ६० प्रतिशत रोगी तो पेट से सम्बन्धित बीमारियों के ही आते हैं, और उनमें से भी

आधे से अधिक रोगी तो कब्ज दूर हो जाने के बाद स्वस्थ हो जाते हैं।

यदि हम अपना थोड़ा सा समय सिर्फ २५ मिनट ही अपने लिए रोज निकाल लें तो निश्चित रूप से स्वस्थ बने रह सकते हैं। इस के लिए सुबह जल्दी उठने की आदत डालें। दैनिक-क्रिया से निवृत्त हो कर २५ मिनट नित्य व्यायाम करें और फिर अपने रोजमर्रा के कार्यों में लग जाएं। यदि आपने ऐसा करना शुरू कर दिया, तो निश्चित जानिए कि आपका अस्वस्थ शरीर धीरे-धीरे स्वस्थ होने लग जाएगा और आपके जीवन में प्रसन्नता वापिस लौट आयेगी।

"जैसा भोजन वैसी बुद्धि" अतः पाचन क्रिया का पूर्णरूप से सही रहना अत्यन्त आवश्यक है, पेट के महत्वपूर्ण भाग छोटी आंत, बड़ी आंत व मलाशय हैं, और तीनों का पूर्ण स्वस्थ रहना आवश्यक है, इनकी नियमित शुद्धता से शरीर पूर्ण-रूप से स्वस्थ रहता ही है। इसके लिए बड़ी-बड़ी एलोपैथिक दवाइयां लेना निश्चित रूप से इन अंगों के लिये घातक है। ये एलोपैथिक दवाइयां पेट के रोगों को दबा देती हैं, यह इन्हें समूल रूप से नष्ट नहीं कर सकती है, जबकि हमारे आस-पास ऐसी हजारों घरेलू औषधियां हैं, जिनका उचित सम्मिश्रण में सेवन करने से पाचन-संस्थान पूर्ण-रूप से स्वस्थ हो सकता है, ऐसी ही कुछ विशेष बीमारियां और इनके उपचार से सम्बन्धित औषधियों का विवरण नीचे दिया जा रहा है—

१. नाभि स्थान पर उठने वाला पेट का दर्द

ऐसा भयंकर पेट का दर्द कि जिसमें किसी भी दवा से लाभ नहीं हो रहा हो, रोगी दर्द से चीख रहा हो, भूख और प्यास न लग रही हो तो तब थोड़ा सा नारियल का तेल नाभि स्थान पर गिरा कर हाथ से धीरे-धीरे मालिश कर दें। कुछ ही देर में पेट का दर्द समाप्त हो जायेगा।

२. गैस की समस्या

छोटी हरड़ को मही की भावना दीजिए। मही की भावना देने के लिए आप पहले एक किग्रा. हरड़ को साफ करके छाछ(मट्ठे) में चौबीस घंटे के लिए फूलने दें, फिर दूसरे दिन मट्ठे में से निकाल कर पानी से धो लें व इसे छाया में सूखने दें, ऐसा छः से सात बार तक करें। फिर सातवीं भावना देने के बाद हरड़ को सुखा कर महीन-महीन पीस लें, फिर इस में २५० ग्राम अजवाइन पीस कर मिला दें और स्वाद के लिए थोड़ा सा काला नमक मिलायें। तकलीफ होने पर एक चाय का चम्मच भरकर इस चूर्ण को फांक लें और पानी पी लें। दस मिनट के भीतर ही आराम मिल जाएगा।

इसका प्रयोग आप भोजन के उपरान्त नित्य एक पाचक के रूप में भी कर सकते हैं, जिससे कि गैस की शिकायत हो ही नहीं।

३. कब्ज

कब्ज दूर करने का सबसे अच्छा उपाय है, कि आप सुबह उठकर दो गिलास पानी पी लें और फिर शौच के लिए जाएं।

— चोकर युक्त आटे की रोटी बनाकर खाएं।
— कब्ज हो जाने पर बड़ी या छोटी हरड़ और मुलहटी का चूर्ण समभाग ले कर, दो छोटे चम्मच गरम जल के साथ ले लें।

यदि गर्भिणी स्त्री को कब्ज की शिकायत हो जाए तो बहुत तकलीफ होती है। ऐसी अवस्था में उसे दो बड़े चम्मच अरण्ड(रेड़ी)का तेल गुनगुने दूध में मिलाकर पिला देना चाहिए।

४. दस्त

एक पाव पानी में १५-२० ग्राम अनार के पत्ते पीस कर छान लें, और रोगी को सुबह-शाम पीने के लिए दें, इससे खूनी दस्त बंद हो जायेंगे।

यदि छोटे बच्चों को दस्त आ रहा हो तो-

प्रायः सर्दी लगने के कारण बच्चों को हरे रंग का दस्त होने लगता है। ऐसी अवस्था में एक जायफल लेकर उसे किसी साफ पत्थर पर चन्दन की तरह थोड़ा सा घिस लें। बच्चा आसानी से चाट ले, इस के लिए मिश्री की डली को भी घिस लें और उंगली से थोड़ी-थोड़ी मात्रा में सुबह-शाम चटाएं। इससे दस्त में राहत मिलेगी।

यदि गर्मी के कारण बच्चों को पतले एवं पीले दस्त आ रहे हों तो दो ग्राम सौंफ व दो ग्राम मिश्री लेकर बारीक चूर्ण बना लें और एक कप गुनगुने पानी में घोल कर छान लें। ठंडा होने पर प्रत्येक घंटे बाद एक-एक चम्मच पिलाएं, इससे फायदा होगा।

५. आंव-मरोड़

पेट में आंव या मरोड़ होने पर निम्न चूर्ण को मुंह में रख कर चबा लें, और पानी कम से कम एक घण्टे बाद पीयें।

खसखस ६ ग्राम, इलायची छोटी ५ ग्राम, मिश्री १२ ग्राम, इन तीनों को पीस कर इस चूर्ण को किसी कांच के बर्तन में बन्द करके रख दें तथा आवश्यकता पड़ने पर इसका प्रयोग करें।

६. खूनी आंव

एक छोटी गांठ सोंठ, ६ दाने छोटी हरड़ व एक ग्राम हींग लेकर इनको अलग-अलग देशी घी में तल लें। फिर १० ग्राम सौंफ तवे पर सूखा ही भून लें, तथा १०० ग्राम सौंफ बिना भूने ले लें। इन सभी वस्तुओं में स्वाद के लिए काला नमक मिलाकर इन सब का चूर्ण बना कर रख लें। एक छोटा चम्मच चूर्ण सुबह, शाम, दोपहर तीनों समय फांक कर पानी पी लें। इसको जरूरत पड़ने पर दो सप्ताह तक प्रयोग करें। पुरानी आंव भी ४०-५० दिन तक इस चूर्ण का प्रयोग करने से दूर हो जाती है।

इस प्रकार आप अपने शरीर का थोड़ा सा ध्यान रख कर बदलें में उससे ढेर सारा आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। ❑

तांत्रोक्त हनुमत कल्प

महाशैलं समुत्पाटय, धावतं रावणं प्रति।
तिष्ठ तिष्ठ रणे दुष्ट, घोर-रावत् सगुत्सृजन् ।।
लाक्षा-रसारूणं रौद्रं कालान्तक यमोपगम्,
ज्वलदग्नि लसन्नेत्रं, सूर्य कोटि समप्रभम् ।
अंगदाधैर्महा-वीरैर्वैष्टितं रुद्र-रूपिणिम्।।

अर्थात् सभी प्रकार के शत्रुओं का नाश करने वाले, अपने भक्तों की पुकार सुनकर अत्यन्त क्रोधमय स्वरूप धारण कर लेने वाले, युद्ध भूमि में श्री हनुमान लाक्षा रस के समान रक्त-वर्णीय एवं कालान्तक हो गये हैं,उनके दोनों नेत्रों से क्रोधाग्नि निकल रही है और उनका शरीर कोटि-कोटि सूर्यों की तेजस्विता के समान उज्ज्वल प्रतीत हो रहा है। रुद्र रूपी हनुमान अंगदादि महावीर गणों से घिरे हुए, घोर गर्जना करते हुए, महाशैल को उखाड़ कर रावण की ओर दौड़े और उसे ललकारते हुए कहा—ठहर जा रावण! युद्ध से पलायन मत कर। ऐसे ही वीर हनुमान सभी संकटों से हमारी रक्षा करें।

अंजनी पुत्र हनुमान अतुलनीय पराक्रमी और सर्वाधिक साहसी हैं। इनकी साधना-आराधना करने से समस्त दुष्ट शक्तियां, प्रेत बाधाएं तथा जीवन में आने वाली सभी परेशानियां स्वतः समाप्त हो जाती हैं।

श्री हनुमान को बजरंग बली, महावीर और पवनपुत्र भी कहा जाता है। इनकी साधना तो स्वयं महाप्रभु श्रीकृष्ण ने अर्जुन से सम्पन्न करवायी थी। कृष्ण ने अर्जुन को **''हनुमतकल्प''** का तांत्रोक्त विधान समझाते हुए कहा था कि यदि तुम पवनपुत्र की कृपा प्राप्त कर लोगे तो रणभूमि में ही नहीं, अपितु जीवन के किसी भी विपत्ति भरे क्षण में भी विजय व यश तुम्हें ही प्राप्त होगा।

वैसे तो श्री हनुमान जन-जन के मानस में व्याप्त

हैं ही, क्योंकि प्रायः देखा गया है कि जब भी किसी पर थोड़ा सा भी संकट आता है, तो वह अपने आप हनुमान चालीसा का पाठ करने लगता है। यहां तक कि यदि छोटा सा बच्चा भी अकेले कहीं से गुजर रहा हो, सुनसान रास्ता हो या हल्का अंधकार हो तो वह भी जोर-जोर से बोलने लगता है—"भूत पिशाच निकट नहीं आवे. . . "

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि हनुमान हमारे जीवन में, साहस के सम्बल के रूप में प्रतिक्षण साथ-साथ रहते ही हैं।

इन्हीं श्री हनुमान की साधना का **"तांत्रोक्त हनुमत कल्प"** हमें प्राप्त हुआ पूज्य गुरुदेव द्वारा। जब हम सभी लोग सम्पूर्ण भारत-वर्ष की यात्रा कर, अन्त में आध्यात्मिक नगरी काशी में पहुंचे। वहां पर "संकट मोचन मंदिर" में पूज्यपाद गुरुदेव ने अत्यन्त कृपा कर, संकट नाशक श्री हनुमान की साधना सम्पन्न करायी। उस दिन सौभाग्यवश मैं भी वहां था, और मैं उस समय बहुत अधिक उल्लसित हुआ, जब उन्होंने इस अत्यधिक गोपनीय साधना को सम्पन्न कराने की घोषणा की, क्योंकि मैं तो अपना इष्ट हनुमान जी को ही मानता हूं। उन्होंने मेरे जीवन में आने वाली अनेक बाधाओं और परेशानियों से मुक्ति दिलाई है।

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व गुरुदेव ने इस साधना में ध्यान रखने योग्य सावधानियों का वर्णन किया, जिसे उस समय मैंने अपनी डायरी में लिख लिया था। उस ज्ञान से सभी लाभ प्राप्त कर सकें, अतः उसे यहां प्रस्तुत कर रहा हूं—

१. हनुमान साधना यदि अनुष्ठान के रूप में करें तो पूरे साधना काल में पूर्णतः ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।
२. **"हनुमान विग्रह या यंत्र"** जिस पर भी साधना सम्पन्न की जाए उसे जल और पंचामृत से स्नान कराने के उपरान्त तिल के तेल में सिन्दूर मिलाकर लगाना चाहिए।
३. हनुमान साधना में लाल पुष्प, लाल वस्त्र तथा लाल आसन का प्रयोग करना चाहिए।
४. नैवेद्य के रूप में गुड़ और रोटी का चूरमा अथवा बेसन के लड्डू चढ़ाने का विधान है।
५. यह साधना दक्षिणाभिमुख होकर सम्पन्न करनी चाहिए।
६. श्री हनुमान जी की साधना स्त्री, पुरुष, बालक कोई भी कर सकता है। यह किवदन्ति है कि स्त्रियों को हनुमान साधना नहीं करनी चाहिए, यह अत्यधिक भ्रामक है। हां! यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि रजस्वला स्त्री यह साधना न करे और ना तो उस कक्ष में ही जाए जहां हनुमान अनुष्ठान हो रहा हो।
७. इनकी उपासना प्रातः, सांय अथवा रात्रि में जब भी व्यक्ति को अवसर मिले कर सकता है।
८. हनुमान उपासना में चरणामृत नहीं चढ़ाया जाता है।
९. इन्हें तुलसीदल अत्यधिक प्रिय है, अतः तुलसी की पत्ती चढ़ाते हैं।
१०. हनुमत कल्प प्रयोग के लिए मंगलवार का दिन अत्यधिक उपयुक्त होता है।

इस प्रकार सावधानियों से अवगत कराकर, गुरुदेव ने हमें एक अत्यधिक गोपनीय मंत्र दिया और उसके प्रयोग की विधि निम्न प्रकार से स्पष्ट की—

अपने सामने लाल वस्त्र बिछाकर **"संकट निवारक यंत्र"** स्थापित करें और तिल के तेल में सिन्दूर मिलाकर यंत्र पर आठ बिन्दियां लगायें। फिर ध्यान करें-

अतुलित बलधामा हेमशैला भ देहं
दनुजवनकृशानुं जातिनामाग्रगण्यम्।
सकलगुण निधान वानराणामधीशं
रघुपति प्रियभक्तं वातजातं नमामि। ।

इस प्रकार मंत्र बोलकर मन में यह भावना लायें कि श्री हनुमान की दिव्य और बलवान शक्तियां मेरे हृदय व शरीर में प्रवेश कर रही हैं। मेरे चारों तरफ के अणु उत्तेजित हो, सशक्त वातावरण का निर्माण कर रहे हैं और मेरी मनः शक्ति को बढ़ा रहे हैं।

फिर मूलमंत्र का उच्चारण करते हुए आठ लाल पुष्प अर्पित करें। फिर अपनी परेशानियों को नम्रता पूर्वक बोलते हुए उन से मुक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करें। तत्पश्चात **"रक्तवर्णीय माला"** द्वारा निम्न मंत्र का आठ माला मंत्र जप सम्पन्न करें—

मंत्र

ॐ हुं हुं हनुमतये फट्

साधना ६ अप्रैल ९५ को प्रारम्भ करें, यह मात्र एक दिवसीय प्रयोग है, किन्तु लगातार आठ दिन तक उस यंत्र पर पुष्प अर्पित करें तथा तेल का दीपक प्रज्वलित करें। फिर अपनी दैनिकचर्या सम्पन्न करें। नौवे दिन यंत्र तथा माला को किसी तालाब, कुंए या नदी में विसर्जित कर दें।

इस प्रकार हनुमत कल्प प्रयोग सम्पन्न करने वाले साधक के जीवन में विद्या, धन, राज्यबाधा और शत्रुबाधा समाप्त हो जाती है, तथा जो कुछ भी साधक की इच्छा होती है, उसे वह वर प्राप्त होता ही है। ❑

आपके जीवन का अमूल्य अवसर

पूज्यपाद गुरुदेव

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी

एवम्

श्री नन्द किशोर श्रीमाली जी

के सान्निध्य में . . .

महामृत्युञ्जय साधना शिविर

दिनांक २४ से २७ फरवरी १९९५ तक

विशिष्ट दीक्षाएं –

१. ऊर्ध्वपात दीक्षा
२. त्रिनेत्र जागरण दीक्षा
३. अन्य विशिष्ट दीक्षाएं जो आप के लिए लाभदायक हैं।

दुर्लभ साधनाएं –

१. महामृत्युञ्जय साधना
२. महालक्ष्मी साधना
३. कात्यायनी काम्य सिद्धि प्रयोग

शिविर शुल्क : ६६०/-

साथ ही . . .

पूज्य गुरुदेव व उज्जैन के श्रेष्ठ पण्डितों द्वारा भूत-भावन भगवान महाकालेश्वर का भव्य रुद्राभिषेक तथा पूर्ण विधान युक्त चारों वेदों से पारदेश्वर पूजन।

सम्पर्क

1- श्री टी० सुब्बाराव, 4/1 सी. पी. आर. आई. कॉलोनी, भोपाल, फोन : 0755-589282
2- श्री पूर्णेश चौबे, जी-5, कुक्षी, धार (म.प्र.)
3- श्री ओम प्रकाश शर्मा, 321,अम्बेडकर नगर, होटल सुहाग के पीछे, इन्दौर, फोन - 21030 (P.P.)
4- श्री विजय गुप्ता, कालानी नगर, इन्दौर, फोन-412400
5- श्री अमित सक्सेना एवं निखिल वाणी टीम, भोपाल
6- श्री ब्रज मोहन चौहान, सब-इंजीनियर, खातेगांव

आयोजन स्थल : महाकालेश्वर मंदिर के निकट, उज्जैन

महाशिवरात्रि
के पावन पर्व पर
सम्पूर्ण मनोकामना प्राप्ति हेतु
२४, २५, २६ और २७ फरवरी १९९५
उज्जैन
एक अद्वितीय शिविर

"**महाशिवरात्रि**" के पावन पर्व पर सम्पूर्ण भारत वर्ष
से प्रत्येक शिष्य को सपरिवार आना ही है, **यही मेरी आज्ञा है।** – **गुरुदेव**

देह सुख, निरोगता, ऐश्वर्य, धन प्रदायक साधनाएं

(१) **महामृत्युञ्जय साधना** (२) **महालक्ष्मी साधना**
(३) **कात्यायनी कामना सिद्धि प्रयोग**

ऐसी साधना बार - बार सम्भव नहीं है। प्रत्येक शिष्य को इस शिविर में भाग लेना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। यह प्रत्येक शिष्य के लिए आमन्त्रण है, पूज्य गुरुदेव की ओर से . . .

सम्पर्क

श्री गुरु सेवक श्रीवास्तव जी
श्री के. आर. कुर्रे, बजरंग चौक, रायपुर, फोन - 533479
श्री गोविन्द लाल सोनी, आलोट, रतलाम
श्री टी० सुब्बाराव, 4/1 सी. पी. आर. आई. कॉलोनी, भोपाल, फोन : 0755-589282
श्री विजय चौहान, काली देह गेट, उज्जैन

– विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें –

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7186700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन - 0291-32209, फेक्स - 0291-32010

आपको आना ही है . . . — गुरुदेव

२४ से २७ फरवरी १९९५

देव दुर्लभ साधना

महामृत्युञ्जय साधना शिविर
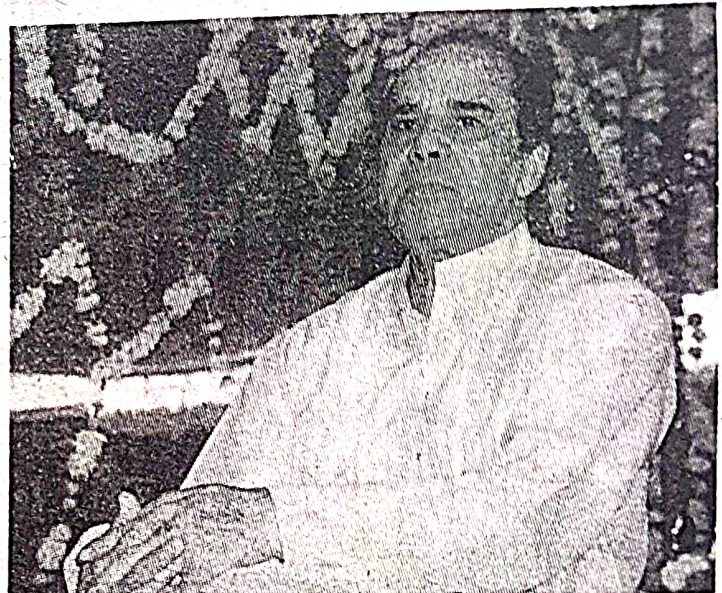
जिसमें जीवन के समस्त सिद्धियों को प्राप्त करने का दिशा निर्देश होगा

जिसमें प्रकृति के उन गूढ़ रहस्यों का उद्‌घाटन होगा जो अभी तक अज्ञात हैं।

जिसमें जीवन की समस्त न्यूनताओं को समाप्त करने की क्रिया होगी।

शिविर शुल्क : ६६०/-

और यह सब सम्भव हो सकेगा पूज्यपाद गुरुदेव के आशीर्वाद तले।

सभी साधक-साधिकाओं, शिष्य-शिष्याओं के लिए अद्वितीय अवसर आप रुक नहीं सकेंगे।

सम्पर्क : श्री गुरु सेवक श्रीवास्तव
श्री हरिओम इलेक्ट्रिकल्स, फोन - 0734-23953
श्री पूर्णेश चौबे, जी-5, कुक्षी, धार (म.प्र.)

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें –

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7186700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन - 0291-32209, फेक्स - 0291-32010

होली महापर्व तांत्रोक्त अचूक सिद्धिदायक

१०८

सफल सिद्ध प्रयोग

माह फरवरी १९९४ में प्रकाशित तंत्र के १०८ गोपनीय प्रयोगों का पाठकों ने अत्यन्त खुले हृदय से स्वागत किया, और उन लघु प्रयोगों को अपनाकर उन्होंने अपने जीवन की अनेक छोटी-बड़ी समस्याओं से मुक्ति प्राप्त की। सन् ९४ से पूरे सालभर हमें पाठकों एवं साधकों के पत्र तथा टेलीफोन द्वारा उनके विनम्र निवेदन प्राप्त होते रहे, कि इस बार होली के अवसर पर सम्पन्न होने वाले लघु तंत्र प्रयोगों का पुनः प्रकाशन करें अथवा इनके अलावा यदि अन्य प्रयोग हैं, तो श्रृंखलाबद्ध उसे आगे बढ़ाते हुए जन-सामान्य के हितार्थ प्रकाशित करें, साथ ही इन प्रयोगों का प्रकाशन होली से कुछ समय पूर्व करें, जिससे कि हम सभी प्रयोगों का पूर्ण लाभ प्राप्त कर सकें।

इन सब पाठकों के अनुरोध को ध्यान में रखकर इस बार **नूतन वर्ष १९९५** के प्रारम्भिक अंक में ही होली पर सम्पन्न किए जाने प्रयोगों को प्रकाशित कर रहे हैं। इन प्रयोगों को आप होली के बाद भी पन्द्रह दिनों तक इन पूरे दिवसों में सम्पन्न कर सकते हैं, तथा पूरे वर्ष में पड़ने वाले किसी भी रविवार को इन्हें सम्पन्न कर सकते हैं। प्रस्तुत है यह **सर्वथा गोपनीय सिद्ध, तुरन्त फलदायक तंत्र के १०८ अचूक प्रयोग –**

खड़बिड़ा

१. पुरुषों के लिए खड़बिड़ा साक्षात् कामदेव का उपहार है।
२. जिनके भाग्योदय में बार-बार अड़चनें आ रही हों, उन्हें इसी गुटिका को पीस कर उसका पाउडर रविवार को दक्षिण दिशा की ओर फेंक देना चाहिए।
३. यदि पत्नी को अपने अनुकूल बनाना हो तो इस गुटिका को गले में धारण करें।
४. पूर्ण गृहस्थ सुख के लिए होली के दिन इस गुटिका को अपने घर के पूजा स्थान में स्थापित कर दें।
५. पति-पत्नी के विचारों में पूर्ण तादात्म्य बनाये रखने के लिए भी यह लाभदायक सिद्ध होती है।

अंकवारी

६. सुयोग्य पुत्र-पुत्री की प्राप्ति तथा उन्नति के लिए इस गुटिका का विशेष महत्व है, इस गुटिका को गर्भवती स्त्री को गर्भकाल में धारण करके रखना चाहिए।

७. यदि किसी स्त्री को गर्भ न ठहरता हो, तो उसे यह गुटिका धारण करवाएं।

८. यदि कोई शत्रु अनायास ही पीड़ा दे रहा हो, तो व्यक्ति को चाहिए कि वह होली की रात्रि को इसे स्थापन कर स्फटिक माला से एक माला मंत्र-जप सम्पन्न करें—

मंत्र

ॐ हुं शत्रुमर्दिन्यै फट्

९. छोटी-मोटी बाधाएं आ जाने पर इस गुटिका को अपनी जेब में रख लेने से, दूर की जा सकती है।

१०. पुत्र रक्षा हेतु इस गुटिका को पुत्र के सिरहाने रख देना चाहिए।

अंकड़ी

११. यदि कोई व्यक्ति लिया हुआ धन वापस न कर रहा हो, तो इस पर उसका नाम बोल कर किसी कुंए में इसे विसर्जित कर देने से वह धन प्राप्त हो जाता है।

१२. इस दुर्लभ वस्तु का स्थापन केवल धन रखने के स्थान पर ही करना चाहिए।

१३. घर की तिजोरी में इसे स्थापित करने पर यदि कोई बन्ध प्रयोग किया या कराया गया होता है, तो वह भी समाप्त हो जाता है।

१४. होली के पर्व पर यदि इसका पूजन कर इसे घर में स्थापित किया जाए, तो लक्ष्मी का उस घर में सदैव ही निवास रहता है।

१५. इसके स्थापन से घर में व्याप्त पाप-दोष या तंत्र दोष स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं।

खंगड़

१६. इस फल के स्थापन से तांत्रोक्त साधनाओं में सफलता शीघ्रता से मिलने लगती है।

१७. खंगड़ फल के स्थापन से मनोवांछित कार्य शीघ्रता से पूर्ण किए जा सकते हैं।

१८. व्यापारिक उन्नति के लिए इस फल को होली की रात्रि में दुकान या फैक्टरी में गाड़ देना चाहिए।

१९. ऐश्वर्य प्राप्तिं के लिए इस श्रेष्ठ फल को घर में होली-पर्व पर स्थापित करना ही चाहिए।

२०. जिसके पास भी यह फल होता है उसे सट्टे या शेयर बाजार में सफलता मिलती ही है।

अंखूर

२१. इसे अंगूठी में धारण करने पर स्त्री आकर्षित हो जाती है।

२२. परीक्षा में अच्छे नम्बर प्राप्त करने हेतु इसे उंगली या गले में धारण कर लेना चाहिए।

२३. व्यापार एवं नौकरी प्राप्ति के लिए भी इसे उंगली में पहिन लेना चाहिए।

२४. यदि किसी के विवाह में बार-बार अड़चनें पैदा हो रही हों, तो इसे धारण करने पर उन बाधाओं से मुक्ति मिल जाती है।

२५. शीघ्र विवाह हेतु इसे धारण कर लेना चाहिए।

ईर्षा

२६. यदि किसी प्रश्न का उत्तर न मिल रहा हो, तो इसे अपने सिरहाने रख कर उस प्रश्न को बोलकर सो जाने पर, स्वप्न में ही उस प्रश्न का उत्तर मिल जाता है।

२७. इसे अपने सिरहाने रखकर सो जाने से भूत - भविष्य के बारे में जान सकते हैं।

२८. पैतृक-सम्पत्ति प्राप्त करने के लिए इसे अपनी तिजोरी में रख दें।

२९. इसके स्थापन से साधक के समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं।

३०. इसका पूजन कर दक्षिण दिशा में इसे फेंक देने से राज्य बाधा को दूर किया जा सकता है।

दीप्तिका

३१. होली के पर्व पर इसे श्रद्धापूर्वक गले में धारण करने पर, शीघ्र ही मनोवांछित फल प्राप्त होता है।

३२. यह भाग्योदय गुटिका है।

३३. इसे घर में स्थापित करने से मांगलिक कार्यों में किसी भी प्रकार की बाधा या अड़चन नहीं आती।

३४. इस गुटिका को रोगी के ऊपर से सात बार घुमाकर नदी अथवा कुंए में डाल देने से, उसका रोग समाप्त हो जाता है।

३५. इस गुटिका को घर की चौखट के बाहर गाड़ देने से शत्रु द्वारा किए गए हमले से बचा जा सकता है।

३६. और ऐसा करने पर मूठ प्रहार से भी बचा जा सकता है।

उत्तमर्ण

३७. उत्तमर्ण को लाल कपड़े में रखकर, बाजू में बांध लेने से शारीरिक कुरूपता समाप्त होने लग जाती है।

३८. इसे गले में धारण करने पर, यह स्त्री सौन्दर्य की वृद्धि में विशेष लाभदायक सिद्ध होता है।

३९. चेहरे पर किसी भी प्रकार के धब्बे या निशान हों, तो उसे, इसी प्रकार गले में पहिनने से, दूर किया जा सकता है।

४०. इसके स्थापन से सुन्दर सन्तान की प्राप्ति सम्भव है।

४१. इसको बाजू में बांध लेने से साधारण मानव भी पराक्रमी बन जाता है।

चण्डांशु

४२. इस मुद्रिका को उंगली में धारण करने से जीवन में यश, वैभव, मान-सम्मान की प्राप्ति होती है।

४३. इसे उंगली में धारण करने से आने वाली बाधाओं का पहले से ही आभास होने लगता है।

४४. यदि प्रेमी का मन बदल जाए, तो इस मुद्रिका को पहिन लेने से उसे वापस अपनी ओर आकर्षित किया जा सकता है।

४५. इस मुद्रिका को पहिन लेने से मानसिक तनावों से मुक्ति प्राप्त हो जाती है।

४६. आपसी कलह व शत्रुता का नाश करने हेतु यह मुद्रिका पूर्ण लाभदायक है।

जपनी

४७. जपनी को गले में धारण करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए श्रेयस्कर सिद्ध होता है।

४८. होली के महापर्व पर इस ताबीज की पूजन कर, यदि साधक इसे गले में धारण कर कोई भी साधना सम्पन्न करता है, तो उसका फल शीघ्र ही प्राप्त होता है।

४९. इसे धारण करने से उस व्यक्ति की अकाल मृत्यु नहीं हो सकती।

५०. उस व्यक्ति के लिए धनागम के स्रोत खुल जाते हैं।

५१. दरिद्रता दूर हो जाती है।

शतहनी

५२. यदि स्तम्भन शक्ति का अभाव हो तो एक शतहनी मुट्ठी में रखकर **"रति क्रीड़ा"** में संलग्न होना **"वीर्य स्तम्भन"** का अचूक टोटका बताया गया है।

५३. छोटे बच्चों की बीमारियां दूर करने के लिए इसे बालक के सिर पर घुमाकर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें।

५४. होली की रात्रि को इसे होलिका जलने के समय अग्नि में डाल दें, तो पूरे परिवार की पूर्ण सुरक्षा वर्ष भर रहती है।

५५. कैसी भी विपत्ति आये, एक शतहनी सूखे कुंए में डाल देने से वह तुरंत समाप्त हो जाती है।

५६. इसे अपने सिरहाने रखने से व्यक्ति को निद्रा स्तम्भन के क्षेत्र में पर्याप्त सहायता मिलती है।

वेष्टण

५७. भूत-प्रेत बाधा विकट हो तो इस जड़ी द्वारा १०८ बार झाड़ा देने से वह बाधा दूर हो जाती है।

५८. यदि व्यक्ति भूत-प्रेत साधना करने का इच्छुक हो, तो इसे धारण कर साधना करें।

५९. यदि घर में सर्प आदि विषैले जीव छिपे हों, तो इसके स्थापन मात्र से ही वह स्वतः घर छोड़ कर दूर चले जाते हैं।

६०. इसे अपने सामने स्थापित कर **वेताल साधना** करने से उस साधक को **वेताल सिद्धि** प्राप्त हो जाती है।

आनुपूर्वी

६१. यह सौन्दर्य-वर्द्धन का अचूक उपाय है।

६२. यदि सौन्दर्य में चमक न हो, चेहरे पर झाइयां हों अथवा मुहांसे आदि के कारण सौन्दर्य दब गया हो, तब इस मुद्रिका को धारण कर लेना ही पर्याप्त है।

६३. इस मुद्रिका को पहनने से प्रेम-प्रसंगों में अनुकूलता बनी रहती है।

६४. यह मुद्रिका अपने-आप में पूर्ण पौरुष प्रदायक एवं सुखदाता कही गई हैं।

६५. यह समस्त प्रकार के भय का नाश करने में भी सहायक है।

६६. यह किसी को भी अपनी ओर आकर्षित होने के लिए बाध्य कर देती है।

स्वनित

६७. इसे गले में पहिन लेने से किसी भी आगामी घटना की जानकारी स्वप्न के माध्यम से मिल जाती है।

६८. इसके स्थापन से अपने भूत-भविष्य को भी जाना जा सकता है।

६९. पिछले जीवन के पाप-दोषों की भी जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

७०. इसके स्थापन से उन दोषों को समाप्त कर सुखमय जीवन का निर्माण किया जा सकता है।

७१. पत्नी से कलह होने पर, शांति के लिए इसे धारण करना चाहिए।

स्रक

७२. यह शत्रु बाधा निवारण गुटिका है।

७३. इसे शत्रुओं का नाम लेकर चूल्हे या अंगीठी में डाल देने से शत्रुता का विनाश किया जा सकता है।

७४. शत्रु द्वारा किए गए टोने-टोटकों के प्रभाव को समाप्त किया जा सकता है।

७५. शत्रु का नाम लेकर इस गुटिका को उस शत्रु के घर की दिशा में फेंक देने से, शत्रु कभी हावी नहीं हो सकता।

७६. इस गुटिका द्वारा पुरानी शत्रुता को भी दूर किया जा सकता है।

ब्रात्य

७७. इसे बाईं बांह पर बांध लेने से व्यक्ति को होने वाली दुर्घटनाओं का आभास पहले से ही हो जाता है।
७८. इसे धारण कर अकाल-मृत्यु नहीं हो सकती।
७६. इसके स्थापन से कोई भयानक बीमारी या एक्सीडेन्ट न होकर, बचाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।
८०. इसका घर में स्थापन स्वास्थ्य के लिए विशेष लाभदायक है।
८१. वह व्यक्ति हर समय स्वस्थ एवं तन्दुरुस्त दिखाई देता है, जिसके घर में इस गुटिका का स्थापन हो।

व्रीडा

८२. इसे गले में धारण करने से मनचाहे प्रेमी की प्राप्ति होती है।
८३. प्रेमी स्वतः ही उसकी ओर आकर्षित हो जाता है।
८४. हर क्षण उमंग, जोश और आनन्द उसके चेहरे से झलकता हुआ दिखाई देता है।
८५. इसे धारण कर "मनोकामना पूर्ति प्रयोग" सम्पन्न करने पर, व्यक्ति को उसमें शीघ्र ही सफलता प्राप्त होती है।
८६. इसे गले में धारण कर लेने से उसकी समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति होने लगती है।

नीलमणि

८७. इस को स्थापित कर यदि **"लक्ष्मी साधना"** सम्पन्न की जाए, तो उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त होती ही है।
८८. **"वसुधा लक्ष्मी"** की साधना भी इसी दुर्लभ नीलमणि पर शीघ्रता से सम्पन्न की जा सकती है।
८६. यह सम्मोहन के अतिरिक्त प्रभावों से भी संयुक्त होती है।
६०. इस को गल्ले में स्थापित कर देने से व्यापार में कभी मंदा नहीं पड़ता।
६१. जीवन में समस्त प्रकार के भोगों एवं सुखों की प्राप्ति होती है।

स्तबक

६२. इसे होली पर्व पर स्थापित कर, नित्य एक माला मंत्र जप कर, १५ दिन बाद रोगी के ऊपर से घुमा कर फेंक देने से बड़ी-बड़ी बीमारियों को दूर किया जा सकता है।
६३. यदि किसी को कैंसर हो, तो उस रोगी के गले में इसे पहिना कर निम्न मंत्र का नित्य एक माला जप करने से उसे आराम मिलता है —

मंत्र

ॐ ह्रीं सर्व बाधा रोग शोक निवारिण्यै ज्वालामालिन्यै नमः

६४. यदि किसी की आंखों की रोशनी मंद पड़ गई हो, तो उपरोक्त मंत्र-जप कर इसे धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।
६५. यदि किसी की कमर में पुराना दर्द रहता हो, तो वह भी एक माला मंत्र-जप कर इसे धारण करने से दूर किया जा सकता है।
६६. यदि किसी को डरावने स्वप्न आते हों, तो इसी प्रकार "स्तबक" का प्रयोग करने से, उसके मन से इस भय को हमेशा के लिए दूर किया जा सकता है।

आख्यातिका

६७. इसे घर के किसी गुप्त स्थान पर रख देने से निम्न लाभ प्राप्त होते हैं—
६८. ऋण मुक्ति में सहायता।
६६. आकस्मिक धन की प्राप्ति।
१००. धन अच्छे कार्यों में व्यय होता है।
१०१. आर्थिक दृष्टि से उस व्यक्ति के जीवन में किसी प्रकार की कोई बाधा उत्पन्न नहीं होती।
१०२. गड़ा धन प्राप्त होता है।

किलोलिनी

१०३. इसे गले में धारण करने से मन हमेशा प्रसन्नचित्त बना रहता है।
१०४. उस व्यक्ति के चेहरे पर एक अजीब सा भोलापन एवं आकर्षण दिखाई देने लगता है।
१०५. उसका चेहरा ही नहीं, अपितु पूर्ण शरीर ही तेजस्वी एवं प्रभावयुक्त हो जाता है।
१०६. उस व्यक्ति के पास बैठने अथवा उससे बात करने में लोग अपनी शान समझने लगते हैं।
१०७. उस व्यक्ति से बात कर लोगों के मन को एक विशेष प्रकार की तृप्ति प्राप्त होने लगती है।

सौशील्य

१०८. किसी मुकदमें की सुनवाई के लिए जाते समय, इसे अपनी जेब में रखने से निश्चित ही सफलता प्राप्त होती है।

प्रस्तुत साधना में वर्णित सामग्री को उन दुर्लभ तंत्र-ग्रंथों से चुना गया है, जिनके बारे में यह धारणा प्रचलित है, कि ये सभी गंथ लुप्त-प्राय हो चुके हैं। **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** पत्रिका का लक्ष्य ही यही है, कि लुप्त ज्ञान को पुनः सर्वजन्य के समक्ष प्रस्तुत करना, जिससे वे इनसे होने वाले लाभों को प्राप्त कर सकें। ❑

विरहिन मनवा फिर बोल उठा है— प्रियतम मेरे! कुछ खबर है तुम्हें? अन्तस में फिर हूक सी उठी है, कुछ सुना तुमने? हृदय चुरा कर छिपने वाले मेरे चितचोर! आखिर कब तक बेखबर रहेगा तू मुझसे?

तू सर्वज्ञ है, मानती हूं मैं, पर इन नयनों की भी कुछ खबर है तुझे? रात दिन तेरी ही छवि नाचती है इन में. . . वह हृदयग्राही मुस्कान, वह स्वप्निल आंखें तेरी, वह दिव्य पद्म गन्ध, वह अलमस्त हंसी तेरी . . . कैसे समझाऊं इन बावरे नयनों को? कैसे रोकूं इस अविरल अश्रुधारा को? कुछ तो उपाय कर, इन भीगी पलकों की कोर में तेरा ही तो बसेरा है।

सोचती हूं कभी. . . वह रहस्य क्या था? एक पल को नजरें ही तो मिली थीं, एक क्षणिक झलक ही तो मिली थी, पर क्या कुछ घटित हो गया? एक लपट सी उठी, एक शोला सा भड़का, जला गया वह जो स्याह था हृदय पर, एक हलचल सी मची, अहसास करा गयी उस सरगम का, जिसे लिये फिर रही थी मैं।

तेरा वह मिलना, जैसे किसी अनछुई कली का पुष्प बनना, भोर की पहली किरण का उदित होना, तप्त मरुस्थल में रिमझिम फुहार का बरसना, सम्पूर्ण वन प्रान्तर का तेरी मधुरिमा से ओत-प्रोत होना, गुलाब की सुरभिमय डाली का लचक कर झूम उठना और . . . आनन्द के उस मानसरोवर

में मेरे अस्तित्व का डूब जाना।

और फिर बज उठी थी मेरे मन की मुरलिया, हृदय वीणा के तार झंकृत हुए थे, दो हृदय मिले थे— एक जागा हुआ, एक सोया हुआ, और एक महाकाव्य सा घटित हो गया था. . . जन्मा था एक नृत्य-अद्‌भुत सा. . . जीवन्त सा और चन्द्रमा की शीतल चांदनी बन तू मेरे प्राणों पर छा गया था।

न तेरी बात समझ पायी मैं, न तेरे राज का ही कुछ पता चला। जल्दी भी क्या है? समझ लूंगी कभी। पर तू दिव्य देही कुछ मुझसे बोला, कुछ कहने योग्य समझा, यही क्या कम है? मेरे हृदय पात्र में स्वयं को उड़ेला तूने, यही काफी है मेरे जीने के लिये, समझने की आवश्यकता ही कहां है?

पर वह झलक आयी और चली गयी। हृदय में एक हूक सी उठी, एक टीस सी उत्पन्न हुयी. . .अनूठी भी, असहनीय भी। एक फूल सा खिला अनदेखा, अनछुआ सा जिसकी सुवास भिगो गई मेरे अन्तर को, एक दीपक सा जला, एक क्षण में जला।

और राजी हुई तेरे रंग में रंगने को. . . राजी होना ही था, क्योंकि **तेरी उपस्थिति जीवन से भी अधिक मूल्यवान प्रतीत हुई। यह सच है कि तू सुदूर आकाश में है और मैं धरा पर। देह ने बांध रखा है मुझे और तू मुक्त है। मन से दबी हूं मैं और तू परे है मन के। दूरी अधिक है, राहें भी अपरिचित, पर पार कर लूंगी यह विश्वास है। मिलना ही है मुझे, अब रुक नहीं सकती।**

फिर निकल पड़ी अकेली ही प्रीत की अनजानी डगर पर। प्रारम्भ हुआ वृक्ष से,फूलों से, झरनों से, नदियों से। गुजरी मैं प्रकृति की सुन्दरतम पगडन्डियों से। कोयल के गीत सुने, पपीहे की पुकार सुनी, चातक को टकटकी लगाये चांद को निहारते भी देखा, पर तेरी मस्ती के आगे कोयल की कूक भी फीकी पड़ गयी, पपीहे की पुकार में कुछ विशेष न रहा, सब कुछ बेमानी, व्यर्थ सा ही लगा।

कहां-कहां नहीं ढूंढ़ा तुझे? पर तुम न जाने किस अतल में छिप गये हो। पक्षियों के कलरव गान में, वृक्षों, में, पहाड़ों में, चांद-तारों में. . . हर जगह पुकारा है मैंने, रोम-रोम से आवाज दी है तुम्हें, गीतों में ढाला है तुम्हें, नृत्य में उतारा है तुम्हें।

. . .पर मेरे प्रिय! यह प्यास तो दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही है। एक विराट प्यास बन चुकी हूं मैं, एक अहर्निश पुकार बन चुकी हूं मैं। वह तड़फ, वह कशिश, वह विरह की पीड़ा, सब बाहर आने लगी है, आंसू छलछला उठे हैं, कंठ अवरुद्ध हो चुका है। एक विचित्र सी कसमसाहट अनुभव कर रही हूं। यह प्यास कहां से उठती है, इस में पीड़ा व आनन्द दोनों एक साथ कैसे है? यह मुझे समझ नहीं आता!

और उन्हीं अश्रुओं की झिलमिलाहट में तेरा अक्स भी मिला है। धीमी-धीमी पगध्वनि भी सुनाई पड़ने लगी है. . . पर जैसे ही वह झलक मिलती है एक गहन प्यास जग उठती है, ऐसी प्यास जिसे बुझाने का उपाय इस जगत में है ही नहीं। तू आएगा तभी वह झरना फूटेगा, तभी वह प्यास तृप्त होगी।

पर यह तेरे प्रेम की पीड़ा भी अनूठी है, अत्यन्त मधुर. . . कैसा विरोधाभास है, जैसे गुलाब की झाड़ी में कांटों से बिंधना। सोचती हूं अभी तो अनुगूंज, प्रतिध्वनि ही सुनी है, बांसुरी सुनूंगी तो क्या होगा? अभी तो प्रतिबिम्ब ही देखा है, चन्दा को निहारूंगी तो क्या होगा? बिन देखे ही जब ऐसी लगन लगी तो दर्शन करूंगी तो क्या होगा?

दिल पर गहरा नक्श है साथी लाख तेरी दानाई का
सात समंदर भी तो न पाएं राज मेरी गहराई का
चश्म-ए-खूं में डूब गयी बारात सुहाने तारों की
बोझल पलकों पर गहराया चांद मेरी तनहाई का
झूम रहे हैं काले बादल दरस की प्यासी आखों में
काजल बन कर फैल गया है दाग मेरी रुसवाई का

इसलिए विरहासक्त हो चुकी हूं मैं! इन आंसुओं से भी प्रेम हो गया है मुझे! ये तो फूलों की नाजुक पंखुड़ियां हैं, जिनमें तेरी ही सुगंध रची बसी है। ये तो चांद-सितारे हैं जो तेरी ही दमक से आसमान में रोशन हैं। तू जो भी करा ले, पास बुलाए, दूर भेजे, हंसाए या रूलाए, तृप्त करे या अतृप्त बना दे, प्यास भड़काए या फिर मेघ बनकर बरस जाए. . . तेरे अनुरूप ही रह लूंगी मैं।

तूने रूलाया है मुझे, यही क्या कम है? अधिकांश नयनों को आंसुओं का सौभाग्य मिलता ही कहां है? मैं तो धन्यभागी हूं कि तूने कुछ किया, मुझे तड़पाया, मिलने की आकांक्षा जगाई, अभीप्सा उत्पंन्न की और इस भक्ति के, इस प्रेम के कंटीले मार्ग पर मुझे ले चला।

पर उन कांटों में भी फूल खोज लिए हैं मैंने। आंसुओं को भी संजो कर रख लिया है, एक सुन्दर चित्र बनाने के लिए। **ये अश्रु संकेत हैं कि तू कितने भी प्रयत्न कर ले, कितने ही आवरण चढ़ा ले, पर अब छिपा नहीं सकता स्वयं को। मैं खोज ही लूंगी तुझे, भला सुगंध को फूल से लिपटने में कौन रोक सका है? सूर्य की किरण को पृथ्वी को चूमने से कौन रोक सका है? घुमड़ते मेघों से बातचीत करने से मयूरी को कौन बांध सका है? मानसरोवर रूपी प्रियतम में डूब जाने से हंसिनी को कौन रोक सका है?**

तो फिर मुझे भला कौन रोक सकेगा? शाश्वत नाता है यह तो, मानों कई जन्मों से चला आ रहा हो। आत्माओं के बीच का मिलन है यह तो, एक अद्‌भुत सी प्रेम सगाई है यह तो— काल से परे, बंधनों से मुक्त। विस्मरण का कोई उपाय ही नहीं है. . . जितना ही भुलाने की कोशिश करती हूं, तू उतना ही अधिक याद आता है, उतना ही अधिक निकट आ जाता है।

और पुनः मेरे प्राणों पर, चिन्तन पर, विचार पर, भावनाओं पर और जीवन पर छा जाता है। आंखों में आंसू भर कर छलकने लग जाता है, होठों पर मुस्कराहट बन थिरकने लग जाता है। अब तो यह सम्बन्ध मेरी उच्छवास से, आहों से, बेचैनी से, और तड़फ से अत्यन्त दृढ़ हो गये हैं, विस्मरण का प्रश्न ही कहां उठता है?

पर उस विराट आकाश को बांहों में कैसे समेटूं मैं? उस सम्पूर्ण हिमालय को कागज के टुकड़ों पर कैसे अंकित करूं? यह तो संभव ही नहीं है मेरे लिए. . . पर प्रियतम मेरे! तुम्हारी स्मृति की लेखनी को अपने आंसुओं की स्याही में भिगोकर मन के कागज पर कुछ बिम्ब, कुछ भावनाएं अंकित की हैं मैंने, वेदना और उच्छवास की पलकों से कुछ - कुछ पहिचाना है तुम्हारे विराट व्यक्तित्व को, विरह की मधुर छाया में गुनगुनाहट के गीत बिखेरे हैं, ये गीत हवा के पंखों पर उड़कर स्वतः तुम्हारे पास आ जाएंगे।

और आंसुओं के उन छंदों को पढ़ते ही, प्रिय! तुम चले आना, मेरे सीने से उठी सिसकारी को सुन लेना, मेरे अश्रुओं के अर्घ्य को स्वीकार करना, छटपटाहट से भरे मेरे दिल की भेंट को अपना लेना, वियोग की धूप में झुलसी हुई इस आत्मा को, स्वयं में समेट लेना।

एक बार तो स्मरण करो प्रिय! युगों- युगों से प्रतीक्षारत हूं मैं, इन्तजार में आंखें पथरा सी गई हैं। पूरी राह पर अपने शरीर की सुगन्ध बिखेर दी है, दिल की धड़कन को हर कदम की आहट पर खड़ा कर दिया है, पूरे रास्ते पर बिछा दिया है अपने सीने की धड़कनों को. . . जिस पर पांव रखते हुए तुम आ सको।

और बिछा दिया है आंखों के महल में पुतली का पलंग कि तुम आओ और उस पर विश्राम कर सको. . . और फिर पलकों का घूंघट डाल दूंगी कि कोई अन्य तुम्हें देखे नहीं. . . फिर सांसों की वीणा पर दिल का संगीत छेड़ कर रिझाऊंगी तुम्हें, अंदर उतारूंगी तुम्हें, तन, मन, प्राणों से एकाकार हो जाऊंगी मैं।

कितना मधुर स्वप्न है प्रिय! साकार हो जाएगा, तुम आओ तो सही, बस एक बार आ जाओ, यह बावरी तुम्हें यूं ही पुकारती रहेगी. . .यूं ही पुकारती रहेगी। ❑

किसी भी अप्सरा, यक्षिणी आदि की साधनाएं तो प्रत्येक साधक सिद्ध करने के लिए लालायित रहता है, पर "कर्ण पिशाचिनी साधना" को सम्पन्न करने से पहले वह साधक एक प्रकार की झिझक या डर महसूस करने लगता है, इसका कारण यह है, कि कर्ण पिशाचिनी साधना से पूर्णरूप से परिचित न होने पर, इस शब्द को सुनते ही प्रत्येक व्यक्ति या साधक भयभीत हो उठता है, जिसके फलस्वरूप वह इस महत्वपूर्ण साधना से वंचित रह जाता है, जो उसके जीवन को सम्पन्नता प्रदान करने की एक आवश्यक एवं महत्वपूर्ण साधना है, जिस साधना को सिद्ध कर व्यक्ति श्री, वैभव, ऐश्वर्य, यश, मान, प्रतिष्ठा, सुख-सम्पन्नता सब कुछ प्राप्त कर सकता है।

समाज में फैली गलत भ्रांतियों के कारण ही बहुत कम लोग इस साधना से परिचित हो सके हैं, और जो इस साधना से परिचित हैं, उन्होंने इसे उजागर नहीं किया, क्योंकि इससे उनके हितों पर आघात पहुंचता था।

कर्ण पिशाचिनी के नाम मात्र से ही व्यक्ति इसके स्वरूप का गलत अंकन अपने मस्तिष्क में बैठाकर इस दुर्लभ साधना को करने से पहले ही आशंकित एवं भयभीत हो जाता है। वह घबराने लगता है कि कहीं इस साधना को सम्पन्न कर वह किसी मुसीबत या परेशानी में न फंस जाए या गलत ढंग से इसे सम्पन्न कर इसका बुरा प्रभाव सामने आने पर वह किसी विपत्ति में न पड़ जाए।

सबसे पहले आपके मन से इस भ्रम को दूर करना आवश्यक हो गया है, जिससे कि आप इसके गूढ़ अर्थ को भली प्रकार से जानकर इस साधना का लाभ उठा सकें।

कर्ण पिशाचिनी एक जाति है, जिस प्रकार समाज में या ब्रह्माण्ड में अनेकों वर्ग हैं, जैसे- ब्राह्मण, क्षत्रीय, राक्षस, देवता, आदि उसी प्रकार पिशाचिनी भी एक वर्ग है। इस बात से यह स्पष्ट होता है कि पिशाचिनी किसी भूत-प्रेत का नाम नहीं, अपितु एक वर्ग विशेष का नाम है, और इसकी साधना सम्पन्न करने पर किसी भी प्रकार का नुकसान या बुरा प्रभाव साधक पर नहीं पड़ता।

यह एक गोपनीय और महत्वपूर्ण साधना है, जिसे सम्पन्न कर व्यक्ति अपने या किसी के भी भूतकाल को स्पष्ट कर सकता है।

भारत में ऐसे सैकड़ों साधु-संन्यासी हैं, जो किसी अनजान व्यक्ति को देखते ही उसके भूतकाल की घटनाओं को ज्यों का त्यों स्पष्ट कर देते हैं, जिसे लोग "चमत्कार"

कर्ण पिशाचिनी यंत्र
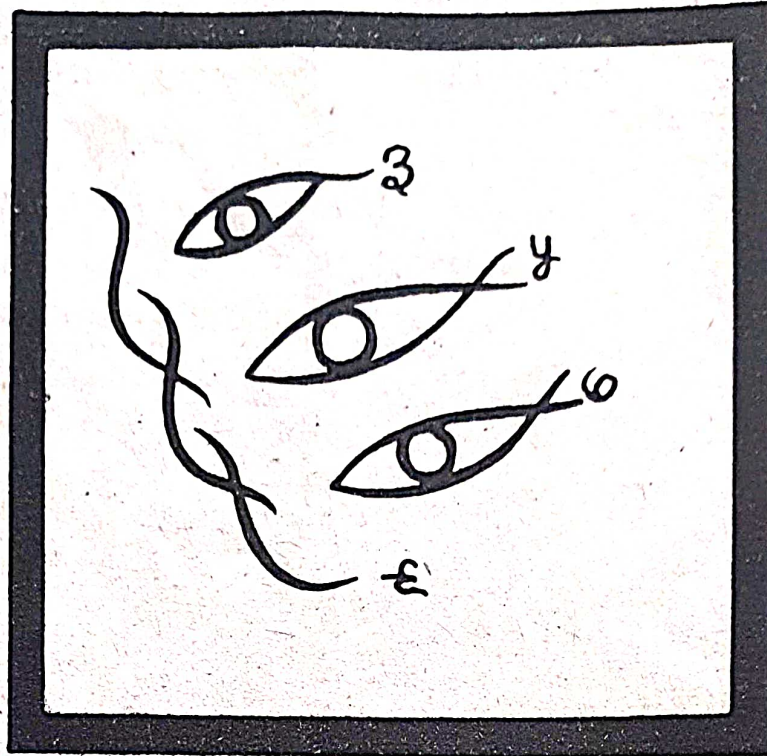
कहने लगते हैं, परन्तु वास्तविकता यह है कि यह चमत्कार न होकर एक प्रकार की 'कर्ण पिशाचिनी सिद्धि' होती है, जिसे सिद्ध कर ये साधु-संन्यासी चमत्कार दिखाते फिरते हैं।

भारतीय शास्त्रों एवं ग्रंथों को यदि टटोल कर देखा जाए, तो हमें यह ज्ञात होगा कि हमारे पूर्वज ऋषि-मुनि और देवताओं ने इस साधना को अपने जीवन में विशिष्ट स्थान दिया है। राम, कृष्ण, वशिष्ठ, विश्वामित्र, अत्रि, कणाद आदि ने इस विशिष्ट एवं गोपनीय साधना को सम्पन्न कर अपने व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान की है। इस साधना को सिद्ध करके ही वे अपने जीवन की उन कमियों को, जो उनकी सफलता में बाधक बनकर खड़ी हुई थीं, दूर कर अपने जीवन को सम्पन्न एवं सफल बना सके।

कर्ण पिशाचिनी साधना सिद्ध होने पर वह अदृश्य रूप में तुरन्त प्रकट होकर साधक के कानों में धीरे से उसके सभी प्रश्नों के उत्तर दे जाती है।

कर्ण पिशाचिनी साधना व्यक्ति को उसके भूतकाल से परिचित कराने वाली सिद्धि है। इस सिद्धि के माध्यम से व्यक्ति पिछले १० वर्ष, २५ वर्ष, १०० वर्ष यहां तक कि पूर्वजन्म के पाप-दोष से भी अवगत होकर अपने जीवन की उन सभी समस्याओं, बाधाओं एवं विपत्तियों का अन्त कर सकता है, जिस कारणवश वह इस जीवन में सफलता प्राप्त नहीं कर पा रहा है, जैसे जमीन-जायदाद का मामला हो या फिर गड़ा हुआ धन अथवा किसी ने कुछ कर रखा हो या कोई दुश्मन हो, जो प्रत्येक कार्य में व्याघात उत्पन्न कर रहा हो इन सब तथ्यों से अवगत होकर व्यक्ति इस सिद्धि के माध्यम से उन परेशानियों और विपत्तियों से छुटकारा पा सकता है, जिस कारण वह दुःखी, तनावग्रस्त एवं कष्टप्रद जीवन व्यतीत कर रहा है।

यदि किसी व्यक्ति का व्यापार नहीं चल रहा हो, या वह दुःखी, पीड़ित, चिन्ताग्रस्त एवं रोगग्रस्त हो अथवा शारीरिक और मानसिक दोनों रूपों से अस्वस्थ, अशांत एवं निर्धन हो, तो जल्दी ही इसका कारण उस व्यक्ति की समझ में नहीं आता, जबकि यह उसके पूर्व जन्मकृत दोषों का ही प्रतिफल होता है, जिस कारण उसे इस प्रकार का दुःखी एवं कष्टप्रद जीवन व्यतीत करना पड़ता है, किन्तु इन सब समस्याओं से मुक्ति वह इस कर्ण पिशाचिनी साधना को सिद्ध करके ही प्राप्त कर सकता है।

यदि कोई व्यक्ति, साधक या शिष्य इस दुर्लभ साधना को सम्पन्न कर लेता है, तो वह कर्ण पिशाचिनी उस साधक के कान में उसके होठों से उच्चरित सभी प्रश्नों के उत्तर दे देती है, जो कि उसे स्पष्टता से सुनाई देते हैं, किन्तु वह आवाज केवल मात्र उसी साधक को सुनाई पड़ती है, जिसने उसे सिद्ध कर रखा हो, उसके अत्यंत निकट बैठे व्यक्ति को

तुम्हारा नाम रमेश है, तुम्हारे तीन भाई हैं, तुम शीला नाम की लड़की से प्यार करते हो, तुम उससे पिछले माह शादी की बात . . . लेकिन . . .

आखिर कौन सी विद्या है जिसके कारण किसी के जीवन में घटी घटना को इतनी स्पष्टता के साथ बताया जा सकता है?

वह आवाज सुनाई नहीं देती।

इस साधना के द्वारा व्यक्ति अपने ही नहीं, किसी अन्य व्यक्ति के भूतकाल की छोटी से छोटी घटना के बारे में भी स्पष्टता और प्रामाणिकता से बता सकता है, और यह कर्ण पिशाचिनी साधना को सिद्ध करने पर ही ज्ञात हो सकता है।

साधक मन में कर्ण पिशाचिनी का ध्यान कर सामने वाले व्यक्ति के प्रश्नों का उत्तर सही एवं सटीक देकर उसे प्रभावित कर सकता है, क्योंकि उसे इस साधना के द्वारा ऐसी शक्ति मिल जाती है, जिस शक्ति के माध्यम से वह सामने वाले व्यक्ति को आकर्षक एवं प्रभावित करने लगता है, अतः वह व्यक्ति उसकी भविष्यवाणियों पर भी पूर्णरूप से विश्वास करने लग जाता है, जबकि यह सिद्धि केवल भूतकाल से सम्बन्धित घटनाओं की ही जानकारी दे सकती है, भविष्यकाल की नहीं।

वर्तमान युग में जब ''चमत्कार'' ही सिद्धि का पर्याय हो गया है, तब यह साधना प्रत्येक अविश्वासी व्यक्ति को पूर्णरूप से विश्वास दिलाने में समर्थ है।

आज के आधुनिक युग में भी कई व्यक्तियों ने इस विशिष्ट एवं गोपनीय साधना को सिद्धि कर अपने जीवन में लाभ प्राप्त किये हैं। इस साधना को सम्पन्न करके उन्होंने अपने पूर्व जन्मकृत दोषों का समाप्तिकरण किया, जिस कारणवश वे एक दुःखी एवं कष्टप्रद जीवन व्यतीत कर रहे थे, और साधना के प्राप्त लाभ से वे भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से सुखी एवं सम्पन्नता युक्त जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

जिस मानसिक तनाव, पीड़ा, दुःख, निराशा का कारण उन्हें समझ नहीं आता था, कि किस कारण वे इस अभाव युक्त, रोगग्रस्त, एवं चिन्ता युक्त जीवन को जी रहे हैं? उन कारणों की वजह और उन परेशानियों का हल उन्हें इस कर्ण पिशाचिनी साधना को सिद्ध करने पर प्राप्त हुआ, जिस सिद्धि का लाभ उठाकर वे आज पूर्णतः सुखी एवं सम्पन्न तथा स्वस्थ जीवन को जीने में कामयाव हो सके।

ऐसी ही है यह कर्ण पिशाचिनी साधना जिसका वर्णन हमें **''मंत्र महोदधि''** और **''मंत्र महार्णव''** जैसे ग्रंथों में स्पष्टता से मिलता है।

साधना प्रयोग

साधक फाल्गुन शुल्क पक्ष नवमी तदनुसार १० मार्च ९५ की रात्रि को स्नान कर, शुद्ध वस्त्र धारण कर आसन पर बैठ जाए और अपने सामने **''गुरु चित्र''** के साथ-साथ **''कर्ण पिशाचिनी यंत्र''** को भी स्थापित कर दे, और कुंकुम, अक्षत, पुष्प आदि चढ़ा दे, फिर इसके पश्चात् हाथ में जल लेकर गुरुदेव से प्रार्थना करे, कि मैं अमुक साधना सिद्ध करना चाहता हूं, आप मुझे इसके लिए अपना आशीर्वाद प्रदान करें, जिससे कि मैं इस प्रयोग को सफलता पूर्वक सम्पन्न कर सकूं, ऐसा बोलकर उस जल को जमीन पर छोड़ दें, और श्रद्धापूर्वक व पूर्ण विश्वास के साथ इस साधना को सम्पन्न करें। इस साधना में किसी दिशा विशेष का इतना महत्व नहीं है।

साधक गुरु चित्र के सामने तेल का दीपक प्रज्वलित करे(याद रहे कि दीपक तेल का ही होना आवश्यक है) इस के पश्चात् **हकीक माला** से ४ माला गुरु मंत्र की तथा निम्न मंत्र की ५ माला ५ दिन तक जप करे—

मंत्र

ॐ ईं कर्ण पिशाचिन्यै फट्

यह केवल ५ दिनों का प्रयोग है। देखने में आया है कि यह साधना पहली बार में भी सिद्ध हो सकती है, अपितु ५ या ८ बार में इसे सम्पन्न करने पर तो यह सिद्धि साधक को प्राप्त होती ही है।

पांचवे दिन अर्थात् १४ मार्च की रात्रि में कर्ण पिशाचिनी यंत्र तथा हकीक माला को लाल वस्त्र में लपेट कर नदी में प्रवाहित कर दें।

इस विशिष्ट एवं दुर्लभ साधना को सम्पन्न कर व्यक्ति अपने जीवन में धन-धान्य, यश, कीर्ति, वैभव, मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा, सुख-सम्पत्ति सभी कुछ प्राप्त कर सकता है, क्योंकि कर्ण पिशाचिनी उसे उसके भूतकाल से सम्बन्धित सभी घटनाओं व पूर्व जन्मकृत दोषों के बारे में सब कुछ बता देती है, जिन समस्याओं का समाधान कर वह व्यक्ति सुखी, स्वस्थ एवं चिन्तामुक्त जीवन का निर्माण कर पाता है। ❑

मेष - यह माह आपके लिए अत्यन्त व्यस्तताओं से भरा होगा। व्यापारिक मामलों में सोच-समझ कर ही निर्णय लें, पारिवारिक दायित्वों की उपेक्षा ना करें। पत्नी से वैचारिक मतभेद होने की स्थिति में शांति बरतें। आकस्मिक धन प्राप्ति का योग अत्यन्त क्षीण है, धन को सोच समझकर व्यय करें। धार्मिक कार्यों को लेकर अरुचि रहेगी, कारोबारी यात्रा फलप्रद रहेगी। इस माह की ७, १३, २५, २९ तारीख विशेष अनुकूल रहेगी, प्रेम-प्रसंगों में सावधानी बरतें। अदालती मामले उलझने से चिन्ता होगी। जमीन जायदाद के मामलों को लेकर खिन्नता रहेगी, पुराने सहयोगी की सहायता से रुका हुआ कार्य पुनः प्रारम्भ होगा, वाहन प्रयोग में सावधानी बरतें, मांगलिक कार्यों के योग बनेंगे।

मिथुन - आन्तरिक उथल-पुथल से भरा रहेगा यह माह, जीवन साथी से मतभेद की स्थिति में शांति बरतें, संतान पक्ष की ओर से प्रसन्नतायुक्त समाचार प्राप्त होंगे, धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी, आर्थिक लाभ की दृष्टि से यह सप्ताह अनुकूल रहेगा, लापरवाही से लिया गया निर्णय हानिप्रद सिद्ध होगा, धार्मिक-स्थल की यात्रा अनुकूल एवं शांतिप्रद रहेगी, सड़क पर वाहन प्रयोग में सावधानी बरतें। जमीन-जायदाद के मामले आपके अनुकूल होंगे, इस माह में १५, २४, २८, ३० तारीख विशेष रूप से अनुकूल रहेगी। अधिकारियों से मेल-मिलाप करके चलें, राज्य पक्ष बाधाकारी, योगों से भरा होगा, नये सम्बन्ध भविष्य में लाभप्रद सिद्ध होंगे, व्यर्थ के कार्यों में धन व्यय होने से निराशा रहेगी। प्रेम-प्रसंग अनुकूल रहेंगे।

सिंह - जो करना चाहते हैं कर डालें समय अनुकूल है, मासान्त कष्टमय होगा, रुके हुए व्यापारिक कार्य पूरे होंगे, आकस्मिक धन प्राप्ति का योग नहीं, व्यर्थ धन नष्ट न करें, ७, ९, १९, २४ तारीखें आपके लिए अनुकूल सिद्ध होंगी, पारिवारिक दायित्वों में व्यस्तता बढ़ेगी, संतान की ओर से चिंताजनक समाचार प्राप्त होगा, यात्रा-योग प्रबल, जमीन-जायदाद के मामले उलझेंगे, पुराने सम्बन्ध लाभदायक सिद्ध होंगे, मित्रों में अनबन होने से खिन्नता रहेगी, आध्यात्मिक पक्ष में दृढ़ता आयेगी, यात्रा स्थगित करें, दुर्घटना के योग प्रबल। धार्मिक कार्यों में समय व्यतीत होगा, दैहिक कष्टों में वृद्धि होगी, जीवन साथी से समझौता करके चलें। शत्रुपक्ष प्रबल होकर विश्वासघात करने का प्रयास करेगा। सावधानी बरतें, अदालती मामलों में उलझाव आयेगा, मांगलिक कार्य के अवसर निर्मित होंगे।

वृषभ - पूरा माह अनुकूलताओं से भरा रहेगा, शत्रु-पक्ष आपके अनुकूल रहेगा। राजकीय पक्ष से बाधाकारक योग होगा। पारिवारिक समस्याओं का उचित समाधान होगा। किसी परिचित की आर्थिक सहायता करने से आन्तरिक द्वंद होगा, अनुकूल तारीखों में ११, १७, १८, २६ रहेंगी। आपके लिए उचित होगा कि आप **"भुवनेश्वरी साधना"** कर पारिवारिक समस्याओं में अनुकूलता प्राप्त करें। वाहन प्रयोग में सावधानी बरतें, जमीन के क्रय-विक्रय का योग बनेगा, मांगलिक कार्यों में बाधा आने से खिन्नता होगी, प्रेम-प्रसंगों में सचेत रहें। यात्रा योग अनुकूल रहेगा।

कर्क - मांगलिक कार्यों के लिए अवसर निर्मित होंगे, सम्बन्धियों के सहयोग से रुका हुआ कार्य पूरा होगा, रुका हुआ धन प्राप्त होने से आर्थिक अभाव दूर होगा, अदालती मामलों की उपेक्षा न करें, पारिवारिक मामलों में तनाव बने रहेंगे, शत्रु-पक्ष से सावधान रहें, विश्वासघात की सम्भावना प्रबल, यात्रा में सावधानी रहेगी, कला-जगत के व्यक्ति आर्थिक लाभ की स्थिति में रहेंगे, ३, ८, १२, २० तारीखें आपके लिए सभी दृष्टियों से अनुकूल रहेंगी। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य को लेकर चिंता रहेगी।

कन्या - पहले से चली आ रही समस्याओं का समाधान होगा, रुका हुआ धन प्राप्त होने से प्रसन्नता का वातावरण निर्मित होगा, दो लाभ-चार खर्च से चिंता होगी, स्वास्थ्य की उपेक्षा न करें, घर के किसी सदस्य को लेकर चिन्ता बनी रहेगी, सहयोगियों के साथ छोड़ जाने से आत्मिक कष्ट होगा, धार्मिक कार्यों में व्यय भार बढ़ेगा, प्रेम-प्रसंगों में अनुकूलता प्राप्त होगी, कला जगत से जुड़े व्यक्ति आर्थिक लाभ की स्थिति में रहेंगे, कारोबारी मामलों में सुधार होगा तथा यात्रा फलप्रद रहेगी। अनावश्यक विश्वास व आस्था हानिप्रद होगी, मित्रों के बीच आपसी अनबन होने से तनाव रहेगा।

तुला - नई योजनाओं का निर्माण होगा, दाम्पत्य जीवन में कटुता उत्पन्न होगी, शत्रुपक्ष से सतर्कता रखना उचित होगा, समय ठीक नहीं अतः सावधानी से कार्य करें, मित्रों में अनबन होने से परेशानी होगी, इस माह में ५, १६, २०, २४ तारीख सभी दृष्टियों से अनुकूल रहेंगी, आपसी सूझ-बूझ से बिगड़ा हुआ काम बनता नजर आयेगा, आर्थिक उन्नति के लिए यह माह अनुकूल रहेगा, किसी से व्यर्थ का वाद-विवाद न करें, मुकदमों में जीत होगी, किसी नये मुकदमें के चक्कर में न फसें, साधक-वर्ग साधनाओं के प्रति उत्साहित होंगे। कला-जगत के व्यक्ति मानसिक रूप से निराश रहेंगे, शत्रुपक्ष से कटुता बढ़ेगी।

धनु - माह का प्रारम्भ सामान्यतया प्रसन्नताओं से भरा होगा, विश्वासघात की स्थिति में सावधानी बरतें। मित्रों का सहयोग मिलेगा, कोई पुराना विवाद समाप्त होगा, परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य को लेकर चिन्ता रहेगी, जल्दबाजी में निर्णय घातक सिद्ध होगा, मित्रों में आपसी अनबन होने से तनाव होगा, धार्मिक कार्यों में धन व्यय होगा, पत्नी के साथ सहयोगी व्यवहार बनाये रखें, संतान की ओर से स्थिति सामान्य, किसी धार्मिक स्थान पर जाने का योग, यात्रा अनुकूल व फलप्रद। जमीन जायदाद के मामलों की उपेक्षा न करें, व्यापारिक शिथिलता से मन में खिन्नता रहेगी, निर्णय शीघ्र व सोच समझ कर लें।

कुंभ - यह माह सामान्य ही रहेगा, सही निर्णय और कठोर परिश्रम से स्थितियां अनुकूल होती नजर आयेंगी, ५, ८. १२, १६, २५ तारीख सभी प्रकार से अनुकूल कही जा सकती हैं, अधिकारियों से मधुर सम्बन्ध बनाकर चलें, सहकर्मचारियों से आपके जीवन में अधिक सहयोग प्राप्त होगा, धार्मिक कार्यों में धन व्यय होगा, पत्नी से वैचारिक मतभेद होने से तनाव की स्थिति, स्त्री सुख सामान्य। आप **''नीलम''** धारण करें, अपने इष्ट का पूंजन-अर्चन कर अनुकूलता प्राप्त करें, बेरोजगार वर्ग के व्यक्ति नौकरी की बजाय किसी व्यापार में अधिक लाभ प्राप्त कर सकेंगे, यात्रा में सावधानी बरतें। व्यापार परिवर्तन के लिए समय अनुकूल नहीं।

वृश्चिक - माह का प्रारम्भ सभी दृष्टियों से शुभ, नये कार्य आरम्भ किये जा सकते हैं, शीघ्र ही निर्णय लें, प्रेम-प्रसंगों के मामलों में यह माह उत्साहित नजर आयेगा, किसी से व्यर्थ के वाद-विवाद से बचें, अधिकारी-वर्ग से तनाव की स्थितियां रहेंगी, राजकार्य आसानी से पूरा होगा, राज्यपक्ष से बाधाकारक योग अतः सावधानी बरतें, किसी धार्मिक कार्य में धन व्यय होगा, किसी पुराने मित्र के साथ छोड़ जाने से खिन्नता होगी, पत्नी के साथ सहयोगी व्यवहार बनाये रखें, संतान की ओर से स्थिति सामान्य, किसी धार्मिक स्थान पर जाने का योग, यात्रा अनुकूल व फलप्रद।

मकर - व्यापारिक कार्यों में रुचि लें, जरा सी असावधानी कष्टकारक हो सकती है, पारिवारिक समस्याओं पर ध्यान दें, पत्नी से वैचारिक मतभेद की स्थिति में शांति बरतें, व्यापार का विस्तार होने से स्थिति में आश्चर्यजनक सुधार होगा, साधकों के लिये यह समय स्वर्णिम होगा, कला जगत के व्यक्ति आर्थिक-दृष्टि से अनुकूलता महसूस करेंगे, समाज में प्रतिष्ठा होगी, किसी धार्मिक कार्य के कारण यात्रा होगी, यात्रा अनुकूल व फलप्रद, अधिकारियों से सद्भाव बनाकर चलें, राज्यपक्ष से बाधाकारी योग निर्मित होंगे, मुकदमेबाजी से बचें।

मीन - जमीन-जायदाद के सम्बन्ध में लापरवाही न बरतें, जीवन साथी के स्वास्थ्य की ओर पूरा ध्यान दें, संतान की ओर से चिन्ता- जनक समाचार प्राप्त होने से तनाव होगा, इस माह में ८, १२, २२, २६ तारीख सभी दृष्टियों से अनुकूल कही जा सकती हैं, धार्मिक कार्यवश यात्रा सम्भव होगी, जल्दबाजी में लिया गया निर्णय घातक सिद्ध होगा, मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा, किसी ऐसे नवीन व्यक्ति से सम्पर्क होंगे जो भविष्य में चलकर लाभप्रद सिद्ध होगा, शत्रुओं से सावधानी बरतें, विश्वासघात हो सकता है, दाम्पत्य जीवन में कटुता की स्थिति रहेगी। ❋

व्रत पर्व एवं त्यौहार

दिनांक	तिथि	पर्व
०१.०१.६५	पौष कृष्ण अमावस्या	नूतन वर्षारम्भ
०६.०१.६५	पौष शुक्ल पक्ष ८	दुर्गा अष्टमी
१२.०१.६५	पौष शुक्ल पक्ष ११	पुत्रदा एकादशी
१३.०१.६५	पौष शुक्ल पक्ष १२	द्वादशी लोहड़ी उत्सव
१४.०१.६५	पौष शुक्ल पक्ष १३	मकर संक्रांति
१६.०१.६५	पौष शुक्ल पूर्णिमा	पौष पूर्णिमा
२०.०१.६५	माघ कृष्ण पक्ष ४	संकष्ट गणेश चतुर्थी
२४.०१.६५	माघ कृष्ण पक्ष ८	कालाष्टमी
२७.०१.६५	माघ कृष्ण पक्ष ११	षट्तिला एकादशी
३०.०१.६५	माघ कृष्ण अमावस्या	सोमवती अमावस्या
०४.०२.६५	माघ शुक्ल पक्ष ५	बसन्त पञ्चमी,
०४.०२.६५	माघ शुक्ल पक्ष ५	रतिकामोत्सव दिवस
०७.०२.६५	माघ शुक्ल पक्ष ८	दुर्गाष्टमी, भीमाष्टमी
११.०२.६५	माघ शुक्ल पक्ष ११	जया एकादशी
१४.०२.६५	माघ शुक्ल पक्ष १४	ललिताम्बा जयन्ती
१८.०२.६५	फाल्गुन कृष्ण ३	गणेश चतुर्थी
२२.०२.६५	फाल्गुन कृष्ण ७	कालाष्टमी
२५.०२.६५	फाल्गुन कृष्ण ११	विजया एकादशी
२७.०२.६५	फाल्गुन कृष्ण १३	महाशिव रात्रि

गुह्य काली साधना

मंदिर की सीढ़ियों पर किसी के चलने की आहट सी सुनाई दी, लगा कि कोई धीरे-धीरे मेरी ही ओर बढ़ता चला आ रहा है, लेकिन बिलकुल अदृश्य रूप में. . .और तभी अचानक एक परछाई सी दिखाई दी, और तत्क्षण ही मुझे स्पर्श कर गायब हो गई. . .यह थी वह प्रथम घटना जो उस काली साधना के दौरान, काली के मंदिर में मेरे साथ घटित हुई. . .और जिसे देखकर मैं थोड़ा भयभीत सा हो गया, किन्तु फिर पूज्य गुरुदेव का ध्यान कर, अपने मन को संयमित कर पुनः साधनारत हो गया।

साधना समाप्त होते-होते मेरे शरीर में एक कम्पन्न सा होने लगा, और धीरे-धीरे मेरा शरीर और जोर से कम्पन्न करने लगा, तब अचानक ही वह **गुह्य काली** मेरे सामने प्रत्यक्ष रूप में प्रकट हो गई, जिसके दर्शन कर मैं एक क्षण के लिए स्तम्भित सा हो गया . . . और दूसरे ही क्षण मेरी आंख से अश्रुधारा प्रवहित होने लगी, किन्तु काली के जिस स्वरूप के बारे में मैंने सुन रखा था, वह बिलकुल उससे विपरीत था, वह तो दिखने में अत्यन्त ही सौन्दर्य शालिनी, शांत एवं मधुर हृदय वाली प्रतीत हो रही थी, मेरी आंखों से ढुलकते आंसुओं को और अपने प्रति श्रद्धा एवं प्रेम को देखते हुए, मेरी साधना से प्रसन्न हो उसने मुझे विशेष आशीर्वाद प्रदान किया, कि मैं हर क्षण तुम्हारे साथ रहूंगी। उस देवी स्वरूपा के, जो कि दस महाविद्याओं में भी सर्व प्रमुख, महत्वपूर्ण और अद्वितीय कही गयी है, दर्शन कर मैं धन्य-धन्य हो गया।

इस गोपनीय साधना को मैंने पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से ही सम्पन्न किया था, क्योंकि उनके विशेष आशीर्वाद और उनके द्वारा बताई साधना विधि से ही मैं **गुह्य काली सिद्धि** प्राप्त कर सका और उन्हीं के द्वारा मुझे इस सिद्धि से प्राप्त लाभों का ज्ञान हुआ, जिन्हें सुनकर ही मेरे मन में इसे सिद्ध करने की लालसा जाग उठी।

अथ काली मन्वये सधो वाक्सिद्धिपायकान्
आराधितैर्यः सर्वेष्टं प्राप्नुवन्ति जना भुवि।।

अर्थात काली साधना से तुरंत वाक सिद्धि अर्थात् "जो भी कहा जाय, वह सत्य हो जाता है" प्राप्त होती है, इस लोक में समस्त मनोवांछित फल प्राप्त करने में सक्षम हो पाता है।

काली के तीन स्वरूप होते हैं, पहला सौन्दर्य काली का, दूसरा रक्षा काली का, तीसरा यौवनकाली का . . . और इन तीनों ही स्वरूपों मे गुह्य काली सिद्ध हो सकती है. . . और इन तीनों ही स्वरूपों के द्वारा वह साधक के मनोवांछित कार्यों को सम्पन्न करती है।

काली का तात्पर्य, जीवन में शत्रुओं पर प्रबल रूप से प्रहार करने वाली और शत्रुओं का विनाश करने वाली महादेवी है।

गुह्य काली ही मात्र एक ऐसी साधना है, जो समस्त प्रकार के रोगों को समाप्त करने वाली और वृद्धावस्था को भी यौवनावस्था में बदलने वाली महत्वपूर्ण साधना है। यह सर्व-सिद्धि प्रदायक है, छोटी-छोटी साधनाओं में समय व्यर्थ करने की अपेक्षा एक ही साधना में पूर्णता प्राप्त करने से, समस्त रूपों में अनुकूलता प्राप्त हो जाती है।

इस साधना को सम्पन्न करने पर काल का भय समाप्त हो जाता है, और व्यक्ति दीर्घायु एवं इच्छामृत्यु प्राप्त करने में सक्षम हो जाता है। शत्रुओं का मान-मर्दन करने में, उन पर विजय पाने, मुकदमें में सफलता और पूर्ण सुरक्षा के लिए इससे बढ़कर और कोई दूसरी साधना नहीं है, तथा तुरन्त आर्थिक लाभ और प्रबल पुरुषार्थ की प्राप्ति भी इसी साधना के माध्यम से सम्भव होती है।

जो पुरुष संतान उत्पन्न करने में असमर्थ होते हैं, इस साधना को सम्पन्न करने पर उनके जीवन की यह न्यूनता समाप्त हो जाती है, या फिर किसी को सिर्फ लड़कियां ही होती हैं, तो उसे इस साधना द्वारा पुत्र प्राप्ति हो जाती है, **"काली पुत्रो फलप्रदः" के अनुसार गुह्य काली साधना योग्य पुत्र देने व पुत्र की उन्नति, उसकी सुरक्षा और उसे पूर्ण आयु प्रदान करने वाली श्रेष्ठ साधना है।**

गुह्य काली कलियुग में कल्पवृक्ष के समान शीघ्र फलदायक एवं साधक की समस्त कामनाओं की पूर्ति में सहायक है, जो साधक इस साधना एवं सिद्धि को प्राप्त कर लेता है, उसके जीवन में फिर किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता। भोग और मोक्ष दोनों में सम्पन्नता प्राप्त कर, वह जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त कर लेता है।

वस्तुतः गुह्य काली तंत्रात्मक साधना होने के कारण साधकों के लिए एक अद्भुत एवं आश्चर्यचकित कर देने वाली साधना है।

त्रिजटा अघोरी के अनुसार– "मैंने साधनाएं तो हजारों सिद्ध की हैं, परन्तु गुह्य काली साधना के समान और कोई साधना नहीं है, वचन सिद्धि एवं सफलता के लिए यह अद्वितीय साधना है।"

योगीराज किंकर स्वामी के अनुसार – "वास्तव में ही वह नर सौभाग्यशाली कहा जा सकता है, जिसके जीवन

में गुरु हों, और जिन्हें अपने जीवन में उनके आशीर्वाद से इस गुह्य काली साधना का रहस्य प्राप्त हुआ हो।''

. . .और अपने जीवन काल में पग-पग पर मेरे साथ ऐसी अनेक घटनाएं घटीं जिनसे मुझे उस साधना से प्राप्त लाभों का प्रमाण मिलता गया. . .और आज भी उसका ध्यान एवं चिन्तन करते ही वे प्रत्यक्ष रूप में यदा-कदा मुझे दर्शन देती ही हैं।

पूज्य गुरुदेव ने मुझे इस गुप्त साधना को तंत्र के माध्यम से सिद्ध करने को कहा, क्योंकि यह तांत्रोक्त पद्धति द्वारा ही सम्पन्न की जाने वाली साधना है, जिसका प्रभाव शीघ्र ही प्राप्त होता है।

यों तो काली से सम्बन्धित अनेक साधनाएं साधना ग्रंथों में प्रकाशित हैं, परन्तु गुह्यकाली साधना सर्वथा नवीन एवं प्रामाणिक है और साधना क्षेत्र में अत्यन्त उच्चस्तरीय साधना मानी गई है। यह सर्वाधिक गुप्त, अलौकिक, अद्वितीय एवं अनुपम है।

पूरे जीवन काल में विरले लोगों को ही यह सौभाग्य प्राप्त होता है, कि वे ऐसी उच्चस्तरीय साधना को प्राप्त करें। इसके साधना रहस्य को समझें, और जब व्यक्ति के जीवन के पुण्योदय प्रारम्भ होते हैं, तब ही ऐसी साधना साधक सम्पन्न करता है। उच्चस्तरीय योगी भी उसी शिष्य को यह साधना प्रदान करते हैं, जो जीवन भर उनकी सेवा में कार्यरत रहता है. . . और जो मन, वचन, कर्म से उनके प्रति अनुरक्त हो साधना मार्ग पर अग्रसर होता है।

मैं पूज्य गुरुदेव का बहुत आभारी हूं कि उन्होंने मुझे ऐसी सर्वश्रेष्ठ, अद्वितीय और अनुपम साधना सम्पन्न कराई, प्रत्येक साधक को अपने जीवन में इस साधना को सिद्ध करना ही चाहिए।

साधना विधि

साधनात्मक दृष्टि से साधक को इसे किसी भी रविवार या मंगलवार के दिन सम्पन्न करना चहिए, यह एक रात्रि कालीन साधना है, तथा इसे रात दस बजे से एक बजे के बीच सम्पन्न करना चाहिए।

इसके लिए प्राण-प्रतिष्ठि **सिद्ध काली यंत्र,** पूर्ण चैतन्य **काली हकीक माला,** और **गुह्य काली गुटिका** का होना आवश्यक है।

इस साधना में साधक लाल वस्त्र धारण कर, उत्तर दिशा की ओर मुंह करके आसन पर खड़ा हो जाए, सामने गुरु चित्र स्थापित कर उनकी साक्षी में इस साधना को सम्पन्न करें। साधक को चाहिए कि वह सर्व प्रथम गुरु पूजन कर एक माला हकीक माला से गुरु मंत्र जप सम्पन्न करे। उसके पश्चात अपने चारों ओर ११ दीपक तेल के प्रज्वलित कर दें, तथा मन ही मन गुह्य काली का चिन्तन कर श्रद्धापूर्वक इस प्रयोग को सम्पन्न करे।

साधक अपने बाएं हाथ में गुह्य काली गुटिका और काली यंत्र को रखे तथा दायें हाथ में काली हकीक माला से निम्न मंत्र का २५ मिनट तक निरन्तर जप करें—

मंत्र

ॐ क्रीं क्रीं गुह्य काल्यै क्रीं क्रीं फट्

और इस प्रकार मंत्र-जप समाप्त कर गुरु आरती सम्पन्न करें। इसके पश्चात उस समस्त सामग्री को किसी नदी, कुंए या मंदिर में विसर्जित कर दें। इस साधना को सम्पन्न करते समय साधक जो भी इच्छा लेकर इस साधना में बैठता है तथा मंत्र-जप करता है, उसके मन की वह इच्छा निश्चय ही पूरी होती है।

वस्तुतः यह मंत्र अपने-आप में अद्वितीय, महत्वपूर्ण, शीघ्र सिद्धिप्रद और साधक की समस्त मनोकामना की पूर्ति में सहायक है। ❑

समृद्ध जीवन का आधार
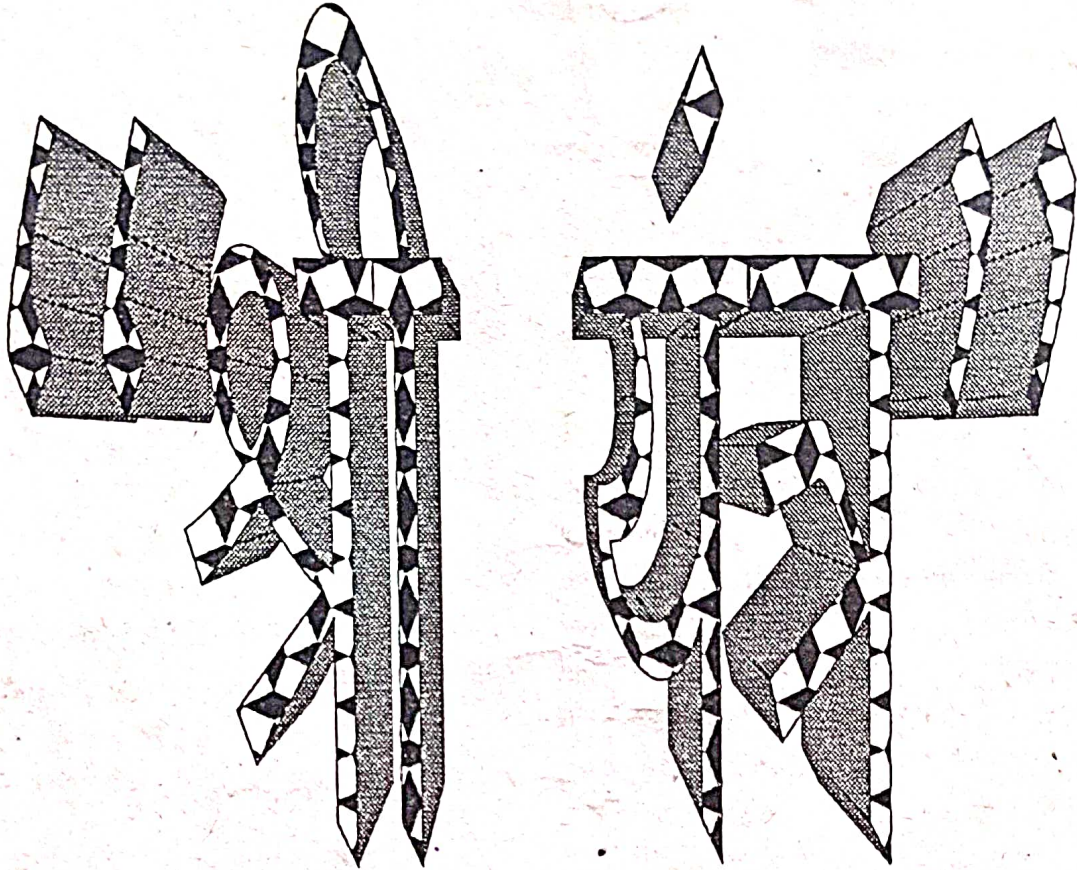
"**श्री यंत्र**" तो लक्ष्मी का आधार है, जिसके माध्यम से लक्ष्मी को आने के लिए बाध्य होना पड़ता है क्योंकि श्री यंत्र में एक साथ सैकड़ों लक्ष्मीदायक शक्तियों का निवास होता है।

जिस प्रकार बौद्ध लामाओं में "**श्री मण्डल**" श्रेष्ठ होता है, जैनियों में "**पद्मावती**" श्रेष्ठ होता है उसी प्रकार प्राचीन काल से ही "श्री यंत्र" का भी विशेष महत्व है। हजारों ग्रंथों में इस यंत्र की श्रेष्ठता को प्रदर्शित किया गया है, क्योंकि यह मनुष्य की उन्नति का सर्वोत्तम साधन है।

ऐसा हो ही नहीं सकता कि जिस घर में श्री यंत्र स्थापित हो उस घर में धन - सम्पदा का लाभ प्राप्त न हो। जिस प्रकार

"तांत्रिक, मांत्रिक ग्रन्थों में श्री यंत्र पर जितना प्रयोग लिखा गया है उतना किसी पर भी नहीं लिखा गया है भारत के ही नहीं विश्व के श्रेष्ठ विद्वानों ने तारीफ की और यह अनुभव किया है कि यदि श्री यंत्र पर प्रयोग न भी किया जाए मात्र स्थापित कर दिया जाय तब भी यंत्र अत्यंत ही प्रभावकारी होता है।"
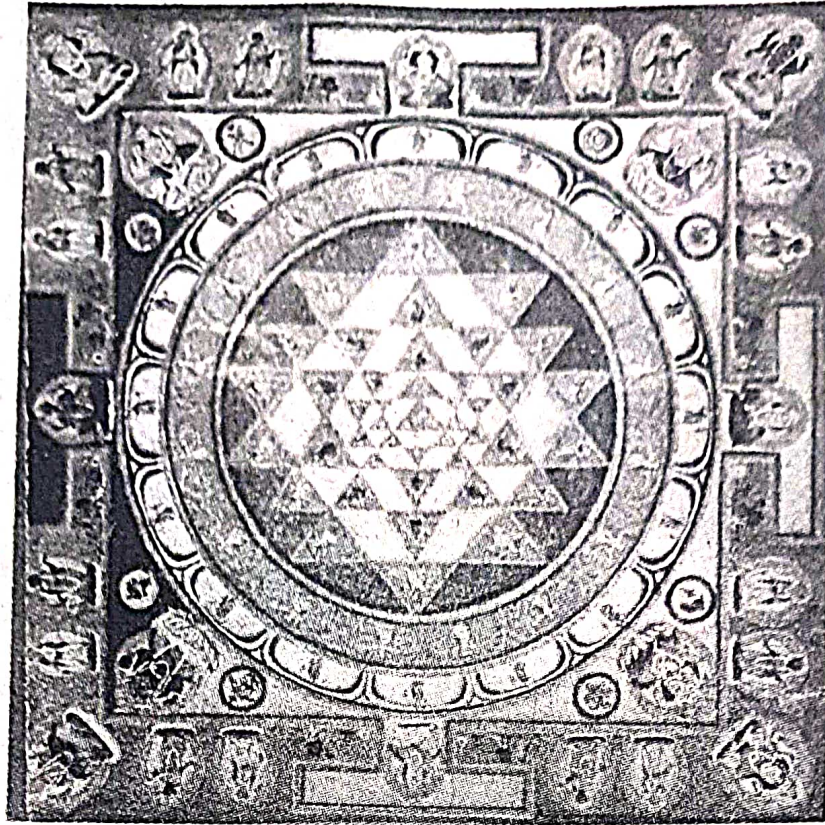
सूर्य पूरे संसार को अपने प्रकाश से प्रकाशित करता है। ऐसा हो ही नहीं सकता कि सूर्योदय हो और संसार में प्रकाश न फैले। जिस प्रकार अगरबत्ती को जला देने पर उसकी सुगन्ध पूरे वातावरण को सुवासित बना देती है, क्योंकि ऐसा सम्भव ही नहीं है कि अगरवत्ती जले और उसमें से सुगन्ध प्रवहित न हो ठीक इसी प्रकार श्री यंत्र के स्थापन का भी महत्व है क्योंकि ऐसा सम्भव ही नहीं है कि श्री यंत्र स्थापित हो और जीवन अभाव युक्त रह जाए।

आज जवकि लोग इसकी महत्ता को समझ चुके हैं इसलिए देश-विदेश में इसकी स्थापना घर- घर में की जाती है। शंकराचार्य ने भी अपने चारों मठों द्वारिका, श्रृंगेरी, पुरी और वद्रीनाथ में श्री यंत्र की स्थापना की थी जिसके कारण वे आज भी सम्पन्न वने हुए हैं।

यह यंत्र जीवन की दरिद्रता को नाश करने का सरल उपाय है, जो जीवन को वैभवशाली और समृद्धिशाली बनाने में पूर्ण सहयोगी है। इसकी स्थापना मात्र केवल घर में ही नहीं अपितु दुकान, फैक्टरी, मिल आदि स्थानों पर भी किया जाता है। इस यंत्र के स्थापन से व्यापारिक वृद्धि होने लगती है।

कलियुग में श्री यंत्र आर्थिक दृष्टि से पूर्ण सफलतादायक है। आज विश्व में व्यक्ति यदि धनाभाव से ग्रस्त है तो इसके पीछे एक कारण श्री यंत्र की उपयोगिता ठीक ढंग से नहीं समझना भी है, क्योंकि इतनी श्रेष्ठ विद्या हमारे पास है फिर भी इसका लाभ उठा नहीं पा रहें, जिसके कारण एक दुखी, संतप्त और अभाव युक्त जीवन जी रहे हैं।

जो व्यक्ति अपने जीवन में दरिद्रता का नाश करना चाहते हैं, जो व्यक्ति अपने जीवन में धन, यश, मान, प्रतिष्ठा, समृद्धि चाहते हैं, उन्हें अवश्य ही श्री यंत्र को स्थापित कर इसकी पूजा अर्चना करनी चाहिए।

श्री यंत्र को स्थापित करने की विधि निम्न प्रकार से है –

चैत्र शुक्ल पक्ष तृतीया दिनांक ३ अप्रैल ९५ को प्रातः काल अपने पूजा स्थान में पीला वस्त्र बिछा कर उस पर कुंकुम से स्वस्तिक अंकित करें फिर स्वस्तिक पर श्री यंत्र स्थापित करें। निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए **१०८ कमल गट्टे के बीज** श्री यंत्र के सामने अर्पित करें।

मंत्र –

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं नमः

मंत्र जप की समाप्ति के बाद श्री यंत्र को अपने रुपये - पैसे रखने के जगह में स्थापित कर दें और प्रत्येक माह किसी भी सोमवार को धूप - दीप दिखाते हुए पांच दिन बाद उपरोक्त मंत्र बोलकर अपने घर में धन-धान्य बने रहने की प्रार्थना करें।

श्री यंत्र पर अर्पित किए गए सभी कमल गट्टे के बीजों से उपरोक्त मंत्र का ही उच्चारण करते हुए उसी दिन पूजन समाप्ति के बाद उसी दिन अग्नि में आहुति प्रदान करें। ❑

प्रभाव पूर्ण यंत्र द्वारा रोग निवारण

आदरणीय परमपूज्य गुरुदेव एवं पूज्यनीया माता जी के श्री चरण-कमलों में मेरा सादर चरण स्पर्श स्वीकार हो। मैं मध्य प्रदेश जिला रायपुर का रहने वाला हूं। मेरा उम्र ३६ वर्ष है। मैंने प्रथम बार **परमपूज्य गुरुदेव का दर्शन मात्र शिवरीनारायण शिविर में किया था, वह भी बीमार हालत में, जब शिविर लगा तो पता नहीं कौन-सा शक्ति खींच ले गया, और वहां पर मैं दर्शक दीर्घा में बैठकर गुरुजी का दर्शन प्राप्त किया और अपना घर वापस चला आया।**

उसके बाद मुझे ऐसा चैतन्यता मिला कि आज मेरा जिन्दगी का दिशा ही बदल गया है। मैंने बिना दीक्षा लिये ही ४ लाख गुरु मंत्र-जप करने का संकल्प लिया, जो आज भी नियमित जारी है, तथा २६.८.६४ को परमपूज्य गुरुदेव से फोटो के माध्यम से **''सामान्य दीक्षा''** लिया एवं मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्यता ग्रहण किया तथा पत्रिका में यह प्रपत्र आपके लिये हमारी सहयोग हेतु कालम भरकर एवं आपकी समस्या जो वर्तमान में हो और जिसका तुरंत समाधान चाहते हैं, भर कर भेजा था, वहां से मुझे निर्देश मिला, कि आपको एक अति विशिष्ट प्रभावपूर्ण यंत्र भेजा जा रहा है, जिसे मिलने पर घर में पूजा स्थान में स्थापित किया, और निर्देशानुसार दिया गया मंत्र का ११ माला प्रतिदिन २१ दिन तक जप किया, २१ वें दिन यंत्र और माला को विसर्जन कर दिया।

मैं किस शब्द में लिखूं, मेरे पास शब्द नहीं हैं। मैं अपनी साथ घटी आश्चर्यजनक घटना, जो अपने- आप में ज्वलंत उदाहरण है– मेरा धर्मपत्नी, जो विगत २ वर्षों से पथरी (गुर्दा में) से परेशान थी, एकदम स्वस्थ हो गई, उसका एक्सरा मैंने १०.१०.६४ को कराया, जिसमें डॉ० ने रिपोर्ट दिया है कि पथरी गिर गया है, मैं आत्म विभोर हो गया, वास्तव में यह मेरे लिये आश्चर्यजनक घटना है।

आज के इस भौतिकवादी युग में परमपूज्य गुरुदेव जैसे महान विभूति से जुड़ना ही अपने-आप में सौभाग्य की बात है, गुरुदेव की लीला अपरम्पार है, वे श्रीकृष्ण भगवान की तरह हैं, जिस तरह अपने बाल सखा सुदामा का हर पल मदद श्रीकृष्ण जी किया करते थे, वैसे ही परमपूज्य गुरुदेव अपने शिष्यों का मदद हर पल, हर क्षण करते हैं, यह मेरा अनुभव है। आज मैं अपने-आप को सौभाग्यशाली समझता हूं कि मुझ जैसे प्राणी, एक पारिवारिक आदमी को परमपूज्य गुरुदेव ने अपने चरणों में स्थान दिया, और अन्त में मेरे सपरिवार कि तरफ से परमपूज्य गुरुदेव को प्रणाम स्वीकार हो, गलतियों के लिये क्षमा आकांक्षा रखता हूं।

वीरेन्द्र कुमार
अकलतरा
बिलासपुर

जब मुझे गुरु कृपा से नौकरी मिली

गुरु जी के सम्पर्क में मैं और मेरा परिवार तीन वर्षों पूर्व आया। पिछले वर्ष गुरुदेव बम्बई शिविर में पधारे। मैंने उनसे नौकरी प्राप्त करने के लिए आशीर्वाद प्रदान करने की प्रार्थना की। आशीर्वाद देते हुए उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि शीघ्र ही मुझे नौकरी प्राप्त हो जायेगी। मैं गुरुजी के प्रति बहुत अधिक कृतज्ञ हूं क्योंकि १ जनवरी १६६४ को शिविर के ठीक तीन माह बाद बिना किसी प्रयास के नौकरी मिल गयी। मेरी नौकरी गुरुदेव के दया से अब स्थायी भी हो गयी है। मैंने सिर्फ एक बार प्रार्थना की थी और जो गुरुदेव ने स्वीकार कर ली। गुरुदेव की कृपा मुझ पर बनी रहे, उनसे ऐसी ही प्रार्थना है।

भारती सी. पटेल,
मलाड, बम्बई

गणमान्य पाठकों,

इस स्तम्भ के अन्तर्गत आप भी अपने साधना सम्बन्धी अनुभव, रोचक लेख जो सत्य कथा पर आधारित, अपने आस- पास या स्वयं के जीवन में घटी ऐसी घटनाएं जिसके कारण आप विवश हो उठें हो दिव्य शक्ति के प्रभाव को मानने के लिए। आमंत्रित है। निम्न पते पर–

''साक्ष्य'' ३०६, कोहाट एन्क्लेव,
पीतमपुरा, नई दिल्ली - ३४

श्री गणेश वटाणी एक समर्पित साधक एवं परम पूज्य गुरुदेव के अत्यन्त प्रिय शिष्यों में से एक हैं, उन्होंने बम्बई में निरन्तर साधना शिविर लगाकर एक चेतना . . . एक जागृति पैदा की है . . . और वता दिया है कि अगर ठान ले तो एक व्यक्ति भी तूफान ला सकता है . . . और वहुत कुछ कर सकता है।

इसी श्रृंखला में इस बार एक अद्वितीय शिविर का आयोजन हो रहा है . . . जो अपने- आप में ही उपलब्धिकारक है . . .

बम्बई (महाराष्ट्र) में

ऐश्वर्य महालक्ष्मी मनोवांछित साधना

पूज्य नन्दकिशोर श्रीमाली जी के सान्निध्य में

29 जनवरी 1995

साधना स्थल : धर्म सी भाटिया हॉल, एस. व्ही. रोड, बोरीवली वेस्ट

सम्पर्क : श्री गणेश वटाणी, फोन : 805-7110

इस माह के

श्रेष्ठ साधक
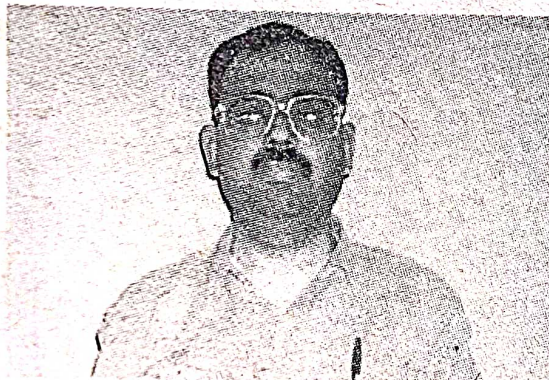
डॉ० सत्य नारायण दुबे

डॉ० दुबे एक अत्यन्त समर्पित शिष्य हैं। इन्होंने अपने जीवन का मूल उद्देश्य व आधार पूज्य गुरुदेव की सेवा तथा सिद्धाश्रम साधक परिवार के प्रत्येक सदस्य की सेवा ही बना रखा है। इन्होंने सेवा को ही साधना बना लिया है और यह सिद्ध कर दिया है कि पूर्ण समर्पण भाव से गुरु सेवा कर समस्त साधनाओं को प्राप्त किया जा सकता है।

केशवपुरम, दिल्ली

श्रेष्ठ साधिका

श्रीमती कृष्णा

बहिन कृष्णा एक श्रेष्ठ व समर्पित साधिका हैं। इनके मन में हर पल मात्र गुरु सेवा का ही भाव रहता है। इन्होंने भी पूर्ण समर्पण भाव से गुरु सेवा करना ही अपनी समस्त साधनाओं का मूल मंत्र बना लिया है।

करोल बाग
दिल्ली

इस स्तम्भ के लिए आमंत्रित हैं आप सभी के द्वारा किए गए साधनाओं व सेवा कार्यों का विवरण। जिससे आप का भी स्थान श्रेष्ठ साधक - साधिकाओं की श्रेणी में निर्धारित हो सके। आप-अपने विवरण के साथ अपना चित्र भी अवश्य भेजें। लिफाफे के ऊपर **"श्रेष्टता"** अवश्य लिखें।

आमंत्रण

परम पूज्य गुरुदेव **डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी** को **१५-१६-१७ फरवरी १९९५** को **अन्तर्राष्ट्रीय परामनोविज्ञान कान्फ्रेंस – वाशिंगटन (अमेरिका)** में भाग लेने के लिए विशेष रूप से आमंत्रित किया है, जिसमें पूज्य गुरुदेव १६ फरवरी को **''परामनोविज्ञान अनन्त संभावनाएं''** (Para Psychology-Unlimited Possibilities) विषय पर भाषण देंगे।

इस कान्फ्रेंस में विश्व के ७६ देशों के विद्वान भाग ले रहे हैं।

सभी शिष्यों, साधकों एवं पाठकों की तरफ से शत् शत् बधाई।
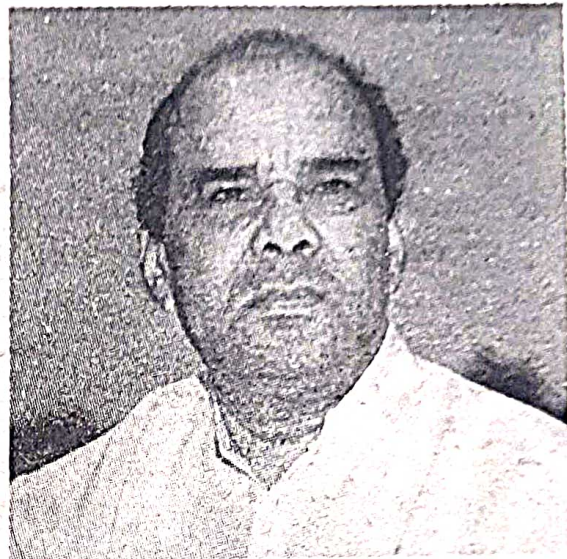
आप क्या कर रहे हैं?

- **भोपाल शिविर में आप सभी साधक - साधिकाओं ने यह शपथ ली थी कि वे अपने - अपने क्षेत्र में विभिन्न कार्यों के माध्यम से पत्रिका का प्रचार - प्रसार करेंगे।**
- **क्या आपने गुरुदेव की आज्ञा का पालन किया?**
  गुरुदेव ने आज्ञा दी थी कि आप - अपने ऊपर से गुरु - ऋण उतारने के लिए अपने शहर, गांव या कस्बे में पत्रिका प्रचार निम्न माध्यमों में से, अपनी सामर्थ्य के अनुसार माध्यम चुनकर करेंगे –
  1. **१०० दीवार लेखन**
  2. **दो माह में पांच पत्रिका सदस्य**
  3. **समाचार - पत्रों में रख कर ५००० पम्फलेट का वितरण**
  4. **होर्डिंग**
  5. **अपने स्थानीय सिनेमा हॉल या विडियो हॉल में स्लाइड्स दिखाकर**
- **हमे विश्वास है –**
  आप गुरुदेव की आज्ञा का उल्लंघन कर ही नहीं सकते।
- **इसीलिए तो आप पर हमें गर्व है –**
  क्योंकि आप में से अधिकांश शिष्यों ने आज्ञा का पालन कर ही लिया है, कर ही रहे होंगे।
  पर आप द्वारा किये गए कार्य की सूचना हमें मिली नहीं। कृपया आप - अपने द्वारा किए गए कार्य की सूचना, फोटो व विवरण के साथ भेजें, जिसे हम पत्रिका में प्रकाशित कर सकें।
  और आप की सेवा भावना से प्रेरित होकर अन्य लोग भी आगे बढ़ सकें।

लिफाफे के ऊपर कोने में **''गुरु कृपा''** लिख दें।

आप - अपना पत्र निम्न पते पर भेजें–

''सिद्धाश्रम'', 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतम पुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7186700

ज्वालामालिनी जिसकी उत्पत्ति, जिसका निर्माण शिव के तेज से हुआ, और जो शिव का ही एक अंश स्वरूप है।

कहा जाता है कि एक बार शिव बहुत समय तक एक शिला पर ध्यानस्थ बैठे रहे, बहुत दिनों के पश्चात भी जब वे पार्वती के पास नहीं लौटे, तो पार्वती ने उनकी ध्यानावस्था को भंग करने के लिए देवताओं का सहारा लेना चाहा, लेकिन कोई भी देवता शिव के क्रोध का सामना करने का साहस नहीं जुटा सका, तब ऐसे समय में पार्वती ने कामदेव को आज्ञा दी वहां जाने की, कामदेव पार्वती की आज्ञा को सर्वोपरि मान कर वहां से उनका आशीर्वाद प्राप्त कर उस शिला के पास पहुंचे, जहां शिव पूर्णरूप से ध्यान मग्न बैठे थे, केवल मात्र कामदेव ही थे जिन्होंने शिव की ध्यानावस्था को भंग करने का दुस्साहस किया, और जब उन्होंने ऐसा किया तो शिव उन पर अत्यन्त क्रोधित हो उठे, तब उनके त्रिनेत्र से निकली धधकती ज्वाला ने उसी क्षण उसे भस्म कर दिया, किन्तु तब भी वह ज्वाला शांत नहीं हुई, इस क्रोधाग्नि में कई और देवी-देवता जलकर भस्म हो जाते, इसी कारणवश उस तीक्ष्ण ज्वाला को शांत करने के लिए, उस ज्वाला से शिव ने एक शक्ति स्वरूप का निर्माण किया, जिससे कि कुछ अनिष्ट न घटित हो. . . इस प्रकार शिव की क्रोधाग्नि से एक तेजपुञ्ज प्रकट हुआ, और देखते ही देखते समस्त देवी-देवताओं के समक्ष **"ज्वालामालिनी"** नामक शक्ति स्वरूपा का जन्म हो गया।

ज्वालामालिनी ज़ो शिव की ऊर्जा शक्ति है, पूर्ण

शक्तिशालिनी है, और जिसको समस्त देवी-देवता भी नमन करते हैं।

ऐसी देवी की साधना करने के लिए तो उच्चकोटि के ऋषि एवं तांत्रिक, भी प्रयासरत रहते हैं, यह एक अत्यन्त ही दुर्लभ एवं गुप्त साधना है, जिसको सिद्ध करना असम्भव है, किन्तु इस साधना को सम्पन्न करने पर, उस साधक को इस देवी-शक्ति का कुछ अंश तो प्राप्त होता ही है, और वह अंश मात्र ही, साधक को सुखमय जीवन प्रदान करने में पूर्णतः सक्षम है।

ज्वालामालिनी तंत्र साधना का प्रभाव अपने-आप में अचूक होता ही है, और जब कोई साधक साधना सम्पन्न करता है, तो उसे उस देवी या देवता की ऊर्जा-शक्ति प्राप्त होती ही है। उसका प्रभाव कभी व्यर्थ नहीं जाता, आवश्यकता है तो श्रद्धा और पूर्ण विश्वास की।

क्योंकि "शब्द पूर्ण ब्रह्म" है और प्रत्येक शब्द का अपने-आप में प्रभाव होता है, ऐसा कोई शब्द नहीं है, जिसका हम उच्चारण करें और उसका प्रभाव न हो, यह अलग बात है कि हम सही प्रकार से उच्चारण न कर सकें या हमें उन शब्दों पर विश्वास न हो, यह एक ऐसा ही तीव्र प्रयोग है यह, जिसका प्रभाव होता ही है।

ज्वालामालिनी साधना सम्पन्न करने से भले ही सिद्धि प्राप्त न होती हो, पर इस अद्वितीय साधना को प्रत्येक साधक को बार-बार अपने जीवन में सम्पन्न करते ही रहना चाहिए, क्योंकि इस साधना को सम्पन्न करने पर उस साधक के ऊपर जो विपरीत परिस्थितियां हावी होती हैं, वे इस साधना के प्रभाव से उसके अनुरूप होती चली जाती हैं।

ज्वालामालिनी साधना द्वारा व्यक्ति अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति शीघ्र ही कर सकता है, क्योंकि इस साधना के द्वारा उसके मन के अनुरूप ही कार्य घटित होने लग जाते हैं, जिससे कि वह साधक अपना मनचाहा कार्य पूर्ण कर लेता है।

यह किसी भी प्रकार के विघ्न-बाधाओं को दूर करने में सहायक तथा शत्रुनाशक साधना है।

इस विशिष्ट साधना को सम्पन्न कर साधक तेज,

ओज, बल सभी कुछ प्राप्त कर लेता है, और उसकी कांतिहीन देह दिव्य आभा लिए लालिमा युक्त प्रतीत होने लगती है।

धीरे-धीरे उसकी सुन्दर देह यष्टि एवं उसक प्रभाव युक्त व्यक्तित्व दूसरों के आकर्षण का केन्द्र बनने लगता है, और सबसे बड़ी बात तो यह है, कि वह जब चाहे विपरीत होती परिस्थितियों को अपने अनुकूल कर लेने में पूर्णतः सक्षम हो जाता है।

और तब वह हर क्षण उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होता हुआ श्रेष्ठ एवं सफल जीवन प्राप्त कर लेता है।

यह एक ऐसा ही गोपनीय एवं तीक्ष्ण प्रभावकारी प्रयोग है, जिससे प्राप्त ऊर्जा-शक्ति के द्वारा शत्रु का विनाश हो जाता है।

समय-समय पर इस अद्वितीय प्रयोग को करते रहने से किसी भी प्रकार से शत्रु द्वारा किए गए टोने-टोटकों का प्रभाव व्यर्थ हो जाता है, यदि किसी व्यक्ति ने शत्रुतावश किसी व्यक्ति पर मूठ का प्रयोग किया हो, तो इस साधना द्वारा इस मूठ को विपरीत दिशा दी जा सकती है।

यह ऐसा ही प्रभावकारी एवं तेजस्वी प्रयोग है, जिसे प्रत्येक व्यक्ति को सम्पन्न करना चाहिए। यह सर्वथा नवीन एवं गोपनीय तथ्य है जिसे पहली बार पत्रिका में प्रकाशित किया जा रहा है।

साधना विधि

साधक किसी भी **शनिवार की रात्रि** को इस महत्वपूर्ण प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है, और उसे एक बार ही नहीं अपितु बार-बार सम्पन्न करते रहना चाहिए।

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व साधना सामग्री को पहले से ही साधक एकत्र करके रख ले, जिसमें कुंकुम, अक्षत, घी, का दीपक, पुष्पहार, तथा **ज्वाला यंत्र**, गुरु चित्र तथा **ज्वाला माला**। यंत्र और माला प्राण प्रतिष्ठित होनी चाहिए। साधक का मुख उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए, तथा पीले आसन का प्रयोग इस साधना में करना चाहिए।

इस प्रकार इस सामग्री को एकत्र कर साधक स्नान आदि से निवृत्त होकर, पीली धोती पहिन कर और ऊपर से गुरु चादर ओढ़ कर पूजा स्थान में वीरासन अथवा सिद्धासन में बैठ जाएं, और अपने सामने एक लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर, उस पर ज्वालामालिनी यंत्र और गुरु चित्र को स्थापित करें, फिर घी का दीपक प्रज्वलित कर कुंकुम, अक्षत पुष्प से उनका पूजन करें। पूजन के पश्चात हाथ में जल लेकर संकल्प करें और अपना नाम तथा गोत्र का उच्चारण करें, जिस कार्य के लिए साधना कर रहे हैं, उसे बोलकर जल को जमीन पर छोड़ दें।

साधक को सबसे पहले उस देवी का चिन्तन एवं ध्यान करना चाहिए, और उसके बाद **कर न्यास** और **अंग न्यास** का उच्चारण करें।

कर न्यास

ॐ नमो अंगुष्ठाभ्याम् नमः
भगवती तर्जनीभ्याम् स्वाहाः
ज्वालामालिनी मध्यमाभ्याम् वषट्
गृधृ गण-परिवृते अनामिकाभ्याम् हुं
हुं फट् कनिष्ठिकाभ्याम् वौषट्
स्वाहा करतल कर पृष्ठाभ्याम् फट्

अंग न्यास

ॐ हृदयाय् नमः
भगवती शिरसे स्वाहाः
ज्वालामालिनी शिखायै वषट्
गृधृ गण-परिवृते कवचाय हुं
हुं फट् नेत्रयाय् वौषट्
स्वाहाः अस्त्राय़ फट्

और फिर ज्वाला माला से गुरु मंत्र की चार माला जप करें और फिर ज्वाला माला से ही निम्न मंत्र की ५ माला जप सम्पन्न करें—

मंत्र

ॐ ज्रं ज्रं ज्वाला मालिन्यै फट्

मंत्र-जप पूर्ण करने के पश्चात ११ दिन तक उस माला को धारण करके रखें, और इसके पश्चात उस यंत्र एवं माला को किसी नदी अथवा तालाब में विसर्जित करें।

इस साधना काल में साधक को पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए, तथा भूमि पर ही शयन करना चाहिए तथा बिना भोजन किये ही श्रद्धा पूर्वक इस मंत्र का जप करने से उस साधक को विजय प्राप्त होती ही है।

इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर इसका तीक्ष्ण प्रभाव साधक को प्राप्त होता ही है, इसके द्वारा शत्रुनाश तो होता ही है, साथ ही साथ साधक की प्रत्येक इच्छा भी पूर्ण होने लग जाती है, और यही नहीं अपितु क्रोध पर भी पूर्ण नियन्त्रण करने के लिए यह श्रेष्ठ साधना है।

अतः इसे प्रत्येक साधक को समय-समय पर सम्पन्न करते ही रहना चहिए। जिससे कि साधक आने वाली विपत्तियों का सामना निर्भय हो कर पाता है।

❑

● सेवा वोरकर

शक्तिपात समये विचारणं प्राप्तमीश न करोषि कर्हिचित्।
अद्य मां प्रति किमागतं यतः स्वप्रकाशन विधौ विलम्वसे।।

हे सद्गुरुदेव! तुम शक्तिपात के समय अर्थात् जीव के प्रति कृपा करते समय न्यायतः उचित होने पर भी कभी पात्र-अपात्र का विचार नहीं करते। तो फिर आज मुझमें ऐसा नया क्या हुआ है कि तुम मेरे प्रति आत्म-प्रकाशन(पूर्णता देने हेतु) में विलम्ब कर रहे हो?

श्री सद्गुरु द्वारा शक्तिपात अथवा कृपा कब और क्यों होती है? यह एक प्रश्न है, इसके बारे में विभिन्न मत हैं। कोई कहते हैं कि ज्ञान का उदय होने से शक्तिपात होता है। अज्ञान दूर होकर शक्तिपात होता है। ज्ञान रूपी अग्नि सभी प्रकार के कर्मों को भस्म कर शक्तिपात की भूमि की रचना करती है।-

शक्तिपात का वास्तविक कारण मलपाक है-

परस्पर विरोधेन निवारित विपाकयोः।
कर्मणोः सन्निपातेन शैवी शक्तिः पतत्यसौ।

जिन कर्मों का फलदान परस्पर विरोधवश रुद्ध है, उनके सन्निपात से शैवी शक्तिपात होता है। मलपाक हुए विना शक्तिपात हो ही नहीं सकता।

"मतंगागम" में लिखा है—

मलपाक की अविनाभूत दीक्षा कर्म के क्षय द्वारा मोक्ष प्राप्ति का हेतु होती है।

किरणागम में लिखा है—

अनेक भविक कर्म दग्ध बीज भिवाग्निभिः।
भविष्यदपि संरुद्धं येनेदं तद्धि भोगतः।।

अर्थात् बहुत जन्मों का संचित कर्म अग्नि में भुने बीज की तरह दग्ध होता है। भावी कर्म की फल देने वाली शक्ति रुद्ध होती है, और जिस कर्म से यह जन्म हुआ है, उसी कर्म यानी प्रारब्ध कर्म के भोग द्वारा क्षय होता है।

मलपाक से अनुग्रह-शक्तिपात होता है। शक्तिपात होते ही मल का आवरण हट जाता है और नित्य सत्य विशुद्ध सर्वज्ञत्व आदिमय स्वरूप प्रकाशित होता है, अर्थात् शान्त और निर्मल आत्मा के स्वरूप का साक्षात्कार होता है। एक ही परमेश्वर जीव का बन्धन भी करते हैं, मोक्ष भी करते हैं। जिस प्रकार एक ही सूर्य अपने सान्निध्य में गलने योग्य मोम जैसे पदार्थों को गलाता है। वैसे ही एक ही परमेश्वर मोक्ष के अधिकारी पक्वमल जीव को मोक्ष देने की व्यवस्था करता है और बन्धन योग्य अपक्व मल जीव के मलपाक के लिए बन्धन की व्यवस्था करता है।

मलपाक से उपकार और अपकार रूप कर्म में साम्य बुद्धि होती है तब मोक्ष होता है। सभी प्रकार के कर्म का साम्य होने से विज्ञान कैवल्य मात्र सिद्ध होता है, मोक्ष नहीं होता। यथार्थ कर्म-साम्य का कारण मलपाक है। इसीलिए मलपाक से दीक्षा के प्रभाव से मोक्ष मिलता है। **जीव (पशु) आत्मा मल, माया और कर्म पाश में बद्ध होता है और सद्गुरु कृपा करके उसके इन पाशों या वन्धनों को छिन्न करके अपने जैसा कर लेते हैं।**

किन्तु जब तक पशु अर्थात् जीव के चैतन्य अवरोधक आदिमल का अधिकार निवृत्त नहीं होता तब तक अनुग्रह की प्रवृत्ति ही नहीं होती।

मृगेन्द्र आगम में लिखा है-—

तमः शक्त्यधिकारस्य निवृत्ते च परिच्युतौ।
व्यनक्ति दृक् क्रियात्रिन्त्यं जगद्वन्धुरणो शिवः।।

तमः शक्ति, रोध शक्ति या तिरोधान का दूसरा नाम है। जब तक इस शक्ति का अधिकार रहता है, तब तक उद्धार का कोई उपाय नहीं। आवरण-शक्ति के अधिकार की निवृत्ति होने पर शक्ति का क्षय होता है, वैसे में परम कृपालु सद्गुरु रूपी परमेश्वर ही पशु या बद्धजीव के प्रति अपनी अनन्त ज्ञान क्रिया अभिव्यक्त करते हैं, यानि उसे मुक्त कर देते हैं। अनादि मल धीरे-धीरे पकता है, परिणाम प्राप्त करता है। परिपक्वता पूर्ण हो जाने पर उसकी निवृत्ति का समय आता है।

जैसे— आंख में छाला पड़ने से अस्त्रोपचार द्वारा उसे दूर करना पड़ता है। परन्तु जब तक वह पूरी तरह पक नहीं जाता, अस्त्र का प्रयोग हो नहीं सकता। इसी तरह अपक्व मल को खींच कर हटाने की कोशिश करने से जीव का सर्वनाश होता है। इसलिए मंगलमय भगवान रूपी सद्गुरु इस तरह से बल प्रयोग नहीं करते। वह मलपाक के अवसर की प्रतीक्षा करते हैं, और उसके पक जाने पर दीक्षा द्वारा उसे हटाते हैं।

अनेक जन्मों की वासना और पुण्य के प्रभाव से जिस किसी समय या जिस किसी आश्रम में रहते हुए अचिन्त्य भाग्योदय के कारण किसी-किसी **आत्मा की चैतन्य शक्ति का अनादि आवरणभूत मल कुछ पकने पर उसी के अनुसार शक्तिपात होता है। प्रचलित भाषा में इसी को सद्गुरु कृपा कहते हैं।** इसकी मात्रा के अनुसार भगवान के प्रति भक्ति और श्रद्धा उत्पन्न होती है। तब शक्तिपात के अनुरूप दीक्षा का अवसर आता है। शक्तिपात के तारतम्य से दीक्षा का भेद होता है।

शक्तिपात कर्मसाम्य, मलपाक प्रभृति के अधीन नहीं है, वह निरपेक्ष और स्वतन्त्र है। पुराण आदि में भी ऐसा मत पाया जाता है —

"तस्येव तु प्रसादेन भक्तिसत्पद्यतेनृणाम्"

पर और अपर भेद से शक्तिपात मुख्यतः दो प्रकार का है। पर और अपर शक्तिपात को पूर्ण अपूर्ण कृपा कहा जाता है। सद्गुरु के सिवाय पूर्ण कृपा और कोई नहीं कर सकता। अपूर्ण कृपा ब्रह्मा आदि देव भी कर सकते हैं, और किया करते हैं, जिसके प्रभाव से कृपापात्र जीव ब्रह्मा आदि के अधिकार के अन्तर्गत नाना प्रकार के भोग और अधिकार पा सकते हैं परन्तु पूर्णत्व या परमेश्वरत्व नहीं पा सकते।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

सद्गुरु या पूर्ण ब्रह्म की कृपा से मूल अज्ञान-रूप-आणव मल निवृत्त होता है और पूर्णत्व की अभिव्यक्ति होती है। सद्गुरु रूपी ब्रह्म के अलावा माया-अन्तर्गत अधिकारी पुरुष की कृपा से पूर्णत्व-लाभ नहीं हो सकता। सिर्फ उत्कृष्ट भोग आदि मिल जाते हैं।

शक्तिपात विचित्र है, इसलिए उसका अधिकार भी विचित्र है। समयी (दीक्षा), साधक (दीक्षा), आचार्य (दीक्षा) यह सब अधिकार भेद विभिन्न प्रकार के शक्तिपात से होता है। यह सब अधिकार समष्टि रूप में या अलग-अलग भी हो सकता है। यह सब किसी को पहले होता है, यानी पहले समयी का अधिकार

पाकर पुत्रक-भाव प्राप्त होता है, उसके बाद आचार्य भाव में स्थिति होती है। परन्तु किसी-किसी के जीवन में यह सब बिना किसी क्रम के ही आते देखा गया है। जैसे कोई पुरुष समयी अवस्था प्राप्त किये बिना ही पुत्रक अवस्था पा लेता है अथवा समयी और पुत्रक अवस्थाओं को पार करके आचार्य-पद(दीक्षा) पर पहुंच जाता है।

शक्तिपात के मात्रा मंत्र होने से जीव माया-अधिकार प्राप्त करता है और रुद्रांश भाव लाभ करता है। उसके बाद सद्‌गुरु की विशिष्ट कृपा से पुत्रक-दीक्षा के बाद पूर्णत्व पर पहुंच जाता है। इसका नाम **"समयी"** है। कोई पहले भोग और ऐश्वर्य प्राप्त करके वैराग्य से परम पद में स्थित होता है। इनमें भी योग्यता-भेद से कोई शीघ्र और कोई विलम्ब से लक्ष्य को प्राप्त करता है। इनका नाम **"साधक"** है।

शक्तिपात—तीव्र, मध्यम और मन्द तीन प्रकार का होता है। इसका प्रत्येक भेद फिर तीव्र, मध्यम, और मन्द भेद से तीन प्रकार का है, इस प्रकार विभिन्न मात्रा में शक्तिपात का फल भी अलग-अलग है। तीन शक्तिपात के तीन भेद ये हैं— तीव्र-तीव्र, मध्य तीव्र, और मन्द तीव्र।

अतः प्रचलित शास्त्रीय परिभाषा के अनुसार कहा जा सकता है कि **तीव्र-तीव्र शक्तिपात से प्रारब्ध सहित सभी कर्मों का दाह होता है,** और **मध्य तीव्र शक्तिपात से प्रारब्ध के अलाया बाकी कर्म जल जाते हैं।** दूसरे शब्दों में यह कि तीव्र-तीव्र शक्तिपात वशतः अज्ञान का आवरण अंश दोनों एक साथ(जैसा तीव्र- तीव्र मात्रा में होता है) अथवा क्रमशः(जैसा तीव्र—तीव्र के मध्य और मन्द मात्रा में होता है) और **मन्द तीव्र शक्तिपात के प्रभाव से अज्ञान का केवल आवरण-अंश नष्ट हो जाता है विक्षेप-अंश शेष रहता है।**

श्रीमद्‌भगवद्‌ गीता में लिखा है—

यथैधांसि समिद्धोग्निर्भस्मात्‌ कुरुतेऽर्ज्जुन।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्‌ कुरुते तथा।।

यहां समिद्ध अर्थात्‌ वर्द्धित ज्ञानाग्नि समस्त कर्म का नाश करती है, ऐसा कहा गया है। यहां "सर्व कर्म" से तात्पर्य है कि प्रारब्ध इसके अन्तर्गत है। कारण समिद्ध शब्द(पद) से सूचित होता है कि यह ज्ञानाग्नि तीव्र-तीव्र अवस्था है। शास्त्रों में गुरु को उपाय और शास्त्र को उपेय कहा गया है। गुरु साक्षात्‌ परमेश्वर रूप होने पर भी इस स्थिति में उपाय भूत शास्त्र आदि का श्रवण, अध्ययन आदि का आदर किया जाता है। प्रत्येक संस्कार के अनुसार उपकरण भी नाना प्रकार के होते हैं। रोग भिन्न हो तो दवा भी भिन्न होती है। इसी तरह चित्त भिन्न होने से शास्त्र भी भिन्न होता है। तात्पर्य यह है कि **सद्‌गुरु शिष्य की योग्यता देखकर उसके अधिकार के अनुसार उस पर अनुग्रह करते हैं।**

जब सद्‌गुरु साधक के मायापाश को दीक्षा रूपी अस्त्र से काटते हैं, जिस समय साधक आगम के द्वारा सत्यासत्य भावना से भावित होते हैं, वास्तव में उसी समय शिष्य का प्रातिभ तत्व खुल जाता है।

शास्त्रों के अनुसार —

तदागम वशात्‌ साध्यं गुरुवक्त्रान्‌ महाधिया।
शिवशक्ति करा-वेशात्‌ गुरोः शिष्यप्रबोधकः।।

अर्थात्‌ यह ज्ञान आगम और गुरु मुख से पाया जा सकता है। गुरु के चैतन्य शक्तिमय कर स्पर्श से अर्थात्‌ गुरु रूपी शिव की शक्ति रूपी किरण के द्वारा शिष्य प्रबुद्ध होता है।

राख से ढकी आग जैसे मुंह की फूंक से जल उठती है, जैसे ठीक समय बोने-सींचने से बीज में अंकुर, पल्लव आदि निकल आते हैं, उसी प्रकार गुरु उपदिष्ट क्रिया से प्रातिभ ज्ञान अभिव्यक्त होता है।

शक्तिपात के फलस्वरूप संकोच दूर हो जाने से जीव का नित्य सिद्ध स्वभाव जाग उठता है।

मध्यतीव्र शक्तिपात के निम्नलिखित लक्षण शास्त्र में हैं –

१. भगवान(सद्‌गुरु) में निश्चल भक्ति।
२. मंत्रसिद्धि, जिसके प्रभाव से श्रद्धा और विश्वास उत्पन्न होता है।
३. सभी तत्वों को आयत्त करने का सामर्थ्य।
४. आकस्मिक रूप से सभी शास्त्रों का अर्थ ज्ञान, आदि-आदि।

ये सब लक्षण धीरे-धीरे उभरते हैं। शक्तिपात के तारतम्य के अनुसार किसी साधक में सबका ही प्रकाश होता है, तो किसी साधक में मात्र किसी एक का ही प्रकाश होता है।

महोपनिषद अध्याय २ में लिखा है कि शुकदेव ने जन्मकाल में ही विवेक ज्ञान को प्राप्त किया था। पातञ्जल दर्शन में विवेक ज्ञान के स्वरूप- वर्णन प्रसंग में कहा गया है कि यह सर्व विषयक, सर्वथा विषयक और क्रमहीन अनौपदेशिक ताकर ज्ञान है। यह ज्ञान शुकदेव जी के विवेक से स्वतः स्फुरित हुआ था।

जातमात्रेण मुनिराट्‌ यत्‌ सत्यं नदवाप्तवान्‌।
तेनासौ स्वविवेकेन स्वयमेव महामनाः ।।
प्रविचार्य चिरं साधु स्वात्मनिश्चयमाप्त वान्‌।।

इस ज्ञान के प्रभाव से उन्होंने गुरु के उपदेश के बिना ही परमार्थ तत्व का अनुभव किया था और उनकी भोग-वासना निवृत्त हो गई थी। परन्तु उस ज्ञान के दृढ़ नहीं होने से उनके मन में शान्ति नहीं थी। अपने ज्ञान पर उन्हें विश्वास नहीं था। इसीलिए अपने पिता व्यास देव के आदेश से वह विदेह राजा जनक के पास जाने को विवश हुए थे। अतः सिद्ध होता है कि सद्‌गुरु की प्राप्ति आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है।

मन्दतीव्र शक्तिपात के प्रभाव से सद्गुरु-लाभ की इच्छा उत्पन्न होती है। उस समय असद्गुरु के निकट जाने की इच्छा नहीं रह जाती। शक्तिपात होने के बाद जब किसी में मंद प्रातिभ ज्ञान उत्पन्न होता है उस समय यह जानने की इच्छा होती है कि तत्व क्या है, और उसका अपरोक्ष ज्ञान किसे कहते हैं? इसके बाद सद्गुरु को पाने की इच्छा होती है और यथा समय उसकी प्राप्ति होती है। पर किसी-किसी को ऐसा भी हो जाता है कि शक्तिपात के बाद जागतिक उपदेष्टा या व्यवहारिक गुरु से परिचय हो जाता है और उसके बाद कुछ दिनों तक आदि के कारण सद्गुरु को पाने की इच्छा होती है।

सद्गुरु से दीक्षा प्राप्त करके जीव शिवत्व पाता है और सभी विषयों के तत्वज्ञान से सम्पन्न हो जीवन मुक्त होता है।

तीव्रमध्य शक्तिपात के बाद जो दीक्षा होती है उसे अपने शिवत्व की सुदृढ़ उपलब्धि नहीं होती। दीक्षा के साथ-साथ शिव भाव होता जरूर है पर उसका स्पष्ट अनुभव नहीं होता। किन्तु देहान्त में उसका शिव सायुज्य निश्चित है। इस दीक्षा का शास्त्रीय नाम **''पुत्रक-दीक्षा''** है।

मध्य-मध्य और मन्द-मध्य शक्तिपात से इष्ट प्राप्ति की उत्सुकता होते हुए भी भोग की आकांक्षा की निवृत्ति नहीं होने के कारण दीक्षा से उस प्रकार के ज्ञान की प्राप्ति होती है। इस दीक्षा को बहुत स्थानों में **''शिवधर्मी साधक दीक्षा''** कहा गया है। इसके प्रभाव से इष्ट तत्व आदि में योजना स्थापित होती है और योगाभ्यास आदि के कारण उस तत्व-सम्बन्धी सभी भोग्य को भोग करने का अधिकार पैदा होता है।

मध्य-मध्य शक्तिपात में भोग वर्तमान देह में रहते हुए ही होता है और भोग की समाप्ति के बाद देहान्त में शिवत्व प्राप्त होता है। परन्तु मन्द-मध्य शक्तिपात में वह भोग वर्तमान देह में न होकर देहान्तर में होता है। उसके बाद शिवत्व मिलता है।

तीव्र-मध्य, मध्य-मन्द और मन्द- मन्द ये तीन प्रकार के शक्तिपात, भोग की आकांक्षा जब प्रधान होती है, तब होते हैं। इस प्रकार शक्तिपात के इन मन्द अधिकारियों के चित्त में शिवत्व लाभ की उत्सुकता अधिक नहीं रहती। इनमें एक के बाद दूसरे भोग की लालसा अधिक होती है। ऐसे में ''लोक धर्मी'' दीक्षा आवश्यक होती है। तीव्र-मन्द शक्तिपात होने से साधक अभीष्ट भुवन में अणिमादि ऐश्वर्य का भोग करते-करते ऊर्ध्व गति लाभ करता है।

परन्तु शक्तिपात और भी कम होने से अर्थात् मन्द-मन्द मात्रा में होने से किसी भुवन में कुछ समय तक भोग्य पदार्थ का उपयोग करके उस भुवन में अधिष्ठाता से दीक्षा ग्रहण करके शिवत्व को पाता है।

किन्तु मन्द-मन्द शक्तिपात में उस भुवन में सालोक्य, सामीप्य, और सायुज्य प्राप्त करके दीर्घकाल तक भोग का आस्वादन करते-करते उस भुवन के नायक भुवनेश्वर से दीक्षा ग्रहण करके अन्त में शिवत्व पाता है।

उपरोक्त कथन से यह समझ में आता है कि **शक्तिपात या सद्गुरु की कृपा के बिना कोई जीव पूर्णत्व नहीं प्राप्त कर सकता। इतना ही नहीं, वह पूर्णत्व के पथ पर प्रवेश भी नहीं कर सकता।**

शक्तिपात के समय योग्यता का विचार नहीं होता। परन्तु स्वभावतः योग्यता की मात्रा के अनुसार ही शक्तिपात की मात्रा निश्चित होती है। पर मात्रा चाहे जो भी हो, सद्गुरु-शक्ति की ऐसी महिमा है कि एक बार वह तो जीव को सद्गुरु धाम में पहुंचाये बिना शान्त नहीं होती, इसमें कोई सन्देह नहीं कि सद्गुरु के रूप में ईश्वर की कृपा प्राप्त होती है। विवेक और ज्ञान का विकास होता है। प्रत्येक जीव को पूर्णत्व प्राप्त करने का अधिकार है, पर सभी को यह प्राप्त नहीं होता, परन्तु मार्ग का परिचय सभी को जानना चाहिए।

शिव होने पर भी तब तक पूर्णत्व नहीं आता जब तक शिव होने का बोध नहीं होता। आद्यशंकराचार्य को भी इस प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने हेतु ओंकारेश्वर में अपने सद्गुरु के पास आना पड़ा। निष्काम कर्म से जब चित्त निर्मल हो जाए तब सद्गुरु की परमेश्वरी शक्ति के सहारे आगे बढ़ना चाहिए। इसी को कृपा कहते हैं। सद्गुरु देव की महाकृपा की यही विशिष्टता है। जैसे बच्चे के रोने पर मां को आना पड़ता है।

सद्गुरु द्वारा शक्तिपात प्राप्त करने हेतु निम्न लिखित सामग्रियों की आवश्यकता होती है। सद्गुरु प्रदत्त **''श्री पूर्ण गुरु रहस्य सिद्धि रुद्राक्ष माला''**, जो कि दीक्षा या शक्तिपात के समय गले में धारण करने हेतु आवश्यक है, साथ ही **''निखिलेश्वरानन्द सिद्ध सिद्धाश्रम गुटिका''**। गुरु यंत्र चित्र में माताजी एवं गुरुदेव का संक्षेप में पूजन कर के स्फटिक माला से, यदि दीक्षित हो तो निम्न मंत्र का जप करें—

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ।।

यदि अपेक्षित है, तो निम्न मंत्र का जप करे-

ॐ नमो नारायणाय

अथवा

ॐ नमः शिवाय

मंत्र का १६ माला जप करें।

यह नित्य प्रति बिना नागा किये करें तो इस प्रकार की साधना सम्पन्न करके आप प्रत्येक दीक्षा और साधना का लाभ प्राप्त कर सकते हैं। साधक को चाहिए कि चतुर्मास में इस प्रकार साधना करके लाभ प्राप्त करें। ❑

महामृत्युञ्जय साधना शिविर

उज्जैन मध्य-प्रदेश की आध्यात्मिक नगरी है, पिछले वर्ष १९९३ फरवरी को **''महाशिवरात्रि''** के पर्व पर मनाया गया उत्सव, जो पूज्य गुरुदेव की उपस्थिति में मनाया गया था, बहुत ही भव्य और अद्वितीय था, जिसने वहां के विद्वान पंडितों और बहुत बड़े-बड़े, विद्वान-व्यक्तियों को आश्चर्यचकित कर दिया था, क्योंकि वे इतने वर्ष वहां रहने के बाद भी क्षिप्रा नदी के किनारे **''महाकालेश्वर मंदिर''** में स्थित उस **अद्वितीय ज्येतिर्लिंग** के बारे नहीं जान पाये थे, जिन गूढ़ रहस्यों को पूज्य गुरुदेव ने वहां सबके सामने स्पष्ट किया था, और उस शिवलिंग की महत्ता को स्पष्ट शब्दों में बड़े विस्तार पूर्वक अपने प्रवचनों द्वारा वताया था।

— **उज्जैन में स्थित शिवलिंग १२ ज्योतिर्लिंगों में से एक है,** जिसके दर्शन करना ही अपने-आप में परम सौभाग्य की बात है, और अगर महाशिवरात्रि जैसे विशेष क्षणों में इस शिवलिंग का पूजन, आराधना की जाए तो व्यक्ति के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, क्योंकि शिव ही एकमात्र ऐसे देव हैं, जो काल को भी पीछे धकेल सकते हैं, जिन्होंने यम का पाश काट नचिकेता को अपनी बांहों में ले लिया था, ऐसे ही शिव की नगरी **उज्जैन,** जिसका कण-कण आपूरित है **महामृत्युञ्जय** के तेज से। एक बार पुनः महाकालेश्वर की नगरी में गुञ्जायमान होगा वह दिव्य नाद, जो पूज्यपाद गुरुदेव के श्री मुख से मुखरित हो उन समस्त साधकों व शिष्यों के हृदय को झंकृत करता हुआ, उन्हें आपूरित कर देगा दिव्यता व चैतन्यता से।

उज्जैन की उसी पुण्य सलिला, पवित्र भूमि पर, पुनः महाशिवरात्रि की पावन बेला पर दिव्य शिविर का आयोजन होने जा रहा है, जो २४, २५, २६ और २७ फरवरी ९५ को चार दिवसीय शिविर है।

जिनके जीवन के पुण्य उदय होते हैं या जो व्यक्ति सौभाग्यशाली होता है वही **ज्योतिर्लिंग** के दर्शन कर पाता है, ऐसा ही दिव्य अवसर हमें प्राप्त होने जा रहा है, और वह भी पूज्य गुरुदेव के साहचर्य में, इससे बड़ा सौभाग्य और हो भी क्या सकता है!

इससे बड़ा जीवन का पुण्य और क्या हो सकता है, जब पूज्य गुरुदेव साथ हों और वह भी उस दिव्य स्थल पर, **जहां कृष्ण ने भी सांदीपन आश्रम में रह शिव साधना की थी,** उस पुण्यस्थली पर गुरुदेव द्वारा दी गई चैतन्यता, ऊर्जा-शक्ति और आशीर्वाद
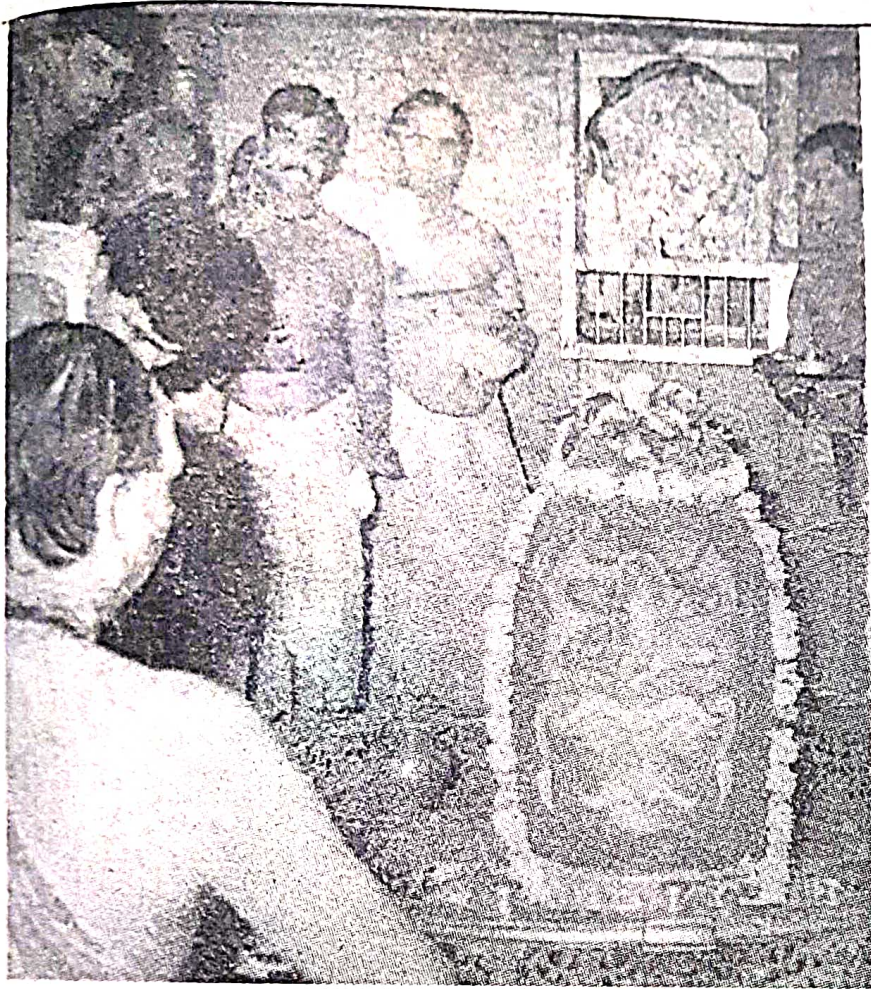
से ही उस शिवलिंग का पूजन सम्पन्न हो रहा हो, तो यह अपने-आप में सौभाग्य की बात है।

इस बार इस **उज्जयिनी नगरी** में पूज्य गुरुदेव के शक्तिपात द्वारा विशिष्ट दीक्षाएं साधकों को दी जायेंगी, उनके द्वारा **रुद्राभिषेक** कराया जायेगा, **पारदेश्वर पूजन** सम्पन्न कराया जायेगा, और तीव्र विशिष्ट साधनाएं सम्पन्न करायी जायेंगी, पहली **''महामृत्युञ्जय साधना''** जिससे काल पर भी विजय प्राप्त की जा सकती है, दूसरी **''महालक्ष्मी साधना''** और तीसरी **''कात्यायनी काम्यसिद्धि साधना''**।

इन साधनाओं को सम्पन्न कराने के पीछे अर्थ यह है, कि उस पावन-स्थल पर इन साधनाओं को शीघ्रता से सम्पन्न किया जा सकता है, और यदि गुरुदेव का आशीर्वाद भी साथ हो तो शीघ्र ही उनमें सिद्धि भी प्राप्त हो जाती है, इसके साथ ही साथ सम्पूर्ण रात्रि, जो **''महाशिवरात्रि पर्व''** है, **उस दिन भगवान शिव का चारों वेदों से पूज्य गुरुदेव और उज्जैन के विशिष्ट एवम् श्रेष्ठ पंडितों द्वारा विशेष पूजन सम्पन्न कराया जायेगा,** जो कि जीवन का एक बहुत बड़ा सौभाग्य कहा जा सकता है।

रुद्राभिषेक और वेदमंत्रों का घोष, प्रातःकालीन आरती, एवं सायंकालीन आरती, भस्म आरती आदि ऐसा वातावरण उपस्थित करेंगे जो अपने-आप में अद्भुत होगा, एक तरफ पूज्य गुरुदेव के प्रवचन होंगे तो दूसरी ओर गायन, नृत्य आदि का वातावरण सभी के मन में उमंग, उल्लास और आनन्द भर देगा, वहां का प्रत्येक क्षण अपने-आप में जीवन्त एवं चैतन्य होगा।

उस तीर्थ-स्थली पर पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में इस शिविर का आयोजन एक महत्वपूर्ण बात है, जिसका ज्ञान हर किसी को नहीं है। और कोई अभागा ही होगा, जो इन आनन्ददायक क्षणों को गंवा कर अपने घर में बैठा रह जायेगा, हतभागी ही ऐसे दिव्य अवसर को चूक सकता है।

आपको चाहिए कि आप पूरे जोर-शोर के साथ इस **''महाशिवरात्रि पर्व''** पर **उज्जैन नगरी** में आकर इस आयोजन को सफल बनायें, और पूरे उल्लास, उमंग और तेजस्विता के साथ।

सौभाग्य होगा उनका जो इस आयोजन में भाग लेने के लिए उज्जैन में उपस्थित होगें, और दुर्भाग्य होगा उनका जो वहां अनुपस्थित होंगे, क्योंकि इस बार कुछ ऐसा ही घटित होने जा रहा है, और पूज्य गुरुदेव की इच्छा भी है कि— "थोड़े समय में ही मैं अपना सम्पूर्ण ज्ञान, चिन्तन इन शिष्यों में उड़ेल दूं, मेरे पास जो कुछ है वह सब लुटा दूं"... और इसी प्रयास में वे हर क्षण कार्यरत हैं, और उन विशेष क्षणों की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जब वे इस प्रकार के कार्यों को पूर्णता दे सकें।

इसीलिए आपको भी चाहिए कि उन अमूल्य क्षणों को पहिचानें, और आप दौड़कर उनके सामने उपस्थित हो जाएं, क्योंकि ये क्षण हैं चैतन्यता के, ये क्षण हैं दिव्यता के, ये क्षण हैं पूर्णता के।

इस शिविर के आयोजन के लिए श्री सुब्बाराव, श्री के. पी. शर्मा, श्री के. के. चौबे और श्रीवास्तव जी अपनी मेहनत और लगन से उसे सफल बनाने का अथक प्रयास कर रहे हैं।

उज्जैन में सभी साधकों एवं शिष्यों के रहने की उनके खाने-पीने की उचित व्यवस्था होगी, जिससे कि किसी भी व्यक्ति को कोई असुविधा न हो, और वह इन चार दिनों तक सुविधापूर्वक एवं सुखमय जीवन व्यतीत कर सके।

अब यह तो आप पर निर्भर करता है कि आप इन मूल्यवान क्षणों का लाभ उठा पाते हैं या नहीं। ❑
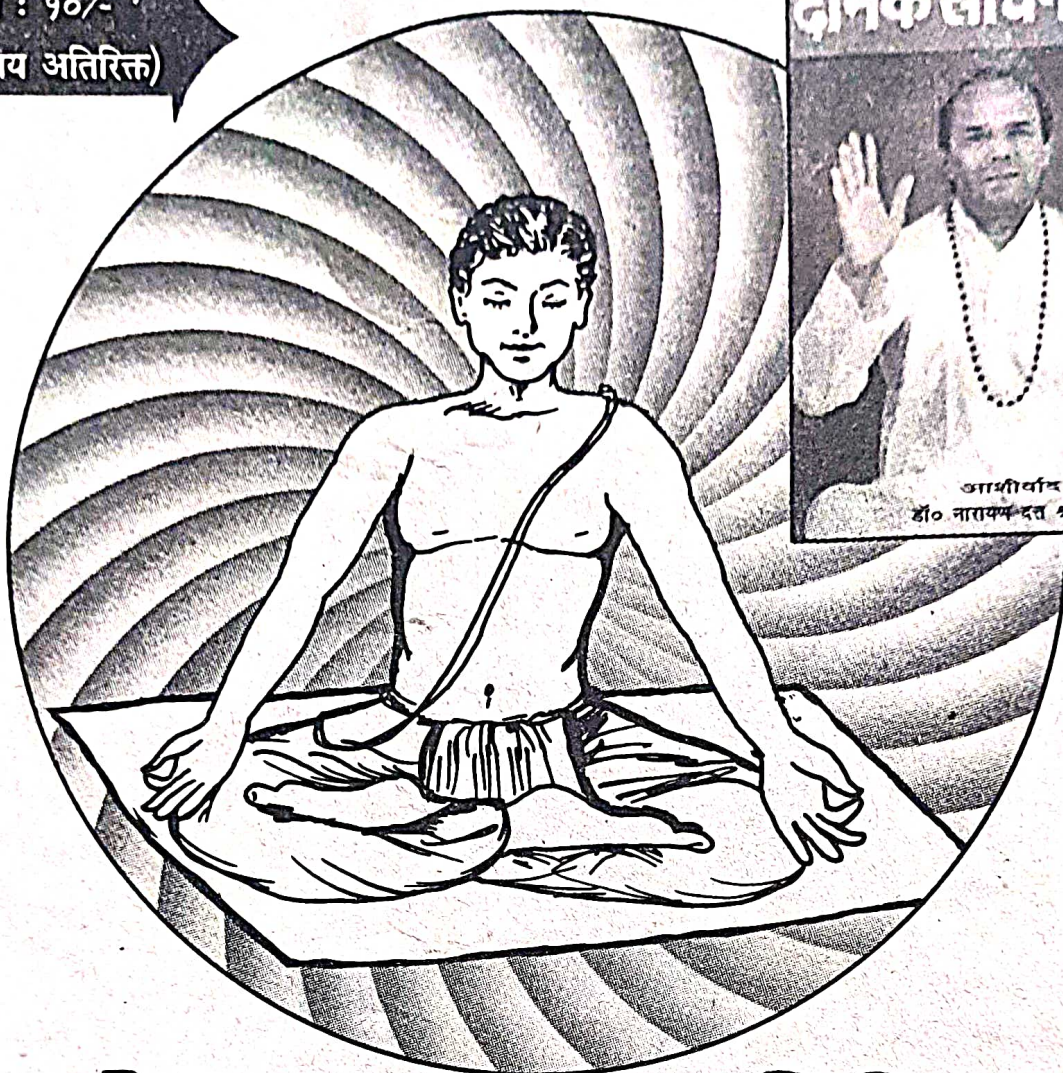
दैनिक साधना विधि

आशीर्वाद : डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

परम पूज्य गुरुदेव **''डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी''** के आशीर्वाद से युक्त

जीवन में पूर्णता प्राप्त करने का मार्ग साधना से प्रारम्भ होकर कुण्डलिनी जागरण की पूर्ण स्थिति में पहुंचना है। साधना के माध्यम से जीवन के कष्ट कटते हैं, और उदय होता है— नये श्रेष्ठ, अहोभाव, परिपूर्ण आनन्ददायक जीवन का।

क्या आप नित्य प्रति साधना करते हैं?

— विशिष्ट साधनाओं के प्रारम्भ में क्या प्रक्रिया होनी चाहिए, क्या आपको इसका ज्ञान है?
— स्पष्ट है, कि आप को चाहिए शुद्ध साधनात्मक ज्ञान, दैनिक साधना विधान।
— जिसे सम्पन्न कर आप कोई भी विशेष साधना प्रारम्भ कर सकते हैं।
— हजारों, लाखों शिष्यों, पाठकों, साधकों की मांग को ध्यान में रखते हुए सरल भाषा में **दैनिक साधना का विधान।**

: प्राप्ति स्थान :

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोनः०२९१-३२२०६
सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४, फोनः०११-७१८२२४८, फेक्सः०११-७१८६७००
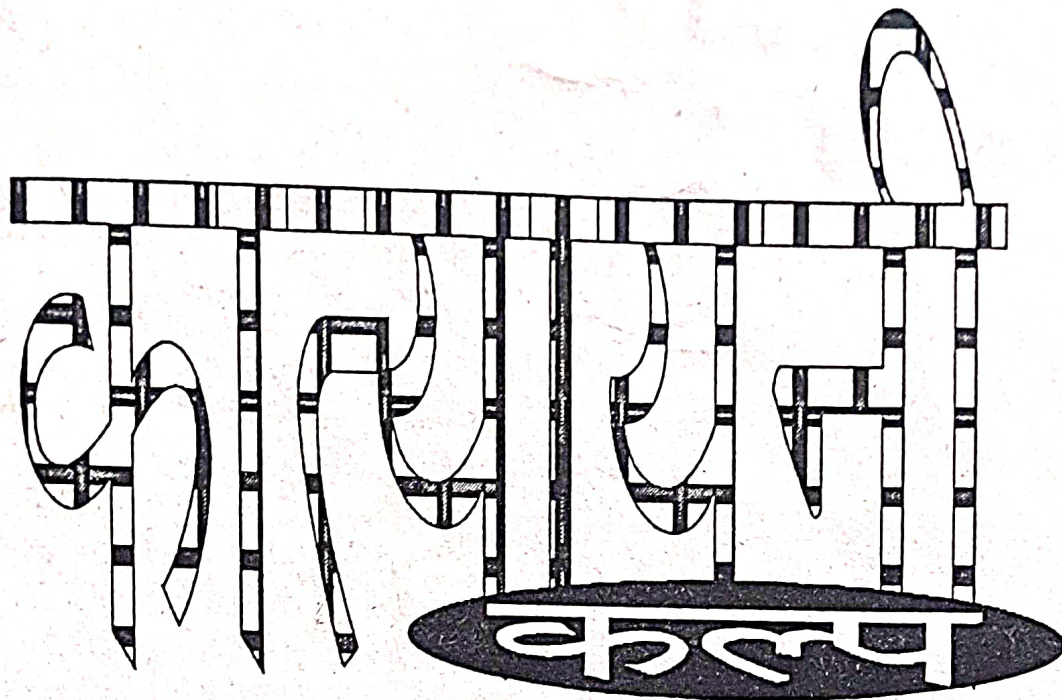
जिस प्रकार राजाओं में रामचन्द्र, सर्पों के बीच गरुड़, क्रूर कर्मों में शनि, पक्षियों के बीच श्येन श्रेष्ठ होता है, उसी प्रकार **''भगवती कात्यायनी''** का ध्यान करने वाला व्यक्ति मनुष्यों के बीच प्रधान और बलवान होता है।

कात्यायनी 'दुर्गा' का ही एक स्वरूप है, यह देवी साधक पर प्रसन्न होकर उसे अतुल ऐश्वर्य व धन प्रदान करती है, और साथ ही इस साधना द्वारा खोये हुए व्यक्ति की प्राप्ति भी सम्भव है। यह अपने-आप में एक श्रेष्ठ एवं अद्वितीय साधना है, जिसका ज्ञान आज बहुत से साधकों को है, और उन्होंने इसे सम्पन्न कर इससे विशिष्ट लाभ भी प्राप्त किये हैं।

समय के परिवर्तन और चारों तरफ के वातावरण से बालकों में कुसंस्कार और कुबुद्धि व्याप्त हो जाती है, जिस कारण वे विचार उसे घर से भाग जाने के लिए प्रेरित कर देते हैं, किन्तु "कात्यायनी साधना" द्वारा उस खोये हुए बालक को पुनः वापिस बुलाया जा सकता है।

यदि किसी कारणवश पूर्वजों द्वारा रखे गए धन का पता

"कई बार व्यक्ति के जीवन में ऐसे कार्य भी आ जाते हैं जिनका पूर्ण होना अत्यधिक आवश्यक हो जाता है, और यदि वह कार्य समय पर पूर्ण न हो सके तो बहुत सी परेशानियां सामने आ जाती हैं तथा हानि भी हो सकती है, किन्तु इन संकट भरी घड़ियों से निकलने के लिए जब कोई मार्ग नहीं सूझ रहा हो तो . . . ."

नहीं चल पा रहा हो या फिर किसी कारणवश वे समय के अभाव के कारण यह न बता पाए हों कि उन्होंने धन कहां रखा है, तो इस साधना द्वारा साधक उस स्थान का पता लगा सकता है, और उस स्थान पर पहुंच कर, उस गड़े हुए धन को आसानी से प्राप्त कर सकता है।

इस साधना को सम्पन्न कर साधक पूर्ण ऐश्वर्य युक्त तो बनता ही है, साथ ही उसे श्री, वैभव, सुख-समृद्धि सभी कुछ प्राप्त हो जाता है। फिर उसे जीवन में धन के लिए कभी किसी के आगे हाथ नहीं फैलाना पड़ता, फिर किसी भी प्रकार का आर्थिक अभाव उसके जीवन में नहीं रह जाता, अतः आर्थिक दृष्टि से पूर्णता प्राप्त करने की यह श्रेष्ठ साधना है, जिसे सम्पन्न कर साधक को लाभ प्राप्त होता ही है। **क्योंकि कात्यायनी कल्प एक तांत्रोक्त साधना है, और तंत्र का अर्थ है शीघ्र फल प्रभाव अर्थात् शीघ्र फल प्राप्ति।** और इस प्रकार इस तांत्रोक्त साधना को श्रद्धापूर्वक सम्पन्न करने पर साधक को शीघ्र फल प्राप्त होता ही है।

इस साधना के माध्यम से ऐसे वातावरण की सृष्टि की जा सकती है, जिससे कि खोया हुआ बालक या बालिका असामाजिक तत्वों के जाल से सकुशल बाहर निकल सकता है, और इसके द्वारा ऐसे वातावरण को भी बनाया जा सकता है, जिससे कि वह घर आने पर भी सकुशल रहे, साथ ही वह बालक या बालिका शुद्ध चित्त से माता-पिता की आज्ञा का पालन कर सके, तथा उसका जीवन सुखकर हो सके।

साधक को सर्वप्रथम कात्यायनी के विशेष स्वरूप का ध्यान करके ही साधनात्मक मंत्र-जप प्रारम्भ करना चाहिए, ऐसा करने से उसे उस साधना में शीघ्र सफलता प्राप्त होती ही है, और वह **''कुवेर''** के समान धनवान हो जाता है, उसके शत्रुओं का दमन होता है और उसे विजय खड्ग की प्राप्ति होती है।

ध्यान –

सत्य-पाद-सरोजेनालंकृतोरु-मृगाधिपाम्।
वाम-पादाग्र-दलित-महिषासुर-निर्भराम्।।
सु-प्रसन्नां-सु-वदनां,चारु-नेत्र-त्रयान्विताम्।
हार-नूपुर-केयूर-जटा-मुकुट-मण्डिताम्।।
विचित्र-पट्ट-वसनामर्द्ध-चन्द्र-विभूषिताम्।
खड्ग-खेटक-वज्राणि,त्रिशूलं विशिखं तथा।।
धारयन्तीं धनुः पाशं, शंखं घण्टां सरोरूहम्।
बाहुभिर्ललितै देवीं, कोटि-चन्द्र-सम-प्रभाम्।।
समावृतै र्दिविषदैं वैराकाश संस्थितैः।
स्तूयमानां मोदमानैर्लोक-पालादिभिः सदाः।।

अर्थात् देवी अपने दाएं चरण-कमल से मृगराज को अलंकृत कर बाएं पैर से महिषासुर को विदलित कर रही हैं। वे प्रसन्न-मुखी और सुन्दर तीन नेत्रों से विभूषिता हैं। हार, नूपुर, केयूर, जटा, मुकुट आदि अलंकारों से अलंकृता हैं। आकर्षक वस्त्र धारण किए हैं और मस्तक पर अर्ध-चन्द्र है। खड्ग, वज्र, त्रिशूल, बाण, धनुष, पाश, शंख, घण्टा और पद्म अपनी सुन्दर भुजाओं में लिए हुए हैं, कोटि चन्द्र के समान प्रभाव वाली हैं। आकाश में स्थित इन्द्रादि देवगण सदा उन्हें घेरे रहते हैं, और लोकपाल गण प्रसन्न-मन से सदैव उनकी वन्दना करते हैं, और मैं ऐसी देवी को हृदय से प्रणाम करता हुआ इस साधना को प्रारम्भ कर रहा हूं, ऐसा कह कर पूजन प्रारम्भ करें।

साधना विधि

किसी भी **नवमी** के दिन साधक इस साधना को सम्पन्न कर सकता है। प्रातःकाल या रात्रि किसी भी समय साधक अपनी इच्छानुसार इस साधना को सम्पन्न कर सकता है। इसके लिए विशेष सामग्री की आवश्यकता पड़ती है, जो इस प्रकार है– **''कात्यायनी यंत्र'', ''कात्यायनी माला'', ''भैरव गुटिका''**। इस सामग्री को पहले से ही मंगवा कर रख लेना चाहिए।

सर्वप्रथम साधक स्नान कर, उत्तराभिमुख हो, पीले वस्त्र धारण कर आसन पर शांत चित्त बैठ जाए, और उपरोक्त कात्यायनी देवी के स्वरूप का श्रद्धापूर्वक ध्यान कर पूजन प्रारम्भ करे।

सबसे पहले लाल वस्त्र पर बाजोट के ऊपर **''कात्यायनी यंत्र''** और **''भैरव गुटिका''** को स्थापित कर दें तथा **कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य** से उनका पूजन सम्पन्न करें, इसके पश्चात् मौन हो ब्रह्मचारी के समान संयत मन से अपने इष्ट या गुरु का ५ मिनट तक ध्यान करे और फिर तीन बार **''ॐ''** की ध्वनि का उच्चारण करें।

इसके पश्चात् साधक को चाहिए, कि यदि वह खोये हुए बालक की प्राप्ति के लिए उस साधना को सम्पन्न कर रहा है, तो उसका नाम लेते हुए जल हाथ में लेकर संकल्प ले, कि मैं अमुक बालक की प्राप्ति के लिए इस मंत्र-जप को सम्पन्न कर रहा हूं, और ऐसा कह कर उस जल को जमीन पर छोड़ दे।

फिर कात्यायनी माला से ५ माला निम्न मंत्र का जप प्रारम्भ कर दे–

मंत्र -

।। क्रीं कात्यायन्यै क्रीं।।

मंत्र-जप सम्पन्न करने के पश्चात् उस माला को गले में धारण कर पूज्य गुरुदेव के चित्र के आगे या टेलीफोन द्वारा उनसे आशीर्वाद प्राप्त कर, उस माला, यंत्र और गुटिका को पास के किसी कुंए, नदी या तालाब में विसर्जित कर दे।

ध्यान रहे कि माला, गुटिका और यंत्र ये तीनों ही सामग्री चैतन्य एवं मंत्र-सिद्ध होनी चाहिए। ❑

मंगल एवं चन्द्र रेखा

हथेली में कई रेखाएं ऐसी होती हैं, जिन्हें हम मुख्य रेखाएं तो नहीं कहते, परन्तु उनका महत्त्व किसी भी प्रकार से कम नहीं कहा जा सकता। इन रेखाओं का अध्ययन भी अपने-आप में अत्यन्त जरूरी है। ये रेखाएं स्वतंत्र रूप से या किसी रेखा की सहायक बनकर अपना निश्चित प्रभाव मानव जीवन पर डालती हैं–
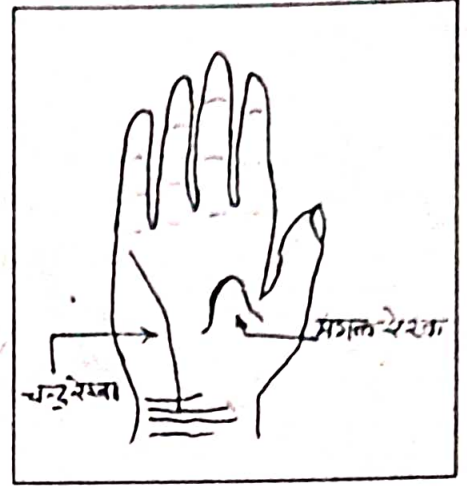
१. मंगल रेखा

यह रेखा हथेली से, निम्न मंगल क्षेत्र से या जीवन रेखा के प्रारम्भिक भाग से निकलती है और शुक्र पर्वत की ओर बढ़ती है। ऐसी रेखाएं एक या एक से अधिक हो सकती हैं। ये सभी रेखाएं पतली, मोटी, गहरी या कमजोर हो सकती हैं। परन्तु यह स्पष्ट है कि इन का उद्‌गम मंगल पर्वत ही होता है। इसीलिए इन्हें मंगल रेखाएं कहा जाता है।

इनमें दो भेद हैं। एक तो ऐसी रेखाएं जीवन रेखा के साथ-साथ आगे बढ़ती हैं, अतः उन्हें जीवन रेखा की सहायक रेखा भी कह सकते हैं। कई बार ऐसी रेखाएं जीवन रेखा की समाप्ति तक उनके साथ-साथ चलती हैं।

जिनके हाथ में ऐसी रेखाएं होती हैं, वे व्यक्ति अत्यन्त प्रतिभाशाली एवं तीव्र बुद्धि के होते हैं। सोचने और समझने की शक्ति इनमें विशेष रूप से होती है। जीवन में ये जो निर्णय एक बार कर लेते हैं, उसे अन्त तक निभाने की सामर्थ्य रखते हैं। ऐसे व्यक्ति पूर्णतः विश्वासपात्र कहे जाते हैं।

इस प्रकार के व्यक्ति जीवन में कोई एक उद्देश्य लेकर आगे बढ़ते हैं और जब तक उस उद्देश्य या लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो जाती, तब तक ये विश्राम नहीं लेते। शारीरिक दृष्टि से ये हृष्ट-पुष्ट होते हैं तथा इनका व्यक्तित्व अपने-आप में अत्यन्त प्रभावशाली होता है। क्रोध इनके जीनव में बहुत कम रहता है।

दूसरे प्रकार की मंगल रेखाएं वे होती हैं, जो जीवन रेखा का साथ छोड़कर सीधे ही शुक्र पर्वत पर पहुंच जाती हैं। ऐसे व्यक्ति जीवन में लापरवाह होते हैं। उनका स्वभाव चिड़चिड़ा होता है। आवेश में ये व्यक्ति सब कुछ करने के लिए तैयार होते हैं। इनका साथ अत्यन्त निम्न स्तर के व्यक्तियों से होता है।

यदि मंगल रेखा से कुछ रेखाएं निकल ऊपर की ओर बढ़ रही हों, तो उनके जीवन में बहुत अधिक इच्छाएं होती हैं और इन इच्छाओं को पूरा करने का ये भगीरथ प्रयत्न करते हैं। यदि ऐसी रेखाएं भाग्य रेखा से मिल जाती हैं, तो व्यक्ति का शीघ्र ही भाग्योदय होता है। हृदय रेखा से मिलने पर व्यक्ति जरूरत से ज्यादा भावुक तथा सहृदय बन जाता है।

यदि इस प्रकार की मंगल रेखाएं आगे चलकर भाग्य रेखा अथवा सूर्य रेखा को काटती हैं, तो उसके जीवन में जरूरत से ज्यादा बाधाएं एवं परेशानियां रहती हैं। यदि इन रेखाओं का सम्पर्क भाग्य रेखा से हो जाता है, तो वह भाग्यहीन व्यक्ति कहलाता है। तथा यदि ये मंगल रेखाएं विवाह रेखा को छू लेती हैं, तो उसका गृहस्थ जीवन बर्बाद हो जाता है।

यदि मंगल रेखा प्रबल, पुष्ट, हथेली में धंसी हुई तथा दोहरी हो, तो ऐसा व्यक्ति निश्चय ही हत्यारा अथवा डाकू होता है। परन्तु यदि यह रेखा दोहरी नहीं होती तो ऐसा व्यक्ति मिलिट्री में ऊंचे पद पर पहुंचने में सक्षम होता है।

२. चन्द्र रेखा

व्यक्ति के हाथ में इस रेखा को सबसे अधिक महत्त्व दिया जाता है। इसे अन्तः प्रेरणा रेखा भी कहते हैं। यह रेखा मणिबन्ध या चन्द्र पर्वत से प्रारम्भ होकर धनुष का आकार धारण करती हुई बुध क्षेत्र तक पहुंचती है।

जिनके हाथों में यह रेखा होती है, वे व्यक्ति साधारण घराने में जन्म लेकर भी बहुत अधिक ऊंचे पद पर पहुंचते हैं। कई बार ऐसे व्यक्ति राष्ट्रपति या सेनाध्यक्ष बनते हैं। ऐसे व्यक्ति राष्ट्र से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण पद को सुशोभित करते हैं।

ऐसे व्यक्तियों के लिए जल-यात्रा घातक होती है। कई बार तैरते समय इनको मृत्यु सम कष्ट उठाना पड़ता है। इनका स्वभाव सरल, मधुर तथा गम्भीर होता है। इनका व्यक्तित्व अत्यन्त सम्मोहक होता है तथा शत्रुओं को भी अपने वश में करने की क्षमता इनमें होती है। ये व्यक्ति दूसरों की सहायता करने वाले होते हैं। और यदि जीवन में कोई इनके साथ भलाई का व्यवहार करता है, तो ये उसका उपकार जीवन-भर नहीं भूलते।

ऐसे व्यक्ति समय पड़ने पर समाज को तथा देश को सही निर्देश देने में समक्ष होते हैं। ❑

तंत्र विशेषांक : दीक्षा व सामग्री परिशिष्ट

पत्रिका-पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधना से सम्बन्धित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्री को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है तथा साधना से सम्बन्धित दीक्षा की विशेष व्यवस्था भी की जाती है।

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर	सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
उर्वशी यंत्र	१५	२४०/-	स्वनित	४५	३५/-
अप्सरा माला	१५	२४०/-	स्रक	४५	४५/-
हिडिम्बा यंत्र	१८	१५०/-	ब्रात्य	४६	५१/-
हिडिम्बा माला	१८	१५०/-	व्रीडा	४६	४०/-
गुरु यंत्र	१८	१५०/-	नीलमणि	४६	६०/-
त्रिलोचना आकर्षण यंत्र	२४	२१०/-	स्तबक	४६	५१/-
सम्मोहन गुटिका	२४	६०/-	आख्यातिका	४६	५०/-
त्रिलोचना माला	२४	१५०/-	किलोलिनी	४६	५५/-
अष्ट नागिनी मुद्रिका	२७	६०/-	सौशील्य	४६	४५/-
नागेश माला	२७	१५०/-	कर्ण पिशाचिनी यंत्र	५३	२४०/-
संकट निवारक यंत्र	३६	१५०/-	हकीक माला	५३	१५०/-
रक्त वर्णीय माला	३६	१५०/-	काली यंत्र	५८	२४०/-
खड़बिड़ा	४३	५०/-	काली हकीक माला	५८	१५०/-
अंकवारी	४४	६०/-	गुह्य काली गुटिका	५८	६०/-
अंकड़ी	४४	६०/-	श्री यंत्र	६०	२४०/-
खंगड़	४४	४५/-	१०८ कमल गट्टे के बीज	६०	१५०/-
अंखूर	४४	५०/-	ज्वाला यंत्र	६७	२४०/-
ईर्षा	४४	४५/-	ज्वाला माला	६७	१५०/-
दीप्तिका	४४	४०/-	निखिलेश्वरानंद		
उत्तमर्ण	४४	६०/-	सिद्ध सिद्धाश्रम गुटिका	७३	२४०/-
चण्डांशु	४५	६०/-	रुद्राक्ष माला	७३	३००/-
जपनी	४५	५१/-	स्फटिक माला	७३	३००/-
शतहनी	४५	४५/-	कात्यायनी यंत्र	७८	२४०/-
वेष्टण	४५	३५/-	कात्यायनी माला	७८	१५०/-
आनुपूर्वी	४५	६०/-	भैरव गुटिका	७८	५०/-

दीक्षा	न्यौछावर
पुत्रक दीक्षा	१५००/-
उर्वशी दीक्षा	२१००/-
ब्रह्माण्ड दीक्षा	६०००/-
हिडिम्बा दीक्षा	१५००/-
त्रिलोचना दीक्षा	१५००/-
कात्यायनी दीक्षा	६००/-
पुत्र प्राप्ति दीक्षा	३०००/-
बगलामुखी दीक्षा	२१००/-
हनुमत कल्प दीक्षा	१५००/-
ज्वालामालिनी दीक्षा	८००/-
कर्ण पिशाचिनी दीक्षा	२१००/-
अष्ट महालक्ष्मी दीक्षा	२१००/-
शिवधर्मी साधक दीक्षा	६००/-
वीर वेताल सिद्धि दीक्षा	५१००/-
होलिका यक्षिणी दीक्षा	२१००/-
भविष्य सिद्धि दीक्षा	३०००/-
कुबेर सिद्धि दीक्षा	१८००/-
पाशुपतास्त्रेय दीक्षा	३०००/-
क्रिया योग दीक्षा	६०००/-
ऋण मुक्ति दीक्षा	१५००/-
ललिताम्बा दीक्षा	२१००/-
रोग मुक्ति दीक्षा	२१००/-
धन्वन्तरी दीक्षा	२१००/-
महालक्ष्मी दीक्षा	२१००/-
सम्मोहन दीक्षा	३०००/-
राजयोग दीक्षा	३०००/-
यक्षिणी दीक्षा	२१००/-
भैरव दीक्षा	२४००/-

नोट : साधना सामग्री आप हमारे दिल्ली कार्यालय अथवा जोधपुर कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु डाक द्वारा मंगाने की स्थिति में केवल हमारे जोधपुर केन्द्र से ही सम्पर्क करें, ऐसी स्थिति में डाक खर्च भी देय होगा। सम्पूर्ण धन राशि पर मनीआर्डर कमीशन के रूप में यथोचित अतिरिक्त धन राशि पोस्ट ऑफिस द्वारा ली जाती है, जिसका संस्था से कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

चेक स्वीकार्य नहीं होंगे। ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो, वह **"मंत्र शक्ति केन्द्र"** के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनिऑर्डर या ड्राफ्ट भेजने का पता

मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,जोधपुर-342001 (राज.),टेलीफोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

दीक्षा के लिए पहले से ही समय एवं स्थान तय कर अनुमति लेकर ही आएं

306,कोहाट इन्क्लेव,नई दिल्ली, टेलीफोन : 011-7182248

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा नव शक्ति इन्डस्ट्रीज, C. 13 , न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़ दिल्ली से मुद्रित तथा सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली से प्रकाशित।

रजिस्ट्रेशन नं० ३५३०५/८१ A.H.W.

सम्पर्क :

३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली - ११००३४

फोन:०११-७१८२२४८, फेक्स:०११-७१८६७००

वर्ष-१५

पोस्टल-एल.आर.जे. ३६६७/८६-८७

ब्रह्मानन्दं समाधिर्वै

४ फरवरी से ८ फरवरी ९५

उर्वशी दीक्षा, कात्यायनी दीक्षा
पुत्र प्राप्ति दीक्षा, त्रिलोचना दीक्षा
ब्रह्माण्ड दीक्षा, ज्वालामालिनी दीक्षा
हनुमत कल्प दीक्षा, बगलामुखी दीक्षा
कर्ण पिशाचिनी दीक्षा, हिडिम्बा दीक्षा
वीर वेताल सिद्धि दीक्षा, अष्ट महालक्ष्मी दीक्षा
होलिका यक्षिणी दीक्षा, भविष्य सिद्धि दीक्षा
कुबेर सिद्धि दीक्षा, पाशुपतास्त्रेय दीक्षा
क्रिया योग दीक्षा, ऋण मुक्ति दीक्षा
ललिताम्बा दीक्षा, रोग मुक्ति दीक्षा
धन्वन्तरी दीक्षा, महालक्ष्मी दीक्षा
सम्मोहन दीक्षा, राजयोग दीक्षा
यक्षिणी दीक्षा, भैरव दीक्षा

– विशेष –

प्रत्येक विशेष दीक्षा लेने वाले साधक को उसी स्थान पर लगभग आधे घंटे की साधना सम्पन्न करा कर, फिर शक्तिपात से युक्त विशेष मनोवांछित दीक्षा देने का प्रावधान. . . और साथ में साधना सिद्धि से सम्बन्धित गोपनीय तथ्यों का रहस्योद्घाटन गुरुदेव के द्वारा. . .

नोट : ये दीक्षाएं पूज्यपाद गुरुदेव केवल ''गुरुधाम'' दिल्ली में ही उपरोक्त दिवसों में प्रदान करेंगे।

अंक-१